

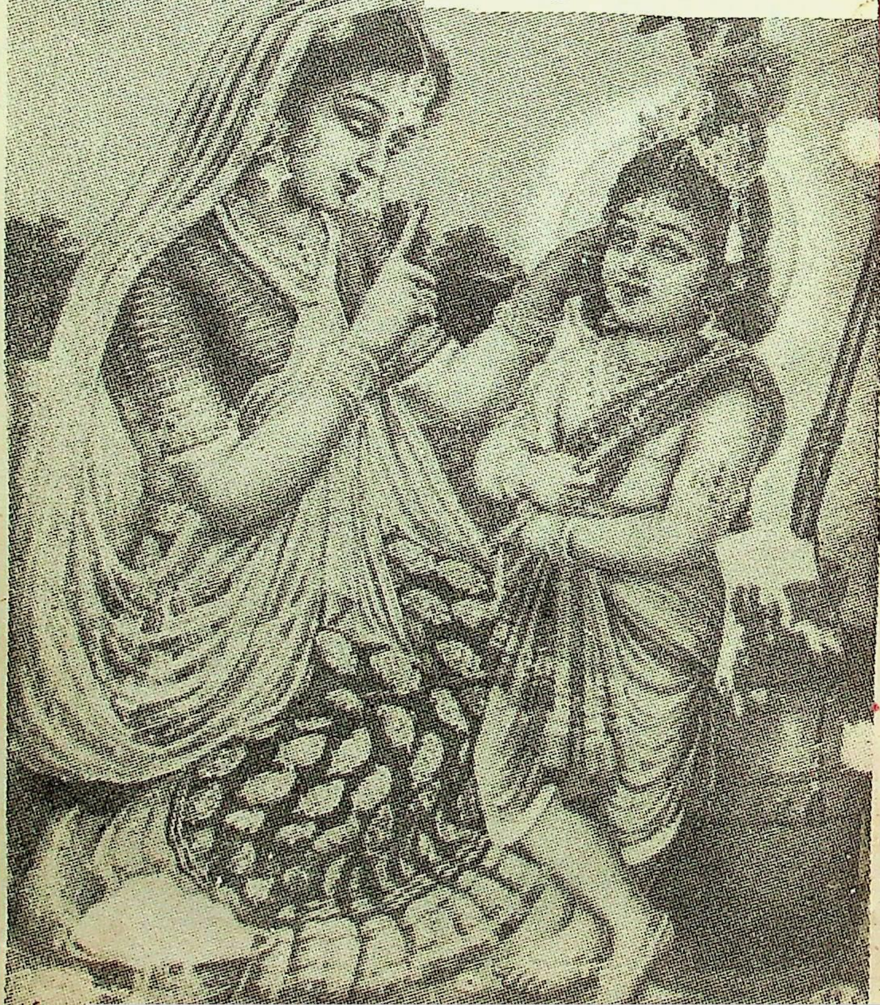
کرشن لیلا

الحاج
فاضل
کاشمیری





کرشن لیلا



۱۔ ٹائیٹل — کرشن لیلا

۲۔ صفحہ — ۱۹۲

۳۔ عکس — جنوری ۱۹۸۴ء

۴۔ کاتب — مصنّف

۵۔ آرٹ تہ حاشیہ — (")

۷۔ مول (شیٹھ روپیہ) Rs.60/-

۸۔ چھاپ خانہ :-

कृष्ण-लीला

پرنٹرز اینڈ پبلشرز :-

فاضل کاشمیری

ساکنہ گلشن نگر۔ چھانپورہ۔ سرینگر

کشمیر ۱۹۰۰۱۵

سورگیہ شریمتی مایاونتی بترا
کی سمرتی میں سمرپت۔
(مصنّف)

स्वर्गीया
श्रीमती मायावंती बतरा
की
पुण्य स्मृति में
समर्पित

फाज़िल कश्मीरो



بنوٗوم پان ہوٗرلی سوزٕ بوٗرمَس
میٚژ لوٗیہ اوٗسُس تہٕ اَنگ اَنگ سازٕ کوٗرمَس
وٚوزُس یَس نِش چھیلتھ ژھٔنِمَس کدوٗرَت
تُلِتھ زَنگارٕ نوٗرُک آیہٕ پوٗرمَس

شریمد گیتا جی کس قسم کے فوق البشر انسان (Superman سپرمین) پیدا کرنا چاہتی ہے

۵۶/۲ جو سکھ سے سکھی ہو نہ دکھ سے دکھی ، نہ خوف اس کو آئے نہ غصہ کبھی ، نہ جذبوں کے



नूरुक श्रायि

वनोवुम पान मोरली सोज़ बोरमस ●

मेच्युव श्रोसुस त श्रंग श्रग साज कोरमस

वोजुस यस निश छलिथ छ'न्यमस कदूरथ

तुलिथ जंगार' नूरुक श्रायि पोरमस

नोट : नूरुक श्रायि :— (सूरऐ नूरुक श्रायि, सूरऐ नूर छु कुरानिमजोदुक श्रख सूरऐ शरीफ)

सर्गो येषां साम्ये स्थितं मनः। निर्दोषं हि समं ब्रह्म तस्माद्ब्रह्मणि ते स्थिताः॥१९॥

स ब्रह्मयोगयुक्तात्मा

खमक्षयमश्नुते ॥२१॥ दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

حرفِ اوّل

قومی بھائی چارہ کی لگن برقرار رکھنے کے سلسلہ میں یہ کتاب "کرشن لیلا" میری تیسری ادبی کوشش ہے۔ اسے تخلیق کرنے اور شایانِ شان تعمیر کرنے میں مجھے ایشور اللہ کی ہمہ گیر بخشش شاملِ حال رہی، جو میرے نصیب کے کارن ہے۔ مجھے اس کتاب کی تزئین (Decoration) اور کتابت خود کرنے میں دلی مسرت حاصل ہے۔

زیرِ نظر کتاب "کرشن لیلا" کی تکمیل میں مجھے محترمہ ڈاکٹر جگت موہنی صاحبہ، پروفیسر چمن لال جی سپروؔ اور پنڈت سائلؔ کاشمیری صاحب نے تعاون دیا، اور گنیش مندر پربندھک سمتی سرینگر اور سناتن دھرم پرتاپ سبھا سرینگر نے مالی امداد دی۔ میں نے رسالۂ کلیان اور اسکان بکس کلیفورنیا سے کافی فایدہ اُٹھایا ہے ان کا دل کی گہرائیوں سے مشکور ہوں۔

اس کتاب میں جتنے بھی اندراجات ہیں، مجھے اُن کی چند خامیوں

* दो शब्द *

कौमी भाईचारे की लगन बरकरार रखने के सिलसिले में यह किताब "कृष्ण लीला" मेरी तीसरी अदबी कोशिश है। इसे तखलीक करने और शायानि--शान तामीर करने में मुझें ईश्वर-अल्लाह की हमागीर बख्शिश शामिल-इ-हाल रही जो मेरे नसीब के कारण है — मुझे इस किताब की तजईन (Dec-oration) और किताबत खुद करने में दिल्ली मस्सरत हासिल है ।

जेर-इ नजर किताब की तकमील के दौरान मुझे जिन कृष्ण-भक्तों ने अपना ताऊन दिया उनके अस्माएगरामी इस तरह से हैं — श्री धर्मवीर बतरा डा० जगत मोहिनी साहिबा, प्रोफेसर चमनलाल सप्रू साहिब और पण्डित पृथ्वी नाथ कोल "साइल–कश्मीरी" और जिन रसाईल से मैंने इस्तिफादा किया उनमें "कल्याण" गोरखपुर का नायाब खसूसी "भागतङ्क", और Iscon Books, California, काबिलि जिक्र हैं ।

इस किताब में जितने भी इन्दराजात हैं, मुझे उनकी चन्द खामियों की तरफ इशारा

کی طرف اشارہ کرنے میں کوئی جھجک محسوس نہیں ہوتی۔ میں نے بنیادی طور پر ایک مسلمان گھرانے میں جنم لیا ہے اور اپنی تعلیم و تربیت کے دس اوّلین سال اسلامیہ سکولوں میں گزارے ہیں اور اردو، عربی اور فارسی کے ماہرین اساتذہ علماء وقت سے زبان و خیالات کی چاشنی کا نقشہ اتارا ہے۔ اس لئے میری کرشن لیلاؤں میں مذکورہ علوم کے ذخائر کی جھلکیاں ابھرتی ہیں۔ یہ کہنا بے جا نہ ہوگا کہ رگھوپتی سہائے فراق گورکھپوری کے کلام میں جا بجا ہندوستانی تہذیب کے پہلو بہ پہلو ہندی بھاشا کی کرنیں جھلملاتی ہیں جو ایک فطری امر کا آئینہ دار ہے۔ دوسری بات اس حقیقت کی نشاندہی ہے کہ نعت کہنا میری سرشت میں شامل ہے۔ اس لئے اس رنگ اور کیف و گداز سے بھی الگ نہیں رہ سکتا۔

ممکن ہے کہ قارئین حضرات میری کرشن لیلا پڑھ کر یہ بھی اندازہ کریں گے کہ لیلا کار فاضل کی شاعری اور خیالات و بیانات کا

करने में कोई झिझक महसूस नहीं होती – मैंने बुनियादी तौर पर एक मुसलमान घराने में जन्म लिया और अपनी तालीम-वतरबियत के दस अवायली साल इस्लामिया स्कूलों में गुज़ारे हैं और उर्दू, फारसी और अ'बी के माहिरीन असातिजा उलमाए वक्त से ज़बान-व-खयालात की चाशनी का नकशा उतारा है — इसलिए मेरी कृष्ण लीलाओं में मजकूरा अलूम के जवाइर को झलकियां उभरती हैं । यह कहना बेजा न होगा कि रघुपति सहाय फिराक गोरख-पुरी के कलाम में जा बजा हिन्दुस्तानी तहजीब के पहलू-ब-पहलू हिन्दीभाषा की किरणें झिलमिलाती हैं; जो एक फितरी अम्र का अईनादार है । दूसरी बात इस हकीकत को निशानदिही है कि "नात" कहना मेरी सिरिश्त में शामिल है — इस लिए रंग और कैफ--व-गुदाज से भी अलग नहीं रह सकता —

मुमकिन है कारीन हजरात मेरी "कृष्ण-लीला" पढकर या सुनकर यह भी अन्दाजा करेंगे कि लीला-कार फाजिल की शायरी और खयालात और बया-नात का Convas बहुत वसीह है या वह तख-

کنواس بہت وسیع ہے۔ یا وہ تخیّل کے ایک حلقہ سے نکل کر دُوسرے حلقہ میں پڑنے میں کچھ تاُمل نہیں کرتا۔ یا یہ کہ وہ عاشقِ رسولؐ ہونے کے دوش بدوش کرشن بھگت اور گورو بھگت بھی ہے۔ کیونکہ فاضل نے ستگورو سری بابا گورو نانک دیو جی پر بھی اپنی کئی تخلیقات بھینٹ چڑھائی ہیں۔ یا یہ کہ وہ مُسلمان ہونے کے ساتھ ہندو بھی ہے اور سکھ بھی۔ میرا جواب کیا ہوگا؟.... کچھ بھی نہیں... ہاں! اتنا کہونگا کہ لوگ مجھے "شاعر" کہتے ہیں۔

یہاں چند عامیوں[1] کے سوال کا جواب دیتے ہیں مجھے تاُمل[2] نہیں کہ میں نے اپنی عُمر کے گرانقدر اور مصروف ترین ۵ وسال کرشن لیلاً تصنیف اور مُرتب کرنے میں اس لیئے صرف کیئے کہ سری گیتا جی کے مندرجہ پیغامات اور خاص طور پر اس مقدّس[3] سلوک کا

نوٹ:۔

۱۔ عامی:۔ ناخواندہ ۲۔ تاُمّل = اندیشہ ۳۔ مُقدّس = پاک

यग्रुल के एक हलके से निकलकर दूसरे हलके में कुछ तअमुल नहीं करता—या यह कि वह आशकि रसूल होने के दोश-बदोश कृष्ण-भगत और गुरु भगत भी है — क्योंकि फाजिल ने सतगुर सिरी बाबा गुरु नानक देव जो पर भी अपनी कई तखल्कात भेंट चढाई हैं या यद कि वह मुसलमान होने के साथ साथ हिन्दु भी है और सिख भी — मेरा जवाब क्या होगा? .... कुछ भी नहीं......... हां। इतना कहूंगा कि लोग मुझे "शायिर" कहते हैं —

यहां चंद आमियों के सवाल का जवाब देने में मुझे तअमुल नहीं कि मैंने अपनी उम्र के गरां कदर और मसरूफ तरीं मह-व-साल कृष्ण लीला तसनीफ और मुरतब करने में इसलिए सरफ किये कि श्री गोता जी के मुन्दरजा पैगामात और खास तौर पर इस मुकद्दस श्लोक का मैं कायिल हूं।

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ।।

میں قایل ہوں ؎

ترجمہ :-

your right is to work only, but never to the fruit thereof. Let not the fruit of action be your object, nor let your attachment be to inaction.

تجھے کام کرنا ہے اور مرد کار
نہیں اُس کے پھل پر تجھے اختیار
کئے جا عمل اور نہ ڈھونڈ اس کا پھل
عمل کر عمل کر نہ ہو بے عمل

آشا ہے کہ وسیع النظری سے
نوازے گئے قارئین اور سامعین میری "کرشن لیلا" سے کافی حد تک متاثر ہونگے جس سے
اُن کے دلوں میں بھائی چارہ کے جذبات اُبھر آئیں گے۔

فاضل کاشمیری

15 گلشن نگر۔ سرینگر
1-1-1984

कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन ।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥

तुझे काम करना है ओ मर्द ए कार
नहीं उसके फल पर तुझे इख्तियार ।
किये जा अमल और न ढूंढ–इसका फल
अमल कर, अमल कर, न हो बे अमल ॥

आशा है कि वसीह-उल-नजरी मे नवाजे गए कायरीन् और सामियीन मेरी " कृष्ण-लीला " से काफी हद तक मुतासिर होंगे — ज़िससे उनके दिलों में भाई चारा के जजबात उभर आयेंगें ॥

फ़ाजिल कश्मीरी

गुलशन नगर
श्रीनगर–१९००१५
१-१-१९८४

कश्मीर के रसखान

फाज़िल कश्मीरी ने 'बालक अवस्था' और 'कृष्ण लीला' नामक कृष्ण-काव्यों की रचना करके सूरदास, रसखान, परमानंद. नरोत्तमदास, रत्नाकर सुब्रह्मण्य भारती की कृष्ण-भक्ति-परम्परा को सुरक्षित रखा। इसके साथ राष्ट्रीय एकता और हिन्दू-मुस्लिम सद्भाव को बढावा देने में हम उन्हें अमीर-खुसरो, नजीर अकबराबादी, सागर निजामी, बेकल उत्साही, नजीर बनारसी आदि की परम्परा में प्रतिष्ठित पाते हैं । सिख़मत के प्रति भी उन्होंने अपना अनुराग दर्शाया है और कश्मीरी भाषा में गुरु-वाणी का भावानुवाद प्रस्तुत किया है, जिसकी अत्यधिक सराहना की गई ।

फाजिल कश्मीरी ऐसे उदारचेता कवि हैं जो भावात्मक एकता के तारों को झंकृत कर राष्ट्रीय एकता और सौहार्दपूर्ण वातावरण की संरचना में कृतसंकल्प हैं । उनकी कविता में हिन्दू मुस्लिम एकता की भावना को ही प्रधानतया अभिमुखरित

किया गया है — कृष्ण की बांसुरी का मधुरिम स्वर एक हृदय—भावात्मक ऐक्य का संदेश देता है । वही 'जय—जय हरि' कहने लगता है । उसका हृदय पाक-पवित्र हो जाता है, फिर उसमें हिन्दू-मुसलमान का कोई भेद नहीं रहता । फाजिल साहब कृष्ण को गंगा का ऐसा पावन जल समझते हैं, जो हिन्दू और मुसलमान दोनों के दिलों के मल को धो डालता है—

कृष्ण गो पोशवुन गंगायि हुंद जल,
छलान हंद्यन मुसलमानन दिलुक मल ।

फाजिल साहब कृष्ण की बांसुरी की मधुरता पर मोहित हैं । बाँसुरी का स्वर प्रेमात्मा है, जीवन - ऊर्जा है, 'साजे दिलबरी' है । बांसुरी में फूंक मारकर उन्होंने आत्मज्ञान का दार्शनिक रहस्य उद्घाटित किया है । ऐसी खुदी या अहमन्यता उद्भासित की है जिसपर हजारों बेखुदी कुर्बान की जासकती हैं । इसी बाँसुरी से यह आवाज निकल रही है कि अवतार और नबी दोनों अल्लाह के भेजे हुए हैं उनकी मुरली और लय दोनों एक ही हैं, 'रहमान' और 'भगवान' भी तो एक ही समान हैं । कृष्ण के रूप-रंग पर कवि अत्यधिक मोहित है । उसे ऐसा आभास होता है कि फूलों में रंगत कृष्ण की बदौलत है, उनके कारण यह संसार सुरम्य उपवन बना हुआ है । जिन व्यक्तियों

के हृदय में प्रेम-सत्य की चिगारी सुलगती है उन्हीं को कृष्ण अमृत के प्याले पिलाते हैं। कृष्ण समदर्शी हैं। फाजिल साहब समझते हैं कि लोगों में जो भाईचारा, सद्भाव, सौहार्द है वह सब कुछ कृष्ण के दम से है। उनका 'कृष्ण लीला' (सचित्र) कृष्ण–काव्य में—भारतीय कृष्ण-काव्य में एक अभिवृद्धि है और वह राष्ट्रीय एकता के दीपक की लौ को सदा अकम्पित रखने वालों में अपना स्थान रखते हैं।

Nizamuddin

(निजामउद्दीन)

१२-१-१९८४

DR. NIZAM-UD-DIN
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

—·—

TEXT 38

एतदीशनमीशस्य प्रकृतिस्थोऽपि तद्गुणैः ।
न युज्यते सदात्मस्थैर्यथा बुद्धिस्तदाश्रया ॥३८॥

etad īśanam īśasya
prakṛti-stho 'pi tad-guṇaiḥ
na yujyate sadātma-sthair
yathā buddhis tad-āśrayā



"موراُلی شبداہ اسہ گوکنن۔ وَنن چھ رادھا کرشنہ ہے آو"

TRANSLATION

This is the divinity of the Personality of Godhead: He is not affected by the qualities of material nature, even though He is in contact with them. Similarly, the devotees who have taken shelter of the Lord do not become influenced by the material qualities.

ترتیب

صفحہ



राधायि बरी प्याल' चे गूपाल' मे कुन वुछ

अज काल यिज्यम साल' दमाह लाल' मे कुन वुछ

वृन्दावन कलानायौ हृदयानन्द दायिनौ,

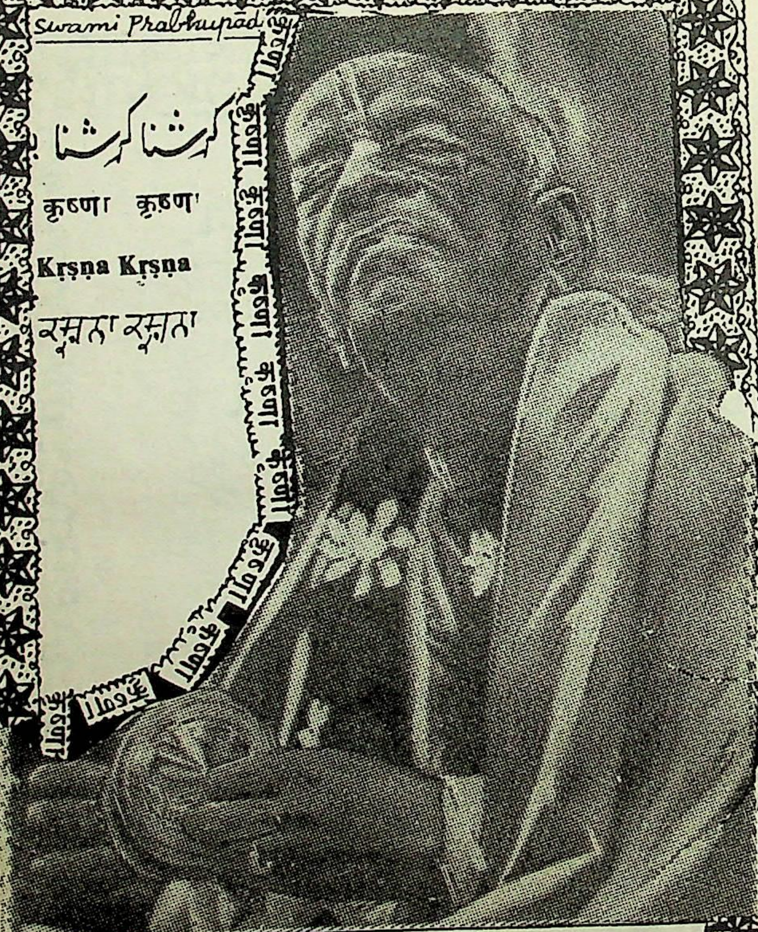
सुखदौ राधिका कृष्णौ भजेऽहं कुंजगामिनौ ॥

اگر چھے ظوٗن سمر بھگوانہٕ سندۍ گوٗن
ژٕ یہ سپدی شوٗد پنُن دِل ہیرِ تےٚ لوٗت
چھُ تمۍ سُند ناو سمرُن عینٕ اکسیر
بناوان کیمیا گر چھے کھوٗٹس سوٗن

अगर छुय ज़्वन सुमर भगवान् संध गोन
च़य सपदी शौंद पनुन दिल हेरि तय ब्वन
छु तंम्य सुंद नाव सुमरुन एन इकसीर
बनावान कीमियागर छुय खोटिस स्वन

مینہ نِش آو۔ بارہا آو۔ بارہا آو
کوٗرن میانِس وٕندس منز پوٗرٕ ٹھہراو
تمِس کُن اکھ قدم تُل یأرِ لاگی
کرِی اوٚرئے دیا بھگوان ژٕ ازماو

म्य निश आव बारहा आव बारहा आव ।
कौरनु म्यांनिस वौन्दस मंज़ पूरु ठहराव ॥
तंमिस कुन अख कदम तुल यांर्य लागी ।
करिय ओरय दया भगवान च़ अज़माव ॥



"God attracts everything. The word Kṛṣṇa *means 'all-attractive.' What, then, is wrong with addressing God as Kṛṣṇa?"*

پتا ماتا: کرشن ۔ ماتا پتا سُے
گورو سُے گیان سُے تَے آتما سُے
دِلس شرومُت ۔ اُچھن منز جاے تمی سنز
محبّت سُے خلوصچ پنز دیا سُے

पिता माता कृष्ण - माता पिता सुय
गुरू सुय ज्ञान सुय तय आत्मा सुय
दिलस श्रोपमुत अंछन मंज़ जाय तंम्य संज़
महोबत सुय खुलूसुच पंज़ दया सुय ॥



कृष्ण पंज़य पांठ्य मख़लूकन पनुन मोल ।
करान छिस पोंपुरिन्य गथ, तस बरानलोल ॥

KRISHNA



کرٛشن پنٕنی پأٹھۍ مخلوقن پنُن موٗل

کران چھس پوٗنیرِ ذِ گتھ تم برٛن لول

This time, Nārada Muni saw that Lord Kṛṣṇa was engaged as an affectionate father petting His small children. (p. 245)

پرزلونی دست و پا چھم سرِیہ کرشنس
دِلکی یِم نقشہ ہاوِم سرِیہ کرشنس
یِمو کاتیاہ حسین پمپوشہ سر کرِ
یِمو سٚتی تخ سجاوِم سرِیہ کرشنس

۱- دست = اَتھ - ۲- پا = کھور ۳- تخ = تخت

प्रज़लवुन्य दस्त पा छिम श्री कृष्णस
दिलुश्य इम नकशि हांविम श्रीकृष्णस
यिमॅव 'कांत्याह् ह्सीन पंपोशि सर 'कंर्य
यिमव सूत्य तख सजांविम श्रीकृष्णस




His Divine Grace
श्रीकृष्ण मधुर तान छेड़ते हैं

خوبصورت

خوبصورت سانہٕ آنگنٕی ژ۪او تے

گوپین دِژ تو کرشن سون آو تے

کرشنہٕ ڈیُو ھُم ژھایہ رُوس زن ماہتاب

شاہہ ژھاین سریہ ہیو نوٗن دراو تے

ہیون دِل اوس دارِ رُوس دروازٕ رُوس

اَتھی اندر پرژھنے کوٗرن ٹھہراو تے

نو رستی اوند پوکھ گرک کورنم نہال

من پرسن چھم۔ دِل برٲن چھم چاو تے

ذکرِ بیٹھ تے فکرِ بیٹھ کرنم دیا

ہیانہٕ غفلژ ہند ہیوٗتن ماناو تے

کرشنہٕ! دِیتھم تیوت رٔژ رٔژ سیر گوس

توتہٕ دو پھم ییتھنہٕ روزی گراو تے



ख़ूब सूरत सानि आंग्'न्य चाव तय।
गूपियन द'प्य तव कृष्ण सोन आव तय॥

कृष्ण ह्यचूठुम छ़ायि रो'स ज़न माहताब।
श्याम् छ़ायन सिरिय ज़न नो'न द्राव तय॥

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़' रो'स।
प्रंथ्य अन्दर प्रछ़नय को'रुन ठहराव तय॥

नूर् सात्य ओ'न्द पो'ख गरुक को'रनम निहाल।
मन प्रसन्न छुम दिल बराम छुम चाव तय॥

ज़िकिरि प्यठ तय फ़िकिरि प्यठ को'रनम दया।
म्यानि गफ़ल'च़ हुन्द ह्यो'तुन मा नाव तय॥

कृष्णु च्युतथम त्यूत र'टय र'टय सेर गोस।
तोति दो'पथम "युथ न् रोज़्यम ग्राव तय?"

یوہ ژھورم، اوہ کرشن گوہ تس

بس کنی کتھ : کرشنہ گارن پراوتے

کرشنہ سمرت کرتہ چشمو ڈیشہن

یوٚد نہ باور چھے ذرا ازماو تے

بانسری کن تھوٚوم منزل سوٚرم

فاصلا ! سہ آنگن مہ. گو صحراو تے

شہکار

ہمہ گو بیدار بخ . ازہ گوم بیدار بخت

وُچھم دیدو کرشن تس سرید انہار

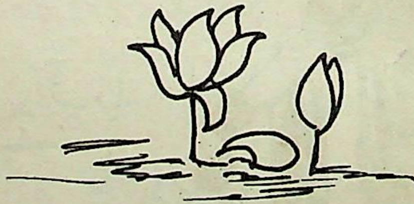
سہ گوٚرمت وہستہ کارن پوٚز صنم ہیو

دِتُن زگتس پنُن اکھ حسن شہکار

योर् छोरुम ओर् कृष्णन मोरनस।
बस कुनी कथ—कृष्णु गारुन प्राव तय॥

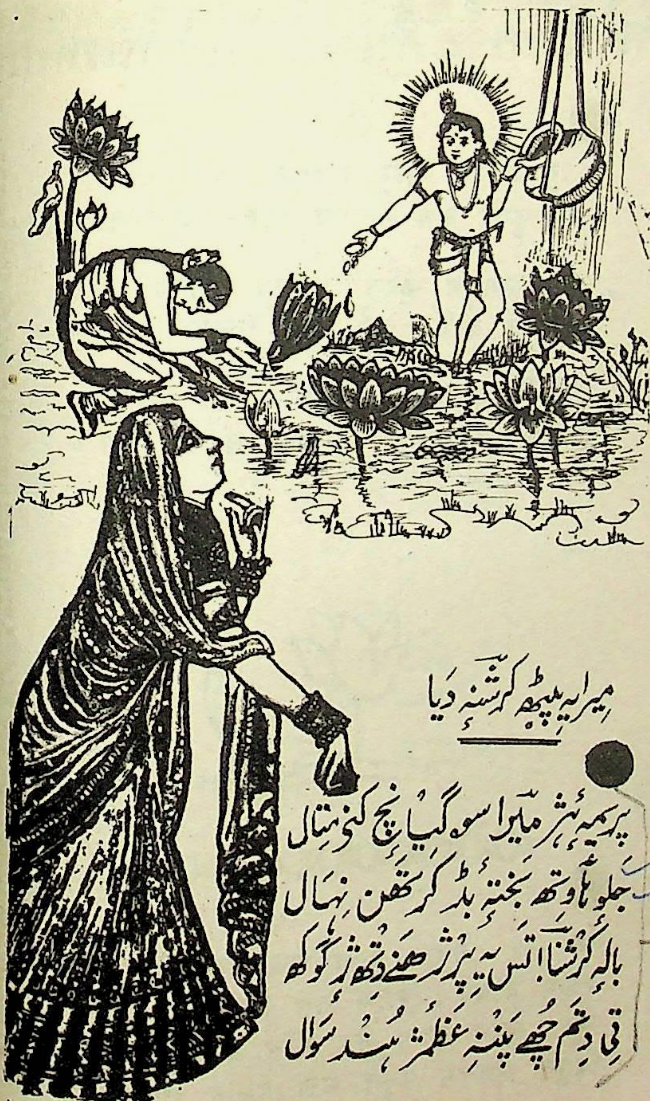
कृष्ण स्मरन करत् चश्मव डेशिहन।
यौद न् बावर छुय् ज़रा अज़माव तय॥

बांसुरी कुन कन थोवुम मंज़िल सुरुम।
'फ़ाज़िला'! ओंगुन म्य गव संहराव तय॥





म्य गव बेदार बरुत अज़ गोम बेदार।
वुछुम दीदव; वुछुम तस सिर्रि प्रनहार,
खुदा सुंबन कृष्ण गोर सोंच कंछि कंछि।
दितुन जगतस पनुन अख हुसनि शाहकार॥



میرایہ پیٹھ کرشنہ دیا

پریمہ ۂش میرا سو گیانچ کنہِ ہتال
جلوٗ ہاوِتھ بختہٕ بڈ کرتھن نہال
بالہٕ کرشنا! تس یہ پرٛزھنے دتھ ژٕ گوکھ
قِیٚ دِتم چھے پننہٕ عظمژ ہند سوال

ژٕ یامتھ کھوٚلتھم ستھ درشنکی بر
کھوٗرن تل وٕچھ مےٚ صحرا کوٗہ تہٕ سنگر
مکانٕکی تے زمانٕکی حلقہ ژھوٚٹی گام
چھُہُم نا کرشنہٕ گوپالا ژٕ یاور

चे यामत खूल्यथम सथ दर्शनकि बर।
खोरन तल वुछ म्य सहरा, कुह त संगर
मकानुक्य तय ज़मानुक्य हलक छोट्य गाम
छुहम ना कृष्णु गोपाला ! च्य यावर ॥

मीरायि प्यठ कृष्णु दया

प्रेमु हेच मीरा न्व ज्ञानुच कुन्य मिसाल,
जलवु हाविथ आर'कं'च क'रथन निहाल।
वालु कृष्णा तम यि प्रिज़नय दिथ चु गोख
सी दिनम छय पनुनि अज़म'च हुन्द सवाल।



भक्तिमती मीरापर कृपा

چانہٕ پریمُک زوٗنگ یمِس لوٗگ سوٗر گو
سِریہ مَن پرٛوٗن زٕژن ہُند تۄر گو
لَن ترٲنی پرٲنہٕ سمیچ ریت آس
قعرٕ سِتی میرایہ انگ انگ ٹھور گو

चानि प्रेयमुक ज़ोंग यैंमिस-लोंग सूर गव,
सिर्यायि मन प्रोवुन ज़ुचन हुन्द तूर गव ।
लन तरांनी प्रानि समयिच रीत आंस ,
कोर्व़ सत्य 'मीरायि' अंग अंग तूर गव ।।



میٚون دِل اوس دآرِ رٕوس دَرواز رٕوس
اُتھی اندر پڑٕھنے کوٚرُن ٹھہراو تَے

म्योन दिल ओस दारि रो'स दरवाज़' रो'स।
मंथ्य अन्दर प्छ़नय को'रुन ठहराव तय ॥

कागा सब तन खाइयो, चुन चुन खाइयो मास, दो नैना मत खाइयो, पिया मिलन की आस ॥ ॐ सत मत ॥

Love at first Sight

خاندر

شبیہ کرشنن وُچھم دھرتی بنیل گو
اچھن تہندِس شبیہس ستی میل گو
وجودک ویژ تھوٗوم بس آیتن تسی
کرشن پرووم مہ کیت خاندر مژھیل گو

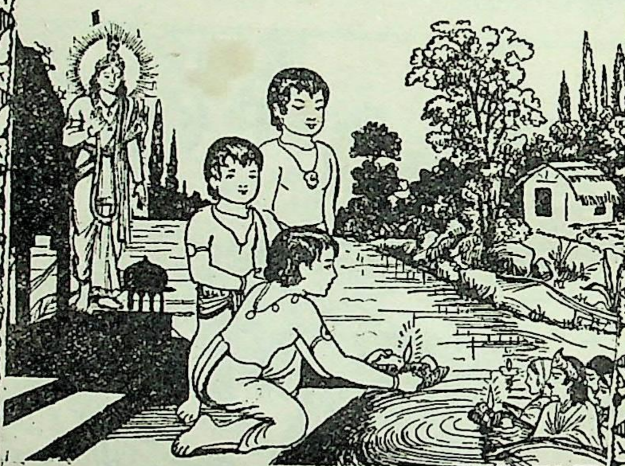
(میرا)



۱۔ شبیہ = فوٹو
۲۔ دھرتی = زمین
۳۔ ویژ = جائیداد
۴۔ مژھیل = شگفتگی
۵۔ آیتن = حاضر
۶۔ پروون = حاصل کرن

शबीह कृष्णुन वुछुम धरती बुन्युल गोव,
अछुन तँहदिस शबीहस सूत्य म्युल गव ।
वजूदुक व्युच थोवुम बस आयितन तस्य,
कृष्ण प्रोवुम म्य क्यत खांदर संखुयुल गव ॥

کاگا! سب تن کھائیو۔ چن چن کھائیو ماس۔ دو نینا مت کھائیو۔ پیا ملن کی آس



شُرٕ کَرَن پوٗزا پٔزُیک اِظہار یُیٔ
کرٛشنہٕ بھگتَن شُرلِہ مَنٛز تام کارِ یُیٔ
زاہدا ! یِتھنٕے کرٛشن دَرشُن دِوان
دِل کَرُن موٗصُم۔ دِیُیٔ اُدھار یُیٔ

शुर्य करन पूज़ा—पज़्युक इज़हार यी,
कृष्णॖ भक्तेन शुलि मंज़ ताम कार यी।
ज़ाहिदा ! यिथिनॖय कृष्ण दर्शुन दिवान,
दिल करुण मोसूम दि:यी ओधार यी ॥



یِمِس پُرشَس زَنَم یِیِو پھُروٗ تہٕ پانَس
رُٹِن لَنٛز کرِشنٕہ وَتھ وو تا مکانَس
چھُے یِہ لَبُن گَنٛز اَکرو پِہ سینٛز کَل
یِنی پمپوشہٕ سَر اَنگ زٕہ پانَس

۱ انسان
۲ ہا گوان
۳ قیمت
۴ سر چھیل

مساوات نہٕ وہ یوگی ہے افضل جیسے ہو سب ایک سگے دوست بے لاگ کا حساب نیک

پرُن گیتا تہٕ کرٛشنُن داس سپدکھ
سورُن گیتا تہٕ کرٛشننۍ ماے پراوکھ
کری میُل کرٛشنہٕ لالس سیتۍ سمرن
سمرٕ گیتا سمرٕ کرٛشنا مہٕ کڈ تھکھ

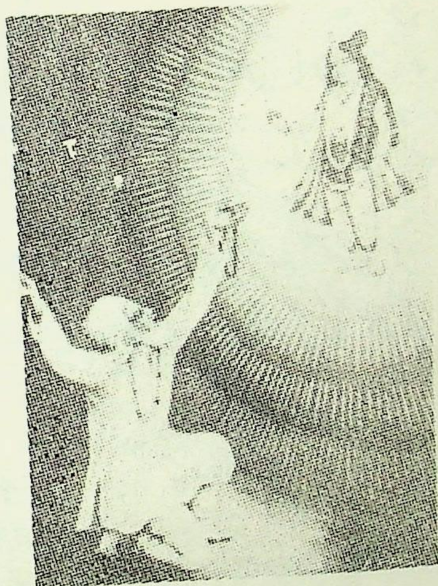
परुन गीता त कृष्णुन दास सपदख
[illegible]रुन गीता त कृष्णन्य माय प्रावक
करी म्युल कृष्णलालस सूत्य स्मरण
स्मर "गीता" स्मर "कृष्णा" मरूड थख

येंमिस पुरुषस ज़न्म प्यव फ़ूच़ पानस,
रंटुन कुन्य कृष्ण वथ वोत लामकानस।
छुयथ प्रालब्द गंनिर अक्रूर संज़ कल,
बंनिय पंपोशि सर अंग अंग चें पानस॥

नोट -

वल = गंड, मुशकिल





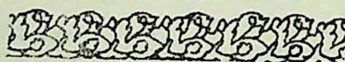
भक्त रसखानपर कृपा

رسہ خانن گورناتھ کرتھس دیا[1]
لولہ والین کرٔ دیا کینہہ کم چھیا
نابہ کارہ چھس مگر چون داس چھس
کرتہ داسس پیٹھہ تہ از مہرٔ نگاہ

۱ مہربانی

یتمس پیٹھ کرشنہ مہاراجن دیا کر
بہ آسانی تمس ناو ساگرس تر
حیاتی تہنز پیٹھ جیون تہ حاران
سہ وانسن زندہ رود پہاون عمر زار

यमिस प्यठ कृष्ण महाराजन हया 'कर
ब आसानी तमिस नाव सागरस 'तर
हयाती तिहिंजि प्यठ जीवन ति ह'रान
सु वांसन जि़द रूद प्रवन उमर चर



रसख्वानस टोठच्व दया

रस खानन गोरनख क'रथस दया,
लोल'वाल्यन किच़ दया कैंहं कम छ्या।
नाव'कारा छुस. मगर चोन दास छुस,
करतु दासस प्यठति अज़ म्यहर च निगाह॥



भक्त विल्वमंगलपर कृपा

گُپالَن بلوٗمنگل کوٗر یہِ خوشحال
تِمِس اوس کرشنہٕ سمرن حال تہٕ قال
اوے کرنووُنس منزِل سواگت
چھُ کوتاہ رُت دیالوٗ کرشنہٕ گوپال!

یِمَوٕ لُہرٕو وَپُزرُک قصرِ شاہی
تِمَوٕ کٔرٕ پانہٕ سۭے آخر تَباہی
کرِشن مہٲراج ووٚتھ اُدھار کورنکھ
چھُ کوتاہ جان بھگوَن یا اِلٰہی!

ग्रिमव लुहरोव पजरुक कसरि शाही,
तिमव कॅर पानुसुय ऑखुर तबाही।
कृष्ण महाराज वोंथ उधार कोरनख,
छु कोताह जान भगवन या इलाही!

गोपालन बिल व मंगल कुरुय खुशहाल,
तमिस ओस कृष्ण स्मरण हाल तय काल।
अवय करनाव्यनस मंज़िल स्वागत,
छु कोताह रुत, दयालु कृष्ण गोपाल!!



फलवालीपर कृपा

میوٕ واجنؠ بخشتہ بُڈ اکھ نازنین
کرٛشنہٕ سمرن اوس تس پُزاتہ دین
پرتھ میوس منز درٛٹھؠ گو تس کرٛشنہٕ رنگ
ہوو تس تمی موکھ پتن ۔ کوتاہ حسین

چھ کِردارُک تھزر وِ لوٚد کرشنہٕ بھگتس
تٕمِس گیانچ تٕپِش پانَس اَندَر مَس
چھ اَوگُن تَس نِشہٕ یٔژ دوٗر یٔژ دوٗر
تھوان بھگوَن پُرُش یتھ سِتی پانَس

छु किरदारुक थज़र ट्योंद कृष्णु भक्तस,
तंमिस ज्ञानुच्य तंपिश पानस अन्दर मस।
छि अवगुण तस निशे यंच़ दूर यंच़ दूर,
थवान भगवन पुरुष युथ सूत्य पानस ॥

मेव वाज्यंन्य भक्त बंड़ अख नाज़नीन,
कृष्णु स्मरण ओस तस पूज़ा तु दीन।
प्रथ मेवस मंज़ द्रांठ्य गव तसं कृष्णु रंग,
होवनस तंम्य मुख पनुन कोता हसीन ॥



سورداسس کرشنہ بخشتھ گیان دھیان
تشنہ ہردن گو سہ عرفان باگران چھ
کیاہ گژھی کم یوُد مبہ تے ساگر کرکھ
لکھ مبہ منزی بیتھ آسہن تارس تران

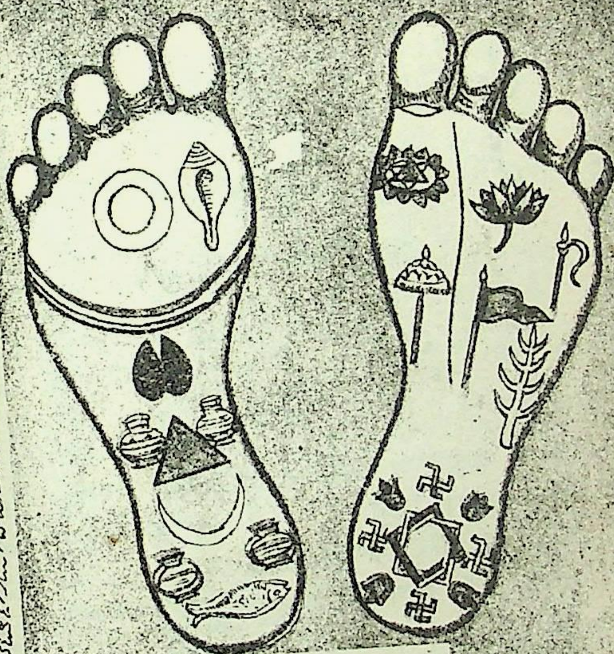
کرکھ یوٚد کرٛشنہ سودا، کن پنُن دِل
مگر سودا بنُن دوٚن منز چھُ مشکِل
کری ما اور بھگون بخت بیدار
مُلے کر کرٛشنہ بھکتی بن ژٕ فاضِل

करख यौद कृष्णु सोदा 'कुन पनुन दिल,
मगर सोदा बनुन दुन मंज़ छु मुशकिल।
क़री मा ओर् भगवन भक्त बेदार,
मुलय कर कृष्ण भक्ती बन च़ फ़ाज़िल॥



सूरदासस आ'नुथ गाश

सूरदासस कृष्ण' वनुथ ज्ञान ध्यान,
तश्नु हृदयन गो मुइरफान बागरान।
क्याह गछ़ी कम यौद' म्यते सागर करख।
नुख म्य मंज़्य युथ आस'हन तारस तरान॥



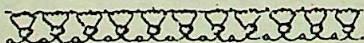
श्रीकृष्ण-चरण

کرشنہ اچھوٗتے نقشہِ پا چھم شوز ہن
چھس اَوے کنی دین وۅہچھ وتھ سوٗرن
یی کرَان لچھہ منزلن ہنز وتھ گُڈم
چھیکرس چھس پانہٕ اَز منزل بنن

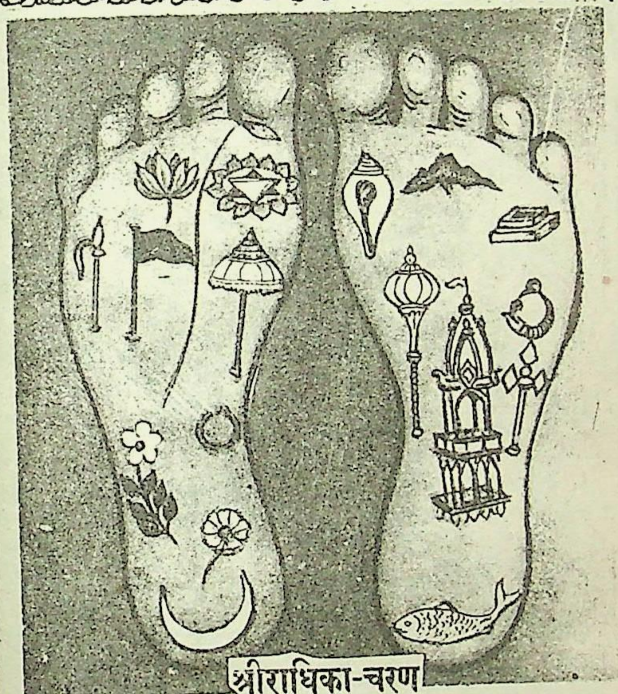
شری کرشننی چرن سادھن کلس پیٹھ
مگر یارس چھلان پننیو اتھو کھور
یہ کرنس منز تمس حاصل پرسنتا
یہ گو پریمک خلوصک آخری حد

نوٹ :- ۱- یار : سُدامہ جیس کُن اشارِ ۲- پرسنتا : خُشی ، مسرت ۔

श्रीकृष्णन्यचरण सादन, कलस प्यठ,
मगर यारस छलान पनन्यव अथव खुर।
यि करनस मंज़ तॅमिस हाॅसिल प्रसन्नता,
यि गव प्रेमुक, खुलूसुक आॅखरी हद॥



कृष्ण! चोनुय नकशि' पा छुम अूच़ मन,
छुस अवय किन्य दीन' धर्मुच वथ स्वरन।
यी करान लछ मॅ'ज़िलन ह्'ज़ वथ क'ड्'म,
छेकरस छुस पान अज़ मॅज़िल बनन॥



رادھا چھ آمژ کرشنہ وتو ڈالہ اُنن زان

پرتھ منزلس پیٹھ زانہ ونن باگہ دِتن گیان

محروم پیرشن بانہ دِین دِیت نہ بخش دِل

تم گاشہ تش یتر دور پیمتی اُنی تہ پریشان

پمپوشہ پاد

ڈالہِ شوٗبیا میون دِل مورلی درس
بس یوٚہے پمپوش پھوٚل ہیانس سرس
دِل چھُ دِل پمپوشہِ پادن ہُنْد عکس
ڈاٗل گذراوِتھ کھورن میوٗٹھہ کرس

पंपोशि पाद

डालि शूब्या म्योन दिल मुरलीदरस,
बस योहय पम्पोश फोल म्यानिस सरस।
दिल छु दिल पम्पोशि पादन हुन्द अक्स,
डाल्य गुज़रॊविथ खोरन म्यूठा करस ॥

राधा छि आमुच् कृष्ण वतव, डाल अंनिन ज़ान
प्रथ मंजिलस प्यठ ज़ानुवुन्य न बागि दितुन ज़ान
महरूम पुरुषण बानु, दयन द्युतु नु बख्शुन दिल,
तिम गाशिनिश येच् दूर प्यंमति अंन्य तु परेशान



گیٚشیمِس بالکِس نِش نٕوٕن شُریان
پٔری چھا! خُدٕ چھا! اوتارٕ انسان
اُچھَن وُزٕمل، ڈیکَس زٕندٕرم موکھَس گٕہ
یہ وُچھتھے کانٛہہ دلوَس ہوش رٕوان

———

۱۶۔ جو باطل ہے موجود ہوتا نہیں ، جو حق ہے نابود ہوتا نہیں

विनाशमव्ययस्यास्य न कश्चित्कर्तुमर्हति ॥१७॥

سِری کرشنا! مَنک وِیُژ باوَفادِم
پِتا ماتا چھُہَم پرُیچھ دیا دِم
یمَن مِیانِن گونَن پھِر امرِتک سَگ
اَمی سِتی زَنمہ پھِیُر کاسُم بقادِم

श्री कृष्ण ! मनुक व्युच बावफा दिम
पिता माता छुहम प्रमच्य दया दिम
यमन म्यान्यन गुणन फिर अमृतुक सग
अमी सूत्य जन्म फुयर कासुम दका दिम

ग्येशेमिस बालकस निश जून शरमान
पगो छा ! हूर छा ! अवतार इन्सान ।
अछन वुजमल, इचकस चन्द्रम मुखस गाह
यि वुछयय कामदेवस होश रावान ॥

अन्तवन्त इमे देहा नित्यस्योक्ताः शरीरिणः । अनाशिनोऽप्रमेयस्य तस्माद्युध्यस्व भारत ॥१८॥

अविनाशि तु तद्विद्धि येन सर्वमिदं ततम् । उभयोरपि दृष्टोऽन्तस्त्वनयोस्तत्त्वदर्शिभिः ॥१६॥

नासतो विद्यते भावो नाभावो विद्यते सतः ।

16/2



اُسمی توٗہی گوٗپیوٗ شاملا ہے ترٛو

بالہٕ کرٛشنس کرٛو پوٗشہ پوٗزاے

پوٗشہ پوٗزا کرِتھ لولہٕ شبداہ پرٛو ـ بالہٕ کرٛشنس کرٛو پوٗشہ پوٗزاے

بالہٕ کرٛشنس کرٛو پوٗشہ پوٗزاے

———-———

۱۹ کبھی خون کرتی نہیں آتما کبھی خود بھی مرتی نہیں آتما

رُوپ میون اوس مَن ہُمی ستیٖ نارَ زَن

زَمہریرُکؠ پاٹھؠ شیٖہلوو سوچنَن

تَن حرارت - مَن چھُ گیانچ ژینہ وُنی

ژینہ وُنی گیانچ دِژِم موٗلِ دارَن

रूप म्योन ओस मनहेमी स्त्य नार ज़न,

ज़महरीरुक्य पांठ्य शेंहलोव सोंचनन।

तन हरारत- मन छु ज्ञानुच चेनुवन,

चेनुवन ज्ञानुच दिचुम मोरतीधरन॥



(वनुवुन

सम्यतवी गूपियव शालमार हय तरव,
बालकृष्णस करव पोशि पूजा १
पोशि पूजा करिथ लोलु शब्दाह परव
बालु कृष्णस करव पोशि पूजा ॥

य एनं वेत्ति हन्तारं यश्चैनं मन्यते हतम्।
उभौ तौ न विजानीतो नायं हन्ति न हन्यते ॥ न जायते म्रियते वा कदाचि-
न्नायं भूत्वा भविता वा न भूयः।
अजो नित्यः शाश्वतोऽयं पुराणो
न हन्यते हन्यमाने शरीरे ॥२०॥
वेदाविनाशिनं नित्यं य एनमजमव्ययम्। कथं स पुरुषः पार्थ कं घातयति हन्ति कम् ॥

گوکلس ساری سے زِتنہٕ زٕلہ کرو۔ جایہ جایہ ہے کرو ژھندرمس سال
پریمہٕ سٕرہیہ بانسری لولہٕ ژھالن برو
بالہٕ کرشنس کرو پوشہٕ پوزای

اُلفتچ ہورتھہ یتھ شریرس گرو۔ لولہٕ والین ڈیو یتھ برن مائے
مایہٕ ہونت اکھ قدم تل زٕوچھ مامرو
بالہٕ کرشنس کرو پوشہٕ پوزای

مالہٕ لوگ پربتس، یتھ بہن مازرو۔ سارِنے دِل تہٕ شِل اَرچھ پوشان
گیونہٕ لج آبہٕ جوی۔ نژرِنہٕ لگیم سرو
بالہٕ کرشنس کرو پوشہٕ پوزای

حُسنہٕ آکاشہٕ کنِہ لعل و گوہر جرو۔ تارِکن فاصِلا شولہ پراگاش
دیوین گوژھہ وُنُن یانہٕ اَز ترٲوِ رو
بالہٕ کرشنس کرو پوشہٕ پوزای

۲۲۔ بدلتا ہے انسان لباس کہنہ نیا جامہ کرتا ہے پھر زیب تن

गूकुलस सांयंसय ज़ितिनि ज़ूलाह करव,
जयि जायि हय करव चन्दरमस साल।
प्रेयम स्नेह बांसुरी लोलु थालन बरव।
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

उल्फतुच मूरथा यथ शरीरस गरव,
लोलुवाल्यन दिवि यथ बरिव माय।
मायि हेत अख कदम तुल चु वुछ मा मरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

मेलु लोंग परबतस पथ ब्युहुन मा ज़रव,
सारिनय दिल तु शिल अज़ छि तोशन।
ग्यवनि लंज्य आबु जुय नचनि लंग्य यिम सरव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥

हुसनु आकाशि किन्य लालु गोहर जरव,
तारकन 'फाज़िला' शोलि प्रागाश।
दीवियन गोछ बनुन पानु अज़ आवि रव,
बालु कृष्णस करव पोशि पूज़ा ॥



वासांसि जीर्णानि यथा विहाय
नवानि गृह्णाति नरोऽपराणि ।
तथा शरीराणि विहाय जीर्णा-
न्यन्यानि संयाति नवानि देही ॥२२॥
नैनं छिन्दन्ति शस्त्राणि नैनं दहति पावकः ।
न चैनं क्लेदयन्त्यापो न शोषयति मारुतः ॥
अच्छेद्योऽयमदाह्योऽयमक्लेद्योऽशोष्य एव च ।
नित्यः सर्वगतः स्थाणुरचलोऽयं सनातनः ॥

22/2



جے جے!

مَنَس مَنز گرزان بانسری ہنز ہو ڈر ے
یہ لے بالہ کرشنا چھ چانی ژہ جے جے

پنزیک آلوہ گو وَتن مَنز پیا پے
یہ چانی چھ بُڈ مہربانی ژہ جے جے

دودُک شرہیہ تہ امریت چھ کھاسین بَرن نے
چھ اَتھ سَلسبیلچ رَوانی ژہ جے جے

موکھسن پیٹھ گلاب پانہ پریمی ژہ چھے دے
نہ کُنہہ چھے برابر نہ ثانی ژہ جے جے

دُیی کم گژھتھ پانہ منزل گژھان طے
یمے گون کران پاسبانی ژہ جے جے

مہاراج کیشو ہیں اب کیا کہوں کہ آثار بد ہیں برے ہیں شگون

जय जय

मनस मंज़ ग्रेज़ान बांसुरी हुंज़ मोंदुर लय,
यि लय बाल् कृष्णा छें चा'नी चे़ जय जय।

पज़्युक आल्वाह गव वनन मंज़ पयापय,
यि चांनी छें ब'ड मेंहरबांनी चे़ं जय जय॥

दो'दुक स्रेंह त् अमृत छें खास्यन बरान नय,
छें अथ सलसबील् च[1] रवांनी चे़ं जय जय॥

मोखस प्यठ गोलाब पान् प्रेमी चे़ं छुय दय,
न कांह छुय बराबर न सा'नी[2] चे़ं जय जय॥

दुयी कम गं़छ़िथ पान् मंज़िल गछ़ान तय,
यिमय गुण[3] करान पासबांनी[4] चे़ं जय जय॥

नोठ: 1. सो़रगुकसर 2. चे ह्यु़व 3. सिफत
4. र'छ

निमित्तानि च पश्यामि विपरीतानि केशव।
न च श्रेयोऽनुपश्यामि हत्वा स्वजनमाहवे ॥ न काङ्क्षे विजयं कृष्ण न च राज्यं सुखानि च
किं नो राज्येन गोविन्द किं भोगैर्जीवितेन वा
येषामर्थे काङ्क्षितं नो राज्यं भोगाः सुखानि च त इमेऽवस्थिता युद्धे प्राणांस्त्यक्त्वा धनानि च

رادھایہ وُنی لو شامہ گٹن اَدھایہ کرشن جی

درشُن چھُ ہاوان پانہٕ کمیو ترایہ کرشن جی

نُھنی نقشہٕ بنی بنی گاشہٕ ہتھس غازِ برہمن گو

لولس تہ ہردس سریہ چھُ سرایہ کرشن جی

یتھ جایہ لوکن ہایہ لوٗرت شریہہ تہ سمت خوی

صُلح چھُ وایان بانسری تتھ جایہ کرشن جی

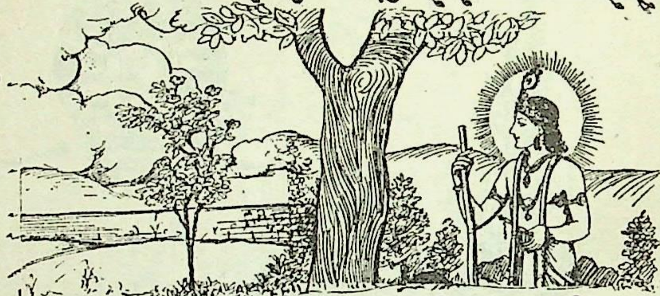
یتھ کرایہ آتش نار ترز ترہیشہ ہتین لوٗگ

تتھ کرایہ گنگا آپہ شُہل سایہ کرشن جی

فاضل اچھ تس تس باگہٕ تھزہٕ لانہ سبزرٕتس

یس پریمہ سانے تیر نظر لایہ کرشن جی

پدر بھی ہیں دادے بھی استاد بھی ہیں پسر بھی ہیں اور ان کی اولاد بھی



राधायि वंनिव शामु गटन छायि कृष्ण जी,
दर्शुन छि दिवान पानु कम्यू आयि कृष्ण जी ॥

थंन्य नक्शि बंनिथ गाशि बुथिस गाज़ ब्रमन गव,
लोलस तु हृदयस सिरियि छु सरमायि कृष्ण जी ॥

यथ जायि लुकन मायिब्रोरुत श्रेह तु समुत स्वोथ
सुलहुच छु वायान बांसुरी तंथ्य जायि कृष्ण जी ॥

यथ क्रायि ग्रातश नारु तचर त्रेशि हत्यन लोग,
तथ क्रायि गंगा आयि शुहुल सायि कृष्ण जी ॥

"फाज़िल" छु बखतस बागि थज़र लानि स्यज़र तस,
यस प्रेमसानुय तीरि नज़र लायि कृष्ण जी ॥

नोट –

आयि=नहजि २ गाज़–पोड़र
३ व्युच–सरमायि

आचार्याः पितरः पुत्रास्तथैव च पितामहाः ।
मातुलाः श्वशुराः पौत्राः श्यालाः सम्बन्धिनस्तथा ॥ एतान्न हन्तुमिच्छामि घ्नतोऽपि मधुसूदन ।
अपि त्रैलोक्यराज्यस्य हेतोः किं नु महीकृते ॥
निहत्य धार्तराष्ट्रान्नः का प्रीतिः स्याज्जनार्दन । पापमेवाश्रयेदस्मान्हत्वैतानाततायिनः ॥३६॥





لے (مورلی ہنزِ لے)

یام شہ دیت کرشنہ اوتارن نئے
جے ہری کوّر زگتہ سمسارن دئے
ازنتہ زانتھ یا نہ زانتھ گم بگھ[1]
کُلّ شمیٔ جے تھوکھ کن تتھ لئے

[1] یُس کہنہ چیز زندچھ مثلن حیوانات، نباتا تہ جمادات بیتر۔

۳۷۔ یہ دھرت راشٹر کے جو فرزند ہیں یہ یاد ہو سب اپنے جگہ بند ہیں

कुलक्षयकृतं दोषं मित्रद्रोहे च पातकम् ॥३८॥

کرشنہ مورلی پرتھ زمانس منز وزان

یم چھ بوزان تم چھ بارنی ہوی بنان

یا الٰہی یوت تاثیر چھا شہس

تفرقک ول حل چھ اقوامن گژھان

कृष्ण् मुरली प्रथ ज़मानस मंज़ वज़ान,
यिम छि बोज़ान तिम छि बार्न्य हिव्य बनान।
या इलाही ! यूत तासीर छा शॅहस !
तफ़रिकुक वल हल छु अकवामन गछ़ान ॥



याम शह द्युत कृष्ण् अवतारन नये
"जय हरी" कोर जगत् संसारन दये।
अज़ ति ज़ानिथ या न् ज़ानिथ गहबेगह[1]
"कुल्लुशयुनहय"[2] थविथ कन तथ लये[3] ॥

नोठ। 1 गहबेगह— कुनि कुनि विजि
2 'कुल्लुशयुनय'— यि छाह जिन्दह छु
3 लये— आवाज

कथं न ज्ञेयमस्माभिः पापादस्मान्निवर्तितुम् । कुलक्षयकृतं दोषं प्रपश्यद्भिर्जनार्दन ॥३९॥

तस्मान्नार्हा वयं हन्तुं धार्तराष्ट्रान्स्वबान्धवान् ।
स्वजनं हि कथं हत्वा सुखिनः स्याम माधव ॥ यद्यप्येते न पश्यन्ति लोभोपहतचेतसः ।

تُلا بانسرِی تُل!

گُپالا! پھولن گُل ۔ ذرا بانسرِی تُل
ژھ پیار اچھ بُلبُل ۔ ذرا بانسرِی تُل!

ژٕ پریمک تہ لُولک مُجسّم مُجسّم
فِدا چھی ژھ کُم کُم ۔ ذرا بانسرِی تُل!

نبس پیٹھ سِلی کوز تمنّا سِتارو
قدم تھو قدم تھو ۔ ذرا بانسرِی تُل!

ژھ پرتو سبہ ترٕووتھ مگر ژھایہ ژھایے
گِجس چانہٕ بائے ۔ ذرا بانسرِی تُل!

۱۔ ذرا = ہنہ ۲۔ نب = اسمان ۳۔ تمنّا = شوق ۴ پرتو = جلوہ

یہ قبیلہ فنا گر کوئی ہو گیا قدیمی وہ دھرم اُس کا سب کھو گیا

बाँसुरी तुल

गुपाला ! फोलन गुल, ज़रा बांसुरी तुल,
चे प्रारान छि बुलबुल, ज़रा बांसुरी तुल।

च प्रेयमुक त लोलुक मुज्ज़सम मुज्ज़सम,
फ़िदा छी चे कम कम, ज़रा बांसुरी तुल।

नवस प्यठ सुली कोर[1] तमन्ना[2] सितारी,
कदम थव कदम थव, ज़रा बांसुरी तुल।

चे परतव[3] म्य ओवुय मगर छायि छाये,
गंजिस चानि माये, ज़रा बांसुरी तुल॥

नोट :— 1. कोरबान 2. :— यछ़ 3.— जलव

گٹن منز ہُرہ گو یتو گاشرو وُلی
اُچھن ہیلتو مٔلی، ذرا بانسرِ تُل!

یمن گوپِین منز ژہ موٗرلی دِتھ شہ[1]
تمو کوٗر دیُت لہٕ[2]، ذرا بانسرِ تُل!

ژ بالگ اَو سَتھا ژہ شوبھا چھ عظمتھ
ژ زٕگیتج حقیقتھ، ذرا بانسرِ تُل!

کُنش ہِش کُنش چھے ژہ اَتھ بالہ پانس
ژ مرکز[3] جہانس، ذرا بانسرِ تُل!

دِماہ سانہ بہتو! ہمہ تھوو از لوٗتھ[4] دِل
چھ فاضل ژہ سٲیل، ذرا بانسرِ تُل!

۱۔ شہ: پھوکھ ۲۔ لہٕ: لہ: لاٗ: انکار ۳۔ مرکز: اَوٚہِوکھ ۴۔ لوٗتھ: لوتھ دُتھ

۳۳۔ قبیلوں کو غارت کریں جو نشتر ہوں و رن ان کے ٹاپوں سے زیر و زبر

गटन मंज हुरथर गव यितो गाशरो व'ल्य,
अ'छन मेलतो म'ल्य, ज़रा बांसुरी तुल।

यिमन गूपियन मंज़ चे' मोरलो दितुथ शह,
तिमव को'र दुयो लह[1], ज़रा बांसुरी तुल।

च' बालक अवस्था, चे' शोबा छय अज़मथ[2]
च' जगत'च हकीकत, ज़रा बांसुरी तुल।

क'शिश हिश क'शिश छय चे' अथ वाल पानस,
च' मरकज़ जहानस, ज़रा बाँसुरी तुल।

दमाह सानि बे'हतो, मे' थोवमय लिविथ दिल,
छु 'फ़ाज़िल' चे' मायिल, ज़रा बाँसुरी तुल॥

नोट :— 1. इनकार 2. बजर

مٙنزِی پاٹھ



آکہِ - نابَد - ژٙیرٙ - بادٙم چھیلیو
لولہِ بٙرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو
دٙرشُنٕک وٲنٛسَن مبہ رُودٙم آرزو
لولہِ بٙرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو

ہٙی تہٕ یمبٙرزٙل تہٕ جافٙرٕ تٙے گُلاب
یاسمٙن، پمپوش، وٙرِ کِیٛمی، آفتاب
یِم دِیَن کٔرِ یادِ تِم گُل لاگیوٕ
لولہِ بٙرتیو کرٛشنہٕ لالو اَز ولو

گُل آفتاب

دُوسرا ادھیائے

بسن بے نے کہا

جو ارجن کا دیکھا یہ رنج و ملال ہا غم و سوز دل میں طبیعت نڈھال



माल, नाबद, चेर, बादाम, छिकयो
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो।
दर्शनुक वांसन में रूदुम आरिज़ो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो॥

ही तु यम्बरज़ल तु जाफ़ुर्य तय गुलाब,
योसमन, पम्पोश, विरिकेंम्य आफ़ताब,
यिम दयन कंर्य पोंदु गुल तिम लागयो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो॥

अथ द्वितीयोऽध्यायः

संजय उवाच

तं तथा कृपयाविष्टमश्रुपूर्णाकुलेक्षणम् ।
विषीदन्तमिदं वाक्यमुवाच मधुसूदनः ॥ १ ॥
कुतस्त्वा कश्मलमिदं विषमे समुपस्थितम्
अनार्यजुष्टमस्वर्ग्यमकीर्तिकरमर्जुन ॥ २ ॥
क्लैब्यं मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वय्युपपद्यते ।
क्षुद्रं हृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोत्तिष्ठ परंतप ॥ ३ ॥

مِیانہٕ وٲرِن سینہٕ کِنہِ پَنجرَن اَندرَ
اَکھ دِلَچ کوٹھُر چھہ چھِٹھُر زَن کھنڈرَ
چانہِ بابتھ چھُم رِلوتھ ٹھوٗمُر ہیہ دو
لولہٕ بُرتیو کُرشنہٕ لالو اَزِ ولو

—.—

ہِرِیہ ہوکھ تُندرِم ڈیکس تارکھ جُبرِتھ
ہَرنہٕ چشمن زِن ژیہ چھُے امریت بُرِتھ
دِل چھُپُم گاہے ژہیہتم روبرو
لولہٕ بُرتیو کُرشنہٕ لالو اَزِ ولو

—.—

چانہِ وِیرِے گوکُلکی منزِل ژھنڈُم
وُنی دِرِم جمناید پھٹھ پے تھوم
دَراصل چھُم بَس ہنہٕ چُھنے جُستجو
لولہٕ بُرتیو کُرشنہٕ لالو اَزِ ولو

—.—

الرحمن کا جواب

۴۔ وہ بولا کہ اے فاتح دشمناں مدھو بار! مجھ سے یہ ہو گا کہاں۔

॥ ५ ॥

म्यानि वारान सीनुक्यन पंजरन अन्दर,
अख दिलुच कूठरछि फुटमुच जन खण्ड़र।
चानि बापथ छम लिविथ थवमच मे-दो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो॥



सिरियि मुख चन्दरम ड्यकस तारख जरिथ,
हरणु चशमन ज़न च़े छुय अमृथ बरिथ।
दिल फोल्यम गाहे चु बिहतम रोबरो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज़ वुलो॥



चानि बेरे गूकलक्य मंज़िल छ्रड़िम
वन्य दितिम जमनायि बठ्य[1] पय[2] थविम
दर असल छुम बस मि च्योनुय जुस्तजो,
लोलु बर्यत्यो कृष्णु लालो अज वुलो॥

नोट— १ आबे हयात २ तलाश

कथं भीष्ममहं संख्ये द्रोणं च मधुसूदन।



سالہ ہیتو!

کرشنہ گوپالہ! دماہ سالہ ہیتو
سریہ میشالہ دماہ سالہ ہیتو

میانہ امارہ! چھ مشکل بے رخی
ووفی کووو ژالہ دماہ سالہ ہیتو

انتظارچ، بے قرارچ پرالبس
رہ کمس کھالہ دماہ سالہ ہیتو

بانسرِ تل! زن وسن ہیتھ سلسبیل
اسی بہ وپیالہ دماہ سالہ ہیتو

فاضلن تھوومن سجاوتھ بس ژبہ کیت
از سلی کالہ دماہ سالہ ہیتو

طبیعت ہے کمزور دل نرم ہے۔ یہ الجھن ہے اب کیا مرا دھرم ہے۔

साल यितो

कृष्ण' गूपाल'! दमा साल यितो,
सिर्य मीसाल दमाह साल यितो।

म्यानि अमार! छे मुशकिल बेरुखी,
वोन्य कवो चाल,दमाह साल यितो।

इन्तिज़ारी, बेकरारी प्रालबस,
राह कंमिस खाल',दमाह साल यितो।

बांसुरी तुल ज़न वसन हथ सलसंबील,
मस्य बरव प्याल,दमाह साल यितो।

"फ़ाजिलन" थौव मन सजांविथ बस चे क्युत
अज़ सुली काल,दमाह साल यितो।

नोट: 1. नसाब, तकदीर, 2. बर्गुक सर

संजय उवाच
एवमुक्त्वा हृषीकेशं गुडाकेशः परंतप।
न योत्स्य इति गोविन्दमुक्त्वा तूष्णीं बभूव ह॥

कार्पण्यदोषोपहतस्वभावः
पृच्छामि त्वां धर्मसंमूढचेताः।
यच्छ्रेयः स्यान्निश्चितं ब्रूहि तन्मे
शिष्यस्तेऽहं शाधि मां त्वां प्रपन्नम्॥७॥
न हि प्रपश्यामि ममापनुद्याद्
यच्छोकमुच्छोषणमिन्द्रियाणाम्।
अवाप्य भूमावसपत्नमृद्धं
राज्यं सुराणामपि चाधिपत्यम्॥८॥



ہبہ کُن وچھ

رادھایہ بُری پیالہٕ ژٕ گوپالہٕ ہبہ کن وچھ!

ازکالہٕ یٕزٕہم سالہٕ دٕماہ لالہٕ ہبہ کُن وچھ!

مورلی دِ کینۓ ٔشہٕ تہ گلَن پھیرِ پنٕنٕ رنگ[1]

بُلبُل ژٕ کرٕن یوٚسمَن مالہٕ ہبہ کُن وچھ!

تَن نَھنی تہ بُتھِس جلوٕ، اُچھن سیٚنْزٕ ڈبکس گٕہ[2]

زَن سِریہٕ ژٕ موصُومہ کُرٕتھ ہالہٕ[3] ہبہ کُن وچھ!

۱۔ پھوکھ

۲۔ گاش

۳۔ دائیرٕ۔ حلقہٕ

ادھر دو فوج تھی اور ادھر فوج تھی دل ارجن کا اور علم کی اک موج تھی۔



मे कुन वुछ

राधायि बॅरी प्यालु' चे गूपालु' मे कुन वुछ
अज़ कालु यिज़्यम सालु' दमाह लालु' मे कुन वुछ

मोरली दि कुनुय शह तु गुलन फ़ेरि पनुन रंग
बुलबुल चे करन यासमनन मालु' मे कुन वुछ

तन थॅन्य तु बुथिस जलवु', अॅछन सेहर, ज़ुल्फ़स गाह
ज़न सिरियि चे मोसूमु कॅरिथ हालु' मे कुन वुछ।

नोट : 1. गाश 2. थालव-थालव (थाल सूत्य)

श्रीभगवानुवाच
गतासूनगतासूंश्च नानुशोचन्ति पण्डिताः ।।
सेनयोरुभयोर्मध्ये विषीदन्तमिदं वचः ।।१०।। अशोच्यानन्वशोचस्त्वं प्रज्ञावादांश्च भाषसे ।
तमुवाच हृषीकेशः प्रहसन्निव भारत ।
न त्वेवाहं जातु नासं न त्वं नेमे जनाधिपाः । न चैव न भविष्यामः सर्वे वयमतः परम् ।१२।

گوکُل بُہٕ نمتھ شامہٕ گٹن ژھایہ وندے زو

بادم تہٕ خفر، آلہٕ چھکے ہتھالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

ازچانہٕ کلے ٹھانہٕ وڑھے ہلمہٕ بُرتھ چھسم

داہہٕ ژٕ اگر چھکھ تہٕ بہٕ سنبھالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

دلہ وازٕ تھاوے وُتھی تہٕ ژٕ بہٕ پیرتھ جایہ کرے زوٗل [1]

لوٗ خونہٕ جگر ہالہٕ شمع زالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

یوٗ دلاگہ بُکری دوٗر [2] تہٕ سیمے گیلہ ہبہ وچھی وچھی

کنہہ وایہ کرن چھمنہٕ رٹتھ نالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

چھے وکنہٕ گنڈتھ دٕری تہٕ ژٕ بہٕ گوپی چھہ غزلخوان

نہٕ نہٕ ہرنہٕ کھیلس منزنہٕ دٕرتھ ژھالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

کمہ بایہ چھہ فاضل ژٕ ہری کرشنہٕ نظر تل

آسن تہٕ آسن بہٕ ژٕ ہبہ پتھ گالہٕ ہبہ کُن وُچھ!

۱۔ زوٗل = چراغاں   ۲۔ بکری دوٗر = گستاخ۔

गोकुल बं निमथ श्याम गटन छाथि वंदय ज़ुव
बादम तॖ ख'ज़ुर ग्रोंलॖ' छकय थालॖ[2] में कुन वुछ

ग्रज़ चानि कले ठामॖ वछ़य मलरि बरिथ छम
दामाह चॖ ग्रगर चस तॖ बं सम्बालॖ मे कुन वुछ

दरवाज़ॖ थवय व'थ्य तॖ' चे हर जायि करय ज़ूल
बो खूनि जिगर हारॖ' शमह ज़ालॖ में' कुन वुछ

योद लांगि बुकुर्य दोर तॖ समय गेलि में वुछ-वुछ
कांह वायि करुन छुमनॖ रटथ नालॖ में कुन वुछ

छय विगनि गंडिथ देयं तॖ चे गूपी छि गज़ल खां
ज़ांह हरनॖ खेलिस मंज़ नॖ विचथ छालॖ में कुन वुछ

कम मायि छु "फ़ाज़िल" तॖ श्री कृष्णॖ' नज़र तुल
ग्रासुन तॖ न ग्रासुन बं चे पथ गालॖ', में कुन वुछ

देहिनोऽस्मिन्यथा देहे कौमारं यौवनं जरा ।
तथा देहान्तरप्राप्तिर्धीरस्तत्र न मुह्यति ।१३। मात्रास्पर्शास्तु कौन्तेय शीतोष्णसुखदुःखदाः ।
आगमापायिनोऽनित्यास्तांस्तितिक्षस्व भारत ।।
यं हि न व्यथयन्त्येते पुरुषं पुरुषर्षभ । समदुःखसुखं धीरं सोऽमृतत्वाय कल्पते ।।१५।।

گُلالہ!

گلالا! ذرا بل! گُپالنی دِرے چھے
جِگر چھل، جگر چھل! گُپالنی دِرے چھے!

ژ بہ چھے داغ سینس، ہبہ دُکھ چھُم دِلس چھُم
یہ مُشکل ژِ کر حل! گُپالنی دِرے چھے!

وو زرج نار بُہیہ ہش ژِ لائتھ قبا چھکھ
شہج ژا دِرہ وَل! گُپالنی دِرے چھے!

ژ بُہیہ مسولن منز، ژِ پادا سمت کر
گُنہر اُلفتح کل! گُپالنی دِرے چھے!

گُپالا! یمن سینہ دُدی آخ رو دِکھ
تُلُکھ مَل تُلکھ مَل! گُپالنی دِرے چھے!

तथापि त्वं महाबाहो नैवं शोचितुमर्हसि ।२६।

गुलाला !

गुलाला ! ज़रा वल, गुपालुन्य द्रुय छय
जिगर छल, जिगर छल, गुपालुन्य द्रुय छय ।

चे़ छुय दाग़ सीनस म्य दुख छुप, दिलस छुम
यि मुशकिल चु कर हल, गुपालुन्य द्रुय छय ।

वोज़ुज नारु ब्रेह हिश चु लोगिथ कवा छुख,
शिहिज चादराह वल, गुपालुन्य द्रुय छय ।

चु बेंह मसवलन मंज़, चु हासिल समुत कर
गंन्यर उल्फतुच कल, गुपालुन्य द्रुय छय ।

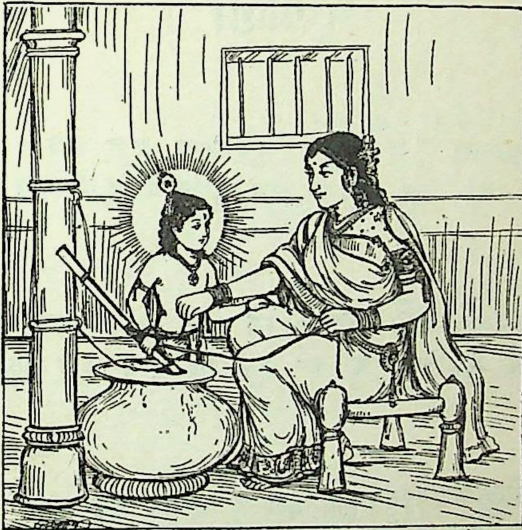
गुपाला ! यिमन सोनु दंद्य आख रूदिख,
तुलुख मल, तुलुख मल, गुपालुन्य द्रुय छय ।



जातस्य हि ध्रुवो मृत्युर्ध्रुवं जन्म मृतस्य च । तस्मादपरिहार्येऽर्थे न त्वं शोचितुमर्हसि ।२७।

अव्यक्तोऽयमचिन्त्योऽयमविकार्योऽयमुच्यते । तस्मादेवं विदित्वैनं नानुशोचितुमर्हसि ।२५।

अथ चैनं नित्यजातं नित्यं वा मन्यसे मृतम् ।



تھٔنی ژٔر دٔر ہیٚمیس گوٗر کھیٚییتھ کرٛشنہٕ گُپالا

تَس کھُٔرنہٕ ڈیکَس دِٕرہٕ تہٕ دِلَس گوٚنہٕ مَلالا

ماتایہٕ ژٕر بہٕ ہوٚصوٗہٕ وونے لفظ" مکھن چوٗر"

اُچھ ییتھنہٕ لگِی بالِکا! چھُکھ حُسنِ کمالا

نوٗٹ:-

۱۔ تھٔنی = مکھن ۲۔ گوٗر = گوٗری بای ۳۔ دِٕرہٕ کھینٛنی = ملالہٕ گرٛژھن ۴ چوٗر = ژور

۵۔ اچھ لگنی = جسم بد لگنی۔ ۶۔ حُسنِ کمال = Beauty Incarnate

۹۹۔ بن اب عقل کے یوگ کا حال سن۔ بہت ایست ہیں جس سے کرموں کے گن

اَنْدَس پیٹھ تِمے لُکھ مہٕ واَصِل گڑھان

یِمَن ہُنٛز عِبادَت ـ خلوصُک نِشان

نَہ تھاوَن طمع، دِے، نَہ زُکھ، مَن ہمی

بہٕ تھاوے سو کھسَس مَنٛز تہِنٛد جسم و جان

کرشن (گیتا ۲۲/۹)

अंदस प्यठ तिमय लुख मे वासिल गछ़ान,
यिमन हुंज़ इबादत- खलूसुक निशान ।
न थावन तमाह, द्युय, न च़रव, मनहमी ;
बे थावय सोरवस मंज़ तिहुंद जिस्मुजान ॥

थन्य चूरि यमिस गोरि स्ययथ कृष्ण गोपाला,
तम खंच न ड्यकस द्रूह त दिलस गत्र न मलाला।
मातायि चे मोसूम वेनुय लफ़्ज़ि "मखन चोर",
ग्रंछ युथ न लगी बालुका! छुस हुसनि कमाला।

दूरेण ह्यवरं कर्म बुद्धियोगाद्धनंजय । बुद्धौ शरणमन्विच्छ कृपणाः फलहेतवः ॥४९॥ बुद्धियुक्तो जहातीह उभे सुकृतदुष्कृते ।

कर्मजं बुद्धियुक्ता हि फलं त्यक्त्वा मनीषिणः । जन्मबन्धविनिर्मुक्ताः पदं गच्छन्त्यनामयम् ।



تھنہٕ ژور

گبوٚ، دوٚد تہٕ گرُس کیاز ژہ اندیشہٕ کٔرتھ چھوٚتھ
بھگوانہٕ! یہنٛد باگہ بوٚرت شیہجار لکن ووت
زوٚ منگتہٕ، جگر منگتہٕ ژہٕ رُح منگتہٕ دل وجان
ہوٚصوٚہہٕ لگے کیازِ اسی ژورِ مکھن کھیوتھ!

۱۔ اندیشہٕ کرتھ = کھوژی کھوژی ۲۔ رُح = آتما ۳۔ مکھن = تھنہٕ

۲۸۔ نگاہوں سے پہلے نہاں ہوں وجود یہ پھر بیچ میں کچھ عیاں ہوں وجود۔

پرکھ یوٗد کرشنہ لیلا گیان لاری

اہنکارک یوٗہے سیماب ماری

یہ حاصل گوٗی تہ سپدکھ کیمیاگر

یوٗہے گوٗن ساگرن منز تار تاری

परख योद कृष्ण लीला ज्ञान लारी ;
अहंकारुक योहय सीमाब मारी ।
यि हासिल गोय त सपदख कीमयागर ;
योहय गोण सागरन मंज़ तार तारी ॥



ग्यव, दुद, त गुरुस क्याज़ि चें अंदेश करिथ चोथ,
भगवान ! युहुंद बागि ओरुत शेंहजार लुकन वोत।
जुव मंगत, जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मोसूम ! लगय क्याज़ि असों चूरि मक्खन स्योथ॥

کَرٲن پوٗزا کرشن جی دوستانَس
ہِشر تَس نِش — ہِشر یارَس تہٕ یارَس

سُداما اَکھ فقیراہ تہٕ کرشن شاہ
مگر وُچھتو یِمن دوٚن منٛز فرق چھا

وفادٲری، دیانت، نیک سیرت
تمامن بآگراون پوٗز محبت

خلوٗصُک شرٛیہہ تہٕ جذبٕچ جاذبیت
کرشن جی چھُے کرٲن داسن عنایت

اَکِتھ کُن نَے۔ مہابھارت بییٚتھ کُن!
اَکِتھ کُن تھٔنی، قتل، غارت بییٚتھ کُن!

چھُ دوشوٗنی منٛز دِوان مُکتی سُہ لوٗکن
یِتھے بخشان سَت آگاہی چھُ بھگوٚن

بجر گوٗیی تہٕ عرفانُک تھزر یی
تھوٲن قایم یِتھی گوٗن چھُے کرشن جی

करान पूज़ा कृष्ण जी दोस्तानस ,
हिशर तस निश—हिशर यारस तु यारस ।

सुदामा अख फ़कीराह तय कृष्ण शाह ,
मगर वुछतव यिमन दोन मंज़ फ़रक छा ।

वफ़ादारी, दियानत, नेक सीरत ,
तमामन बोगरावान पोज़ मुहब्बत ।

खुलूसुक श्रेह तु जज़बुच जाज़िबियत,
कृष्ण जी छुय करान दासन अनायत ।

अकिथ कुन 'नय'—महाभारत बियिथ कुन,
अकिथ कुन 'थ्नय'—कतल, गारत, बियथकुन ।

छु दोरवुन्य मंज़ दिवान ओदार लूकन ,
यिथय बखशान सत आगाही छु भगवन ।

बजर गव ई तु ईर्फ़ानुक थज़र ई ।
थवान काइम यिथी गुण छुय कृष्ण जी ।



भगवान्‌ने स्वयं पूजनकी सामग्री लाकर सुदामाजीकी पूजा की ।



کرشن سداما

کرشن مہراج اکھ بالک اوستھا
میترٕ اوس بالہٕ پانٛک تَس سُداما

یمن اوس شُرِ لہٕ منٛز یارانہٕ یارٕز
کران تتھ پیٹھ رشک آس یانہٕ یارٕز

سُداما عمرِ منٛز برونٛہہ کُن پکان گئے
کرشنِ اوتار، تس پیٹھ ایشوٕر دئے

سُداما اکھ گرہستی سادھ بلکل
کرشنِ اوتار: مہراج ہاکِ کُل

کرشنِ اوتار گو مشہورِ عالم!
یوان آسی درشنس تَس سادھ کم کم!

کرشن سداما قصہٕ چھُ پزِ دوستی تہٕ یاداوری ہند اکھ تاریخی تہٕ یوشون اتہٕ ہیٹ۔

सुदामा

कृष्ण महाराज अख बालक अवस्था
मित्र ओस बालु पानुक तस सुदामा ।

यिमन ओस शुर्यलि मंज़ यारान् ,यारज़ ,
करान तथ प्यठ रशक ओस पानु यारज़ ।।

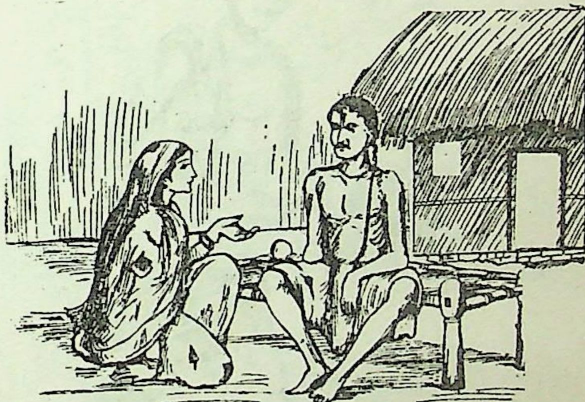
सुदामा वुमरि मंज़ ओंह कुन पकान गंय
कृष्ण अवतार तस प्यठ ईश्वर दंय ।

सुदामा अख ग्रहस्ती साद बिलकुल,
कृष्ण अवतार महाराज मौलिके कुल ।

कृष्ण अवतार गव मशहूरि आलम,
यिवान ओस्य दर्शनस तस साद कमकम ।

अथ चेत्त्वमिमं धर्म्यं संग्रामं न करिष्यसि । ततः स्वधर्मं कीर्तिं च हित्वा पापमवाप्स्यसि ॥
स्वधर्ममपि चावेक्ष्य न विकम्पितुमर्हसि । धर्म्याद्धि युद्धाच्छ्रेयोऽन्यत्क्षत्रियस्य न विद्यते ॥
यदृच्छया चोपपन्नं स्वर्गद्वारमपावृतम् । सुखिनः क्षत्रियाः पार्थ लभन्ते युद्धमीदृशम् ॥

سُداما وٚتھ مُلاقات گوٚڑھ ہیٚہ سپدُن!
نصیبس لیکھتہٕ میانس کرِشنہٕ درشُن!



تیاری کٔرِ سُدآمن زیٖٹھ سفرچ ۔ ژُلن سیٖتی تحفہٕ پھُٹجہ بیلی تو میلچ
پکان گو تھکھ کڈان گو برونٛہہ پکان گو ۔ کڈان وَتھ اُلفیٖتہٕ زٕنٛہہ ماتھکان گو
کرِشنن وُچھنک تمنّا تس دِلس پیٹھ
تہٕ اُتھی شوقس اندر ووت مٔنزلس پیٹھ
اچانک کرِشنہٕ لالس گوٚیہ گوشن ۔ سُداما از یٖیم من چھُم ہیٚہ توشن
سُداما آو دربارس اندر ژاو ۔ کرِشن مہراج یور ےانِنہٕ تس دِراو

رلو اُنیتھ چھ زِ سُدآمس اوس تحفہ پھُٹجہ منز سر، یتھ تتہٕ چہ علاقائی زبانی منز تندٔل ونان چھ۔

تجھے لوگ دیکھیں گے تحقیر سے ۔ نہ لیں گے ترا نام توقیر سے

॥ हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

सुदामा वोथ मुलाकात गोंछ् में सपदुन!
नसीबस लेखतु म्योनिस कृष्णु दशुन।

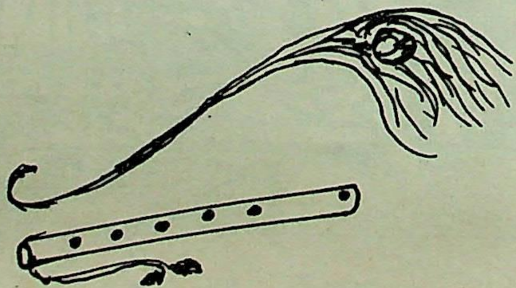
तय्यारी कर सुदामन ज़ेठि सफरुच,
तुलुन सूत्य तोफु फुटजा "बेल्य तोमलुच"।

पकान गव, थक कडान, गव ब्रोंह पकान गव,
कडान वथ उलफतच जांह मा थकान गव।

कृष्ण वुछनुक तमन्ना तस दिलस प्यठ।
तु अथ्य शीकस अन्दर वोत मंजिलस प्यठ

अचानक कृष्ण लालस गव यि गोशन
सुदामा अज़ यियम मन छुम में तोशन॥

सुदामा आव दरबारस अन्दर चाव,
कृष्ण महाराज योरय अननि तस द्राव।



संभावितस्य चाकीर्तिर्मरणादतिरिच्यते ॥३४॥ भयाद्रणादुपरतं मंस्यन्ते त्वां महारथाः ।

अकीर्तिं चापि भूतानि कथयिष्यन्ति तेऽव्ययाम्

अवाच्यवादांश्च बहून्वदिष्यन्ति तवाहिताः । निन्दन्तस्तव सामर्थ्यं ततो दुःखतरं नु किम् ॥

اوُنَ با شان و شوکت، پُور حشمت - یہ چھُسنا بالہٕ پاُنک شرٛہیہ تہٕ الفت

سُداما کھور کرُشنن پانہٕ تختس

کراں سآری رشک تس نیک بختس

بیہآری تختس بہِتھ اوتار وقتُک - بیہآری کنہٕ چھُس سُداما یار وقتُک
اکِس سیتی اکھ بہتھ لول بآگراوان - یہ ڈیشتھ چھی وزیرن ہوش راوان

سُدامن بیہآلی تو ہیچ ڈآلی کڈ نئی
کرن پیش کرشنہٕ لالس یس فھنی تھنی



کرشنِ لالس موٗڑھ کیتھ ساد ہو آو - کھبوان گو تہہ کران آسس نہٕ ٹھراو

۳۷- مرے گا تو پائے گا جنت میں گھر - اگر جیت جائے تو دنیا ہو سر

ततो युद्धाय युज्यस्व नैवं पापमवाप्स्यसि ॥३८॥

अोनुन बा शान् शोकत पूरि हशमत।
यि छुसदा बालु पानुक स्नेह त उलफ़त।

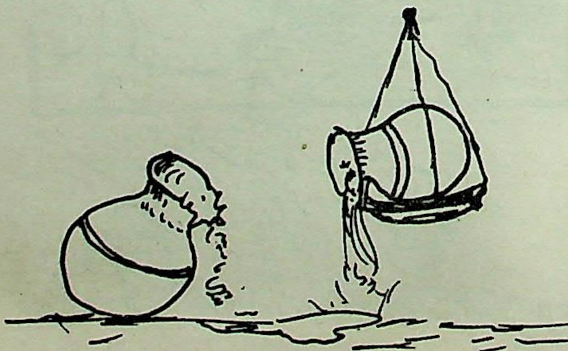
सुदामा खोर कृष्णन पान् तख़्तस,
करान सारी रशक तस नेक बखतस।

यपार्य तख़्तस बिहिथ अवतार बक्तुक
हुपार्य किन्य छुस सुदामा यार वक्तुक।

अकिस सूत्य अख बिहिथ लोल वागरावान
यि डीशिथ छी वज़ीरन होश रावान।

सुदामन ब्योल्य तोमलुच डालय केड नेन्य
करन् पेश कृष्णु लालस युस थंनी थन्य।

कृष्ण लालस मोठा ख्यत स्वाद ह्युव आव
ख्यवान गव, माह करान आसस न् ठहराव।



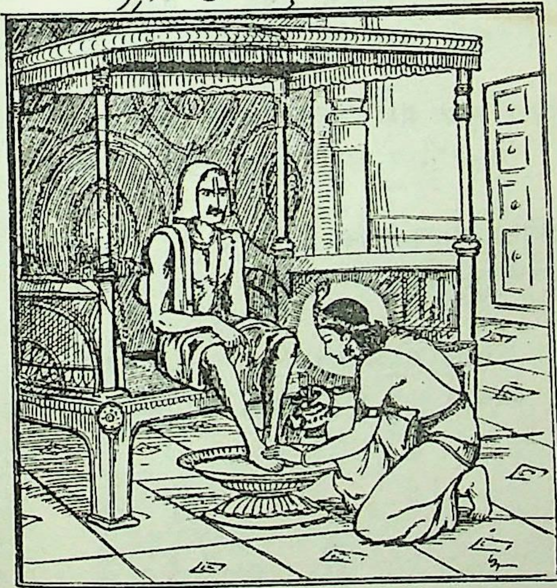
हतो वा प्राप्स्यसि स्वर्गं जित्वा वा भोक्ष्यसे महीम्

एषा तेऽभिहिता सांख्ये बुद्धिर्योगे त्विमां शृणु। बुद्ध्या युक्तो यया पार्थ कर्मबन्धं प्रहास्यसि ॥

सुखदुःखे समे कृत्वा लाभालाभौ जयाजयौ। तस्मादुत्तिष्ठ कौन्तेय युद्धाय कृतनिश्चयः ॥३७॥

کرشن لالن پرزٔھس سور حال احوال ۔ زمین جاین زراعت روپیہ تہٕ مال
سُداما وننہٕ لوگ "بس ڈولہٕ ہن چھم ۔ چھ اُتھی منزٕ ستھ گذارن ساتہ کیوم

سوخن زیٹھان کے دفتر برتھ آئے
اَتیتھ پَتھکُن نہٕ روزان رازٕ سر سائے



سُداما کرشنہٕ لالس سیتی ہمدم
سُداما تس نہٕ گر بارک کہنے غم

سٕمے کافی گرٕھاں اَتھ کاروبارس ۔ ہوان روخستھ چھُ آخر یاریارس

بنہ کوشش ہو اس ییٚن کوٗی رایگاں ہو رستے ییٚن اس کے رکاوٹ کہاں

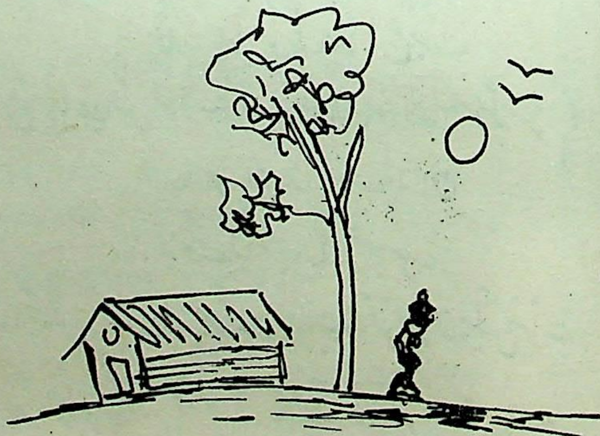
कृष्ण लालन प्रुछुस सोर हाल अहवाल,
जमीन, जायुन, जिरात, रोपयि तय माल ।

सुदामा वननि लॊग "बसडोकुहन छम,
छि अथ्य मंज़ स" गुज़ारान साथ तय दम" ।

सोखन जे.ठान गंय दफ़तर बॆरिथ आय
अत्यथ पथ कुन नु रोज़ान राज सिरसाय ।

सुदामा कृष्णु लालस सूत्य हम दम
सुदामा तस नु गरबारुक कुँहुंय गम ।

समय काफ़ी गछान अथ कारुबारस,
ह्यवान रोखसथ छु आ'खु'र यार यारस ।



यामिमां पुष्पितां वाचं प्रवदन्त्यविपश्चितः । वेदवादरताः पार्थ नान्यदस्तीति वादिनः ॥४२॥

नेहाभिक्रमनाशोऽस्ति प्रत्यवायो न विद्यते ।

स्वल्पमप्यस्य धर्मस्य त्रायते महतो भयात् ॥ व्यवसायात्मिका बुद्धिरेकेह कुरुनन्दन ।

बहुशाखा ह्यनन्ताश्च बुद्धयोऽव्यवसायिनाम् ॥

کرٲں لۆ خصتہٕ کرشن جی تَس فقیرَس ۔ سُدامس ظون زِ شُری آسَن مےٚ بیکَس

پھِرِن کوتہٕ سُدآما کرشنہٕ لاٚگُن ۔ سوآری بیٚیٹھ کھسِتھ دراو اَز گرَس کُن

دزاں برونہہ برونہہ چھہ سورنے دف تہٕ ڈُم ڈُم

وناں ساٗری ساٗری سُدامارا جہ ہو چھُم

ولِتھ زر بفتہٕ سونہری تاج برسر ۔ سُداما اَز شہن ہُندِ شہ برابر

گرَس کیٚتھ ووت گامس منز سُداما

خبر کیاہ چھس زِ گامس منز سپُد کیا

وُچھن گامکی کرٲں تَس پوشہ پیٚرِ ژِ گیٚتھ ۔ اُمس تعظیمہٕ سان ناوان گرٚچ وتھ

ہنہ برونہہ کُن یکیتھ ڈیشن عمارت

عمارت چھا! سورگ[2] چھا باغ جنّت

خبرلیچ وُلی عیالس تمہ ژٔستھ[1] آیی ۔ دوان زن حور غلمان سوٚرگہ منزی دزی

سداہاں یا نہ جاگرن خواب ڈیشان

یہ سورے کیاہ وچھان چھس چھیسہ زبان

بہ ما چھس لۆوِمت ہا بیگانہ گُمت ۔ بیتیتھ ڈوکس چھُہ از پیلس[3] بنیومت

۱۔ ژٔستھ ۔ ہجوہہ کرتھ ۔ ۲۔ سورگ ۔ جنّت ۳۔ پیلس ۔ شاہی محل ۔

करान रोरुमथ कृष्ण जी तस फ़कीरस
सुदामस ज़ोन जि शुर्य आसन में बेकस।

फ़िरान कोताह सुदामा कृष्ण लालुन
सवारी प्यठ खसिथ द्राव अज़ गरस कुन।

वज़ान ओंह ओंह छे सुरनय दफ़ त डुम डुम,
वनान सारी सुदामा राजि ह्युव छुम।

वलिथ ज़रबफ त' सोनहर्य ताज बर सर,
सुदामा अज़ शहन हुन्द शाह बराबर।

गुरिस स्यथ वोत गामस मंज़ सुदामा,
खबर क्याह छस जि गामस मंज सपुद क्याह

वुछिन गामुक्य करान तस पोंपरिन्य गथ,
अमिस ताज़ीमु सान हावान वरुच वथ।

हना ओंह कुन पकिथ डीशन अमारथ
इमारथ छा! स्वर्ग छा! बागि जनथ!

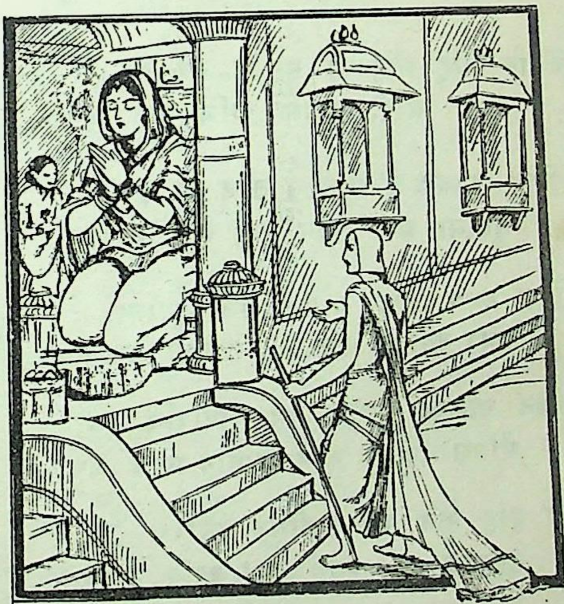
खबर लेज वल्य अयालस तिम चसिथ आय,
दवान जन हूर गिलमान स्वर्गु मंज़ द्राय।

सुदामा पानु हारान खाब डेशान,
यि सोरुय क्याह वुछान छुस कैंह [कुस] नु जानान।

ब' मा छुस रोवमुत बेगानु गोमुत,
येत्यथ डोकस छु अज़ पैलस बन्योमुत।

कामात्मानः स्वर्गपरा जन्मकर्मफलप्रदाम्।
क्रियाविशेषबहुलां भोगैश्वर्यगतिं प्रति ॥४३॥
भोगैश्वर्यप्रसक्तानां तयापहृतचेतसाम्।
त्रैगुण्यविषया वेदा निस्त्रैगुण्यो भवार्जुन। निर्द्वन्द्वो नित्यसत्त्वस्थो निर्योगक्षेम आत्मवान्॥

وچھن آشینٛ بہتھ منٛز محلہ خانس
کران پوزا، برٛان لول کرشنہ لالس



سُدآما چھُس دپان آخرٕ یہ کُمی کوٚر؟ - یہ کُمی پرُشن ہیہ پزٕ ژھنےٚ لول یتھ بوٚڈ؟
وٕرٕھس آشینٛہ "امی کرشنن پورٕ کوٚل۔ وندلس شری باژٕ ہالین ہول تے ہوج
عمارت، باغ، سندرٕ فرشٕ مخمل۔ تمی کرےٚ ژھ عنایت لوٚت جل جل
کرشن یس بلیجھ کران چھےٚ مہربانی۔ یہنٛان سوٚن ہیرٕ لوٚن انسانٕ فانی

वृछिन आशन्य बिहिथ मंज़ महलु खानस,
करान पूजा ब्रान लोल कृष्ण लालस।

सुदामा छुस द्यान आखुर यि कम्य कोर?
यि कम्य पुरछान में प्रछनय लोल युथ बोर।

वुछुस आशन्य "अमो कृष्णन बोरुम लोल,"
बन्दस शुर्य बाच़ माल्युन मोज तय मोल।

परमारथ, बाग, मन्दर फर्शि मखमल,
तमी कर यिछ अनायथ यून जलजल।

कृष्ण यस प्यठ करान छुय मिहरबानी,
बनान सुन हेरि बुन इन्सानि फ़ानी।

اَکھ سُدامَا چھا یُتھِمِس پیٹھ کَرِ دیا موٗلی دَرَن
اَکھ دِلہ چھا یتھنہٕ بسکیں دَرِ تھِندِ کنول چَرَن
یوٗدۍ یژھِکھ پانَس اَندرِ تھاوُن کرشن پراوُن کرشن
شرطِ اوّل اتھ مقامَس چھے بنِنیٖ رٕفن چ لگن

अख सुदामा छा योमिस प्यठ कर दया मोरली दरन
अख दिला छा यथ नु बसकीन दर तहंद्य कंवल चरन
योद यछ़ख पानस अन्दर थावुन कृष्ण, प्रावुन कृष्ण
शर्ते अवल अथ मकामस छुय मनुच, रुहॆचलगन।

यावानर्थ उदपाने सर्वतः संप्लुतोदके।
तावान्सर्वेषु वेदेषु ब्राह्मणस्य विजानतः ॥४६॥
कर्मण्येवाधिकारस्ते मा फलेषु कदाचन।
मा कर्मफलहेतुर्भूर्मा ते सङ्गोऽस्त्वकर्मणि ॥४७॥
योगस्थः कुरु कर्माणि सङ्गं त्यक्त्वा धनंजय।
सिद्ध्यसिद्ध्योः समो भूत्वा समत्वं योग उच्य[ते]



کرشن گو دون سمت گژھنک سمندر

اوتھ واتھ بنان پرتھ قطر ساگر

غریبن، مُفلسن ہُند مال گوپال
یمن کوچھ ڈھر تمن ہُند لال گوپال
یمن زنمس اندر پیترن پیوان یچھ
تمن پُرشن سیٹھا رُت فال گوپال

ग़रीबन, मुफ़लिसन हुंद माल गूपाल ,
यिमन कोछ ढ़र तिमन हुंद लाल गूपाल ,
यिमन ज़नमस अन्दर प्यतरन प्यवान यछ,
तिमन पुरुषण स्यठा रुत फ़ाल गूपाल ॥



कृष्ण गव दुन समुत गछ़नुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान हर कतर सागर।



گُلن ہند سُمت پھانپھلاوان کرٛشن جی

عجب گُلستانہ بناوان کرٛشن جی

یمن آسہ پرٛیچھ تہ پرٛزِنِچ دلس چھ

تمن امرِتکی پیالہ چاوان کرٛشن جی

کرٛستانی، پارسی تہ ہندی، سکھ مُسلمان

نظر کُنی یمن پیٹھ چھ تراوان کرٛشن جی

دوہ دس ہاشیکرس منز تفاوت یشارہ

ہشر آدنک چھے زلاوان کرٛشن جی

۵۲- جو ہو عقل آزاد جنجال سے نکل جائے تو وہ کے جال سے

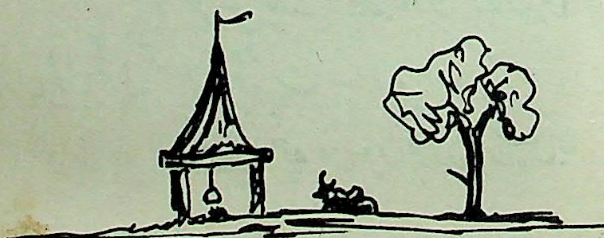
कृष्ण जी

गुलन हुंद समुत फांफुलावान कृष्ण जी
अजब गुलिस्ताना बनावान कृष्ण जी ।

यिमन आसि प्रेयमुच त पज़रुच दिलस छिह
तिमन अमरितुक्य प्यालु चावान कृष्ण जी ।

किरस्तान्य, पारस्य त हेंन्द्य सिख मुसल्मान
नज़र कुन्य यिमन प्यठ छु त्रावान कृष्ण जी ।

दोदस शेकरस मंज़ इशारा तफावत
हिशर आदनुक छुय रलावान कृष्ण जी ।



यदा ते मोहकलिलं बुद्धिर्व्यतितरिष्यति ।
तदा गन्तासि निर्वेदं श्रोतव्यस्य श्रुतस्य च ॥
श्रुतिविप्रतिपन्ना ते यदा स्थास्यति निश्चला ।
अर्जुन उवाच
...का भाषा समाधिस्थस्य केशव । स्थितधीः किं प्रभाषेत किमासीत व्रजेत किम् ॥

دُیٚ ہُند زہر، تفریح ژھیٹ الاٰیش

چھ مورلی بجاوِتھ مٹاوان کرٛشن جی



کتھن منٛز تھزر چھُس نہ مورلی اثر چھُس

رلِن یِم نہ زُنہہ تِم رلاوان کرٛشن جی

یہ متھرا یہ جمنا یہ گنگا یہ رادھا

سمے گو مگر تو تہ گاران کرٛشن جی

سِیہ ہرد والیو تِمس نِش شو زر لوب

کھوٚٹس کیمیا چھے بناوان کرٛشن جی

برٛان لول گوپی تِمس شوزِ شانے

تِمن منٛز چھ دوہ دِین گزاران کرٛشن جی

شری بھگوان کا ارشاد ۔ سہ مرکب دوہ ییمہ ستی کھوٚڈ دھاتسون چھ بنان

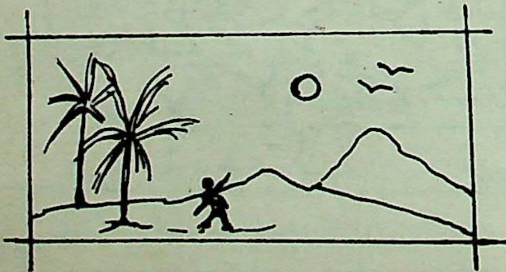
दुई हुंद ज़हर तफ़रुकुच छ़ेटे अलांयिश,
छु मुरली बजांविथ मिटावान कृष्ण जी।

कथन मंज़ असर छुस त मुरली असर छुस
रलन यिम न ज़ांह तिम रलावान कृष्ण जी।

यि मथरा, यि जमना, यि गंगा, यि राधा,
समय गव मगर तोति गारान कृष्ण जी।

सियाह हृदयि वाल्यव तमिस निश शोज़र लोंब
खोंटिस कीमिया छुय बनावान कृष्ण जी।

बरान लोल गूपी तमित श्रोचि शाने,
तिमन मंज़ छु दोह द्यन गुज़ारान कृष्ण जी।



श्रीभगवानुवाच

प्रजहाति यदा कामान्सर्वान्पार्थ मनोगतान् ।
आत्मन्येवात्मना तुष्टः स्थितप्रज्ञस्तदोच्यते ॥
दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः ।
वीतरागभयक्रोधः स्थितधीर्मुनिरुच्यते ॥५६॥
यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम् ।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ॥

یمٕس آسہ وَس زانٕچھ لولہٕ نارٕن ۔

بلاشکھ تٕمس پیزہٕ ناوان کرٕشن جیٚ

لچھس حب وچھس منٛز چھُ تس شولہٕ ناوان

بیاباں ذٕرس چھےٚ بناوان کرٕشن جیٚ

یموٚ پوٗنپرٕ ژٕ لگتھ کرٕس سرٕ پانس

تمٕن چھےٚ پٕنٕن جلوٕ ہاوان کرٕشن جیٚ



منٛز رأستی نظر یوٚزٕ آنہ ہاوان۔ کرٕشن جی سُدا سُدا کرٕشن جیٚ

۵۸۔ ذرا سا بھی دے کوئی کچھوے کو چھیڑ تو لیتا ہے فوراً سب اعضا سکیڑ

ہولی

از چھ سنسارکی پرش ہولی گندان
فطرتک انگ انگ رنگن منز رنگ بران
کرشنہ! یکھنا لکھ چھ آیتہ وولسنس
سارنی روحس اندر ہورلی گرزان

अज़ छि सन्सारकय पुरुष होली गिन्दान
फित्रतुक अंग अंग रंगन मंज़ रंग थरान
कृष्णु! यिखना लुख छि आमुत्य वोलसनस,
सारिनुय रूहस अन्दर मोरली ग्रज़ान

यमिस आसि वस ज़ाजिमच़ लोलु नारन
बिलाशक तेमिस परज़नावान कृष्ण जो।

लछ़स हुब, वछ़स मंज़ छु तस शोलुनावान,
बयाबान ज़रस छुय बनावान कृष्ण जी।

यिमव पोम्परिन्य गथ करिस सिरियि पानस,
तिमन छुय पनुन जलवु हावान कृष्ण जी।

मनुच रास्ती नज़रि पोज़ ओनुहावान
कृष्ण जो सुदामा, सुदामा कृष्ण जी।

इन्द्रियाणीन्द्रियार्थेभ्यस्तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता ।। विषया विनिवर्तन्ते निराहारस्य देहिनः ।
यततो ह्यपि कौन्तेय पुरुषस्य विपश्चितः । इन्द्रियाणि प्रमाथीनि हरन्ति प्रसभं मनः ।।
यदा संहरते चायं कूर्मोऽङ्गानीव सर्वशः ।



لسند سرہیہ[5] پشن[4]، وڑوِنین[3]، وحشین نام[2]

ژھِناہ چھا تِمَن یِم چھُ پالان کرِشن جی

حَسد خون ہار، خشمہ ہوت نار ژایان[1]

چھُ زلنک زگت وٕذنٕ زِ پیاران کرِشن جی

یِمَن تاپہٕ کرٕالو چھ ہیٚز شوٗرِ کرِمِژ[2]

تِمَن سیکہ لِین بیٚٹھ چھُ باران کرِشن جی

چھیلِتھ ژھن یِمَو کام[1]، کرود[2]، موہ[3]، اَہنکار[5]

پوٚہتر تِمَن جانِ جانان کرِشن جی

۱۔ شہوت ۲۔ ژکھ ۳۔ طمع ۴۔ غوٗرور ۵۔ سرہیہ = پیار

۶۱۔ حواس اپنے رول اور لگا مجھ میں دل تو سرشار ہو یوک ہیں متصل

तसुन्द स्रेह पशन, वुडवुन्यन, वहशियन ताम,
छ्यनह छा तिमन यिम छु पालान कृष्ण जी।

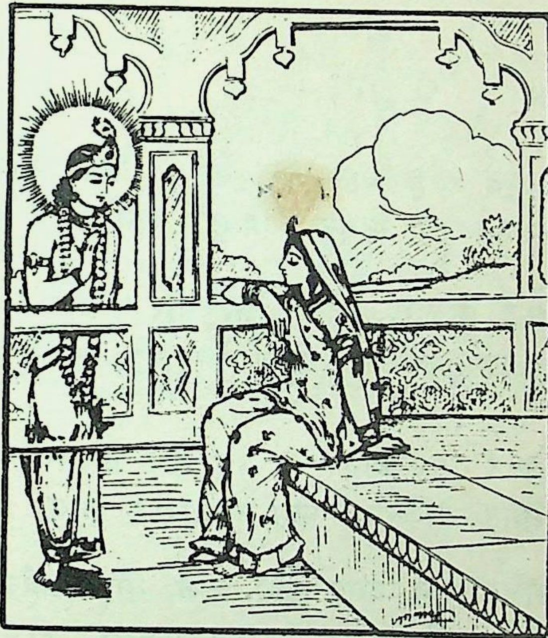
हसद खूंखार, खशम होंत, नार चापान
छु ज़गतुक ज़गत वोन्य चे प्रारान कृष्ण जी

यिमन ताप क्रायव छे मेंच़ शोर करमुच़
तिमन सेंकिल्यन प्यठ छु बारान कृष्ण जी।

छेलिथ छुन यिमव काम, क्रूध, मोह अहँकार,
पवितर तिमन जानि जानान कृष्ण जी।



तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः। वशे हि यस्येन्द्रियाणि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता॥ ध्यायतो विषयान्पुंसः सङ्गस्तेषूपजायते। सङ्गात्संजायते कामः कामात्क्रोधोऽभिजायते॥ क्रोधाद्भवति संमोहः संमोहात्स्मृतिविभ्रमः। स्मृतिभ्रंशाद्बुद्धिनाशो बुद्धिनाशात्प्रणश्यति॥



یِمن کٔنہہ نہٕ آسان یِمَن دِل پریشان تِمَن بیکسَن ہُنٛد چھُ سامان کرٛشن جی

یہٕ تھٕنی ہیوٚ مُجسَّم چھُ حُسنک جمالُک
چھُ فاضِل دِلس منٛز بسَاوان کرٛشن جی



۶۲۔ جو کرتا ہے محسوس دُنیا کی سیر نہ اُلفت کسی سے ہے جس کو نہ بیر

प्रसन्नचेतसो ह्याशु बुद्धिः पर्यवतिष्ठते ॥६५॥

چھ برہمن دھرم- گیان ضبط راستی
لبنی- حق شناسی تہ پاکیزگی
تغوفل ترک - عیش وعشرت حرام
طمع ژکھ نہ تھاونی چھلنی من ہمی
(کرشن گیتا ۳۲/۱۸)

छु ब्राह्मण धर्म—ज्ञान ज़ब्त रास्ती,
लबुन्य हक़ शनासी तु पाकीज़गी
तगोफुल तरक ऐश व अशरत हराम,
तमाह, चख न थावुन्य छलुन्य मनहमी
(गीता)

यिमन काँह नु आसान, यिमन दिल परेशान,
तिमन बेकसन हुंद छु सामान कृष्ण जी।
यि थन्य ह्योव मुजसम छु हुसनुक जमालुक
छु फ़ाज़िल दिलस मंज़ वसात्रोन कृष्ण जी।

रागद्वेषवियुक्तैस्तु विषयानिन्द्रियैश्चरन्।
आत्मवश्यैर्विधेयात्मा प्रसादमधिगच्छति ॥६४॥ प्रसादे सर्वदुःखानां हानिरस्योपजायते।
नास्ति बुद्धिरयुक्तस्य न चायुक्तस्य भावना। न चाभावयतः शान्तिरशान्तस्य कुतः सुखम् ॥



بانسری ہند ساز گومیانن کنن
چھس اوے کنی کرشنہ شبدن کن تھون
کرشنہ شبدو بخشہم گنگایہ جل
تھہ زھہم اتھہ منز گورم شوٗد تن بدن



نوٹ:- ۱۔ شبد = لفظ ۲۔ بخشہم = دِیُتم ۳۔ جل = آب، پونی ۴۔ شوٗد = خالص



مہربانی کرے کرشنن سُداما! ۔ تہٕ چھُکھ زگتس اندر بوڈ نیک بختا
بنان چھا یتھ دیالو یار یارس ۔ چھ کرشنٕنی دوستی امرت سراپا

मिहरबांनी करय कृष्णन, सुदामा !
च़ छुख जगतस अन्दर बोड नेक बख्ता
बनान छा युथ दयालु यार यारस
छि कृष्णन दोस्ती अमृत सरापा ।

बांसुरी हुन्द साज़ गव ध्यानन कनन
छुस अबय किन्य कृष्णु शब्दन कन थवन ।
कृष्णु शब्दव बखशुहम गंगायि जल,
चाह वुनिम अथ मंज कोरुम शोद तन बदन

या निशा सर्वभूतानां तस्यां जागर्ति संयमी । यस्यां जाग्रति भूतानि सा निशा पश्यतो मुनेः ॥

इन्द्रियाणां हि चरतां यन्मनोऽनु विधीयते । तदस्य हरति प्रज्ञां वायुर्नावमिवाम्भसि ॥ तस्मादस्य महाबाहो निगृहीतानि सर्वशः ।



بالہٕ پانس لگ تنَے اَز ہیوٚن آے

زٕ وَندَے! مورلی تلا اَز کرٛشنہٕ واے

چانہٕ حُسنک پرٛتوَہ دیدَن کٔشِش

چون پیکر جذبہٕ : پیٛچ رسیہ کرٛاے

چانٕی حشمتَ، چانٕی عظمت، چانٕی کتھ۔ کُنہہ نہٕ سَمیِس منز ژٕہہ ہیوٚ یُی ساٹٕی زاے

عظمت = بجر   سَہ = وقت

۔۔۔ بے سمندر میں غائب ہوں دریا ہزار ہا رہے گا وہ لبریز اور با وقار

मोरलीदर

बालु पानस लंग्यतनय अज़ म्योन आय,
ज़ुव वन्दय ! मोरलो तला अज़ क्रुष्णु वाय ।

त्रानि हुसनुक परतवा दीदन कंशिश
चोन पयकर जज़बु प्रेयमुच सिर्यि क्याय ॥

चान्य हशमत, चान्य अज़मथ, चान्य छव,
कांह न समयस मंज़ त्रे ह्युव यी सान्य राय ।



(१) आय---वाँसि हुंद त्रख, (२) परतव—जलवु, दोद – अछ.

आपूर्यमाणमचलप्रतिष्ठं समुद्रमापः प्रविशन्ति यद्वत् । तद्वत्कामा यं प्रविशन्ति सर्वे स शान्तिमाप्नोति न कामकामी ॥७०॥ विहाय कामान्यः सर्वान्पुमांश्चरति निःस्पृहः । निर्ममो निरहंकारः स शान्तिमधिगच्छति ॥ एषा ब्राह्मी स्थितिः पार्थ नैनां प्राप्य विमुह्यति । स्थित्वास्यामन्तकालेऽपि ब्रह्मनिर्वाणमृच्छति ॥

چانہِ ہو رلی ہِنز دَرے! اَوتار ژِرے

داس پیاراں چھی ژِ از کاسکھ اَنیاے

اکھ دَہہ چشمَن اندر کرتم قرار!

عُمرِ لوسم ژ ہی وُچھان کرہیون پاے

پاے = چارہ

ژِرے چھُہم پیریمک صَنَم، رُوحک ہرشِ

ہرش = سرور

سارِنے لول باکراون چون داے

داے = مشہور

یوت ژُور سو ندر بناوِتھ چون ہو کھ

حاے تن گو پانہ کاریگر خو داے

ساسہ بدی رنگ بدلو نی رودم زَنم

یس نَروس منز چھاکھ بَستھ سے اکھ ہواے

چانہِ پترچ چھہا منس لجمڑ ہہ چھم

لولہ برتیو! فاضلس چھے چاڑی باے

باے = پریم

شری بھگوان نے فرمایا

ساتویں ادھیائے

ایسن ارجن! آہاں تجھ پائے ہوئے ہمری ذات ہیں لو لگائے ہوئے

चानि मोरली हुंज़ द्र्'य अवतार चय,
दास प्रारान छी च् अज़ कासुख अन्याय ॥

अख दमाह् चश्मन अन्दर करतम कगार,
उमर् लोसम चेंय वुछान कर म्योन पाय।

चय छुहम प्रेममुक सनम, रूहुक हर्ष,
सारिनय लोल बांगरावुन चोन दाय ॥

यूत च्रोर सोन्दर बनांविथ चोन मोख,
हांरतन गव पान् कारीगर खोदाय।

मासुवंद्य रंग बदलवुन्य रूदिम ज़न्म,
यस जुवस मंज़ छुख बसिथ मुय अख 'बेवाय ॥

चानि प्रेमुच छिह्य मनस लंजमुच मे छम,
लोल् बेत्र्यों। 'फ़ांज़िलस' छय च्यांन्य माय।

(१) माय---वांसि हुंद त्रख, (२) परतव—जलव, दोद—अछ,

(१) पाय—चार, (२) हर्ष— सरूर,
(३) दाय—मशवर, मोख—बुथ, (५) माय—प्रेम,

अथ सप्तमोऽध्यायः

श्रीभगवानुवाच

मय्यासक्तमनाः पार्थ योगं युञ्जन्मदाश्रयः ।
असंशयं समग्रं मां यथा ज्ञास्यसि तच्छृणु ॥१॥ ज्ञानं तेऽहं सविज्ञानमिदं वक्ष्याम्यशेषतः ।
यज्ज्ञात्वा नेह भूयोऽन्यज्ज्ञातव्यमवशिष्यते ॥२॥
मनुष्याणां सहस्रेषु कश्चिद्यतति सिद्धये । यततामपि सिद्धानां कश्चिन्मां वेत्ति तत्त्वतः ॥

یکدلی



یکدلی ہندٕ شہ گیٖان چھے بانسری
یِس کنن گوٚونہٕ لوٚگ چھے ہری
مَن پوٚتر یِس سپدِ بس سے چھہ شاہ
کیاہ مسلمانی کرِس کیاہ کافری

तस्याहं न प्रणश्यामि स च मे न प्रणश्यति ॥

کُنی یَس نظر تَس چھ گیانی وَنان!
تمِس نِش نہٕ چنڈال، برہمن زٕ جان!!
دُیٔ ہُند سیٹھاہ دوٗر یحساس تَس!
سُہ گاو، ہوٗن تےٚ ہوٗس چھ یکسان وٕندان

(گیتا جی 18/5)

گیتا 18/5

कुनी यस नज़र तस छि ज्ञानी वनान
तमिस निश नु चंडाल, ब्राह्मण ज़ु जान।
दुई हुंद स्यठाह दूर इहसास तस,
सु गाव, हून, तय होस छु इखसान व्यंदान
(गीता)

यकदिलो हुंद शह ग्यवान छय बांसुरी
यस कनन गव वननि लोग "जयजय हरी"।
मन पवितर यस सपुद बस सुय छु शाह,
क्या मुसलमांनी करचस क्या का'फ़िरी ॥

सर्वभूतस्थितं यो मां भजत्येकत्वमास्थितः । सर्वथा वर्तमानोऽपि स योगी मयि वर्तते ॥३१॥

यदादित्यगतं तेजो जगद्भासयतेऽखिलम् ।
यच्चन्द्रमसि यच्चाग्नौ तत्तेजो विद्धि मामकम् ॥ यो मां पश्यति सर्वत्र सर्वं च मयि पश्यति ।



بالہِ پانس لاگھے جامے چھُتی

کرشنہِ لالو! بس ییتی سمکھہ تنی

پانہٕ ازٕ گنگایہ ہنٛد جل باگراو

چاوتکھ امرت ہبہ ہوی ترٛیشے ہتی

یِم نِشاطس، شالمارس پوس پھلی

ژاری ژاری تِم لاگھے کارے ہتی

یہ مٹی یہ پانی یہ آگ اور ہوا یہ آکاش دنیا یہ چھایا ہوا

وجودک سر۔ منچ روشن سبیل بن
ذرا ظاہر مشر۔ اندری دِلس سن
کرن آور پنن آسن نہ آسن
دِلچ حرکت بناوُن کرشنہ سمرن

वजूदुक सिर. मनुच रोशन सबील बन
ज़रा ज़ाहिर मशर, अन्दरी दिलस सन।
करुण आबुर पनुन आसुन नं आसुन
दिलचि हरकथ बनावुन कृष्णु स्मरण ॥



कृष्ण लालो

बालु पानस लागह्य जामय छेंती,
कृष्णु लालो बस येंती समखक तंती।

पानु अज़ गंगायि हुंद जल बांगराव,
चावनख अमृथ म्य हिव्य त्रेगे हेंती ॥

यिम निशातस शालमारस पोश फोल्य,
चांयं चांर्य तिम लागह्य कारे पंती।

भूमिरापोऽनलो वायुः खं मनो बुद्धिरेव च।
अहंकार इतीयं मे भिन्ना प्रकृतिरष्टधा ॥४॥ अपरेयमितस्त्वन्यां प्रकृतिं विद्धि मे पराम्।
जीवभूतां महाबाहो ययेदं धार्यते जगत् ॥५॥
एतद्योनीनि भूतानि सर्वाणीत्युपधारय। अहं कृत्स्नस्य जगतः प्रभवः प्रलयस्तथा ॥६॥

نوٗرہٕ آگرٕ سرِ یہ ہو کھ چھُے اَنہٕ لوٗٹ

ہیرِ لوٗن پانس پرٛون ہنٛدی گہہ دٕھی

خورِ ہنٛد ہیکہٕ تہٕ تھُنی ہیو چھُے شرِ یہٕ

نالہٕ ہٕٹھ اَکھ دَمہٕ روزِتھ اَتِی

چوٗن آکار چھُم سَتَن بَرنَن ہہٕ آش

ییم شعوٗرٕ کی بَر دوٗہے تھوٗی مے وَتھِی

دِل چھ بھرسٹ تے کرٛودھ انہٕ سَمیک سُبھاو

بیر اَکھ اَکی سُند تھوان سمیکِ مُتِی

چھِی فدا پادَن گُمتی بمپوشہٕ سَر

کھبَل چھِ آسَن ہیتھ بِہِتھ آیے کَتِی

اَکھ بنٕو ہوٕ رٕلی دُرن آدیش پوٗز

فاضلا! سَت دوٗپ چھ داسَن ہُنٛد نیٚتی

ارجن نہیں کچھ بھی میرے سوا نہ ہے مجھ سے بڑھ کر کوئی دوسرا

प्रणवः सर्ववेदेषु शब्दः खे पौरुषं नृषु ॥८॥

नूर आगुर- मिर्ययिमोख छुम आनु पोंट,
हेरि बोन पानम प्रवन हुन्द्य गाह वंथी ॥

हुरि हुन्द पैकर तु थ'न्य ह्यव छुय शरीर,
नालु रटुहय अख दमा रोज़ुम अंती ॥

चोन आकार छुम सतन वरन्यन में आश,
यिम शऊरुक्य बर दोहय थंव्य मय वंथी ।

दिल छि भ्रष्ट तय क्रोध अज़ समयुक सोबाव,
वैर अख अंक्यसुन्द थवान समयिक्य मंती ॥

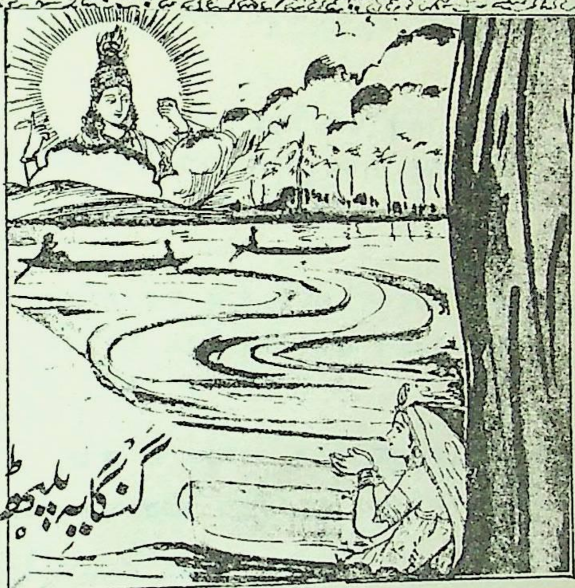
क्षो फ़िदा पादन गोमुत्य दम्पोशि सर,
व्यक्त छि मासन ह्यथ बिहिथ आरय केती ।

"अख बंनिव" मुरली दरुन आदेश पोंज़,
फाज़िला ! सत दोंप छु दासन हुन्द पंती ॥

पुण्यो गन्धः पृथिव्यां च तेजश्चास्मि विभावसौ । जीवनं सर्वभूतेषु तपश्चास्मि तपस्विषु ॥९॥

मत्तः परतरं नान्यत्किञ्चिदस्ति धनंजय ।

मयि सर्वमिदं प्रोतं सूत्रे मणिगणा इव ॥७॥ रसोऽहमप्सु कौन्तेय प्रभास्मि शशिसूर्ययोः ।



رادھاونان چھ ناتھس۔ دود بانچھ ہیو ژہ پیکر
درشُن سۄ کألی دِکھنا! چھُم چانہ دوٗرِرُکۓ شر
اچھ میانہ لوسہ وأنس۔ گنگابہ بلیٹھ ژہ پیارن
مورلی شبد گرھان چھیم۔ گوشن ژیتھ بنھس تر
أندی أندی ژہ رقصہ بایتھ۔ گمہ مو پھیول انتھ تھوو
یم چانہ لولہ پیرتھ۔ رنگین پیر تہ زیور

۱۔ دوٗربر = فراق   ۲۔ گوشن = کنن   ۳۔ زیور = گہنہ

۱۰۔ سن ارجن میں ہوں بیج ہر ہست کا ہیں وہ بیج ہوں جو نہ ہوگا فنا۔

धर्माविरुद्धो भूतेषु कामोऽस्मि भरतर्षभ ॥११॥



राधा वनान छें नाथम—दुद, मॉछ ह्युव चें पैकर

दर्शुन में काल्य दिखना! छुम चानि दूरिरुक शर ।

अंछ म्यानि लोसु वॉसन— गंगायि प्यठ चें प्रारान

मूरली शब्द गछ़न छ़्िम गोशन चुं यथ बंठिस तर

अन्द्य अंन्द्य चे रकस बापथ कंम्य मोर रुयोल अनिथ थोव

यिमचानि लोलु पूरिथ रंगीन पर तु ज़ेवर ॥

ये चैव सात्त्विका भावा राजसास्तामसाश्च ये । मत्त एवेति तान्विद्धि न त्वहं तेषु ते मयि ॥१२॥

बुद्धिर्बुद्धिमतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम् ॥१०॥ बलं बलवतां चाहं कामरागविवर्जितम् ।

बीजं मां सर्वभूतानां विद्धि पार्थ सनातनम् ।

نَے

(نَے چھ بہانے .... "مورلی شبداہ اَسہ گوکُلن وَنَن چھ رادھا کرشنہ ہے آو")

کُس تام وایان! اُلکھ چھ دِیان نَے چھ وزان نَے

گوپالہ ژ یہ ہیم ویدی چھ دِیان

نَے چھ بہانے ---- نَے چھ بہانے

تصویر آتش خانہ مجازس چھ دِوان ڈول

منز نار برہمن طور ستنگر

تو دزان نے ---- نَے چھ بہانے

نَے نغمہ شیرینی۔ ہن چھ برمان۔ زوچھ زوان کل

یتھ نغمہ پراُن ہعرفتک

سرہیہ چھ بران نے ---- نَے چھ بہانے

۱۳۔ کنوں سے ہوئے وصف تلیوں عیاں تا ہوئے جن سے گمراہ اہلِ جہاں

(नय छ बहानय

"मुग्ली गब्दा गव असि कनन
वनन छि राधाकृष्ण है आव"



कुस ताम वायान!लुख छि दपान नय छि वज़ानय,
गूपाल च़े यिम वेद्य छि दपान,
नय छि बहानय—नय छि बहानय

तसवीर आतशखान् मजाज़स छु दिवान डोल
मंज़ नार ब्रेहन तूर संगर
तोति दज़ान नय—नय छि बहानय

नय नगमु शीरीनिमन छु ब्रमान, जुव छु जुवान कल
युथ नगमु प्रावुन मायफतुक
श्रेह छे बरान नय—नय छि बहानय ।

त्रिभिर्गुणमयैर्भावैरेभिः सर्वमिदं जगत् ।
मोहितं नाभिजानाति मामेभ्यः परमव्ययम् ॥१३॥ दैवी ह्येषा गुणमयी मम माया दुरत्यया ।
मामेव ये प्रपद्यन्ते मायामेतां तरन्ति ते ॥१४॥
न मां दुष्कृतिनो मूढाः प्रपद्यन्ते नराधमाः । माययापहृतज्ञाना आसुरं भावमाश्रिताः ॥१५॥

تیِتھ گیانٕ حاصِل ییِٚہ، تھوکھ زٲنی اندر مَن ^۱^علم

سوٚے زان تاوِتھ اوم تہٕ کُنہٕ

ھوٗ چھ پرٲن نے ---- نے چھ بہانے ^۲^ایشور

—.—

زَن سوزِ وَنس زوٗنگ چھ لگان، لام لگن لام جنگلس

مَن وِہنہٕ لگان تاوِہتین

شولہٕ تہٕڑان نے ---- نے چھ بہانے

—.—

وَن سوزِ گرِزھتھ رونہِ ہٹاہ، ژورِ ہاہتھ لوٗب

تُھنی پانہٕ تھلان والہِ لوٗے

آسہٕ گرٲن نے ---- نے چھ بہانے

—.—

فاضل! شریک ساز کُنہٕ، سوزِ ہگر ہیوٗن

گوپالہِ! یوٗ ہے لولہٕ ہتین

منز چھ سزان نے ---- نے چھ بہانے

त्युथ ज्ञान हासिल सपदि ववख जांन्य अन्दर मन
सुय ज़ान हाविथ ओइम त्, कुनुय
'हू' छें परान नय—नय छे बहानय।

जन सोजवनस जोंग छु लगान लाम लूकन लाम
मन वुहनि लगान ताव हत्यन
शोल् छटान नय—नय छि बहानय।

बन सूर गंछित रोजि हटा चूरि बिहिथ लोब
तथ्य पान् थलान वालि तवय
मास गरान नय—नय छि बहानय।

'फाज़िल'! शरीरुक साज़ कुनुय सोज़ मगर ग्योंन
गोपाल्! योहय लोल् हत्यन
मंज़ छे सज़ान नय—नय छें बहानय।

नोट— ग्यान—जानकारी, अकन
हू—ईश्वर, अल्लाह।



مہ چھا اِنکار ماتا! کیاز پُرز ھتھم

مہ لَے گوو گاؤ ماتا سیتی ہر دَم

دوٗ ہُنتھ دوٗد ماشہ چوٗر تھم زوٗر زوٗرے

ہَتے پوٗز بوز تے مَلرے تہٕ ٹوٗلے

دوٗد کی زُڈی چیتھ تہٕ رونہِم کَل ہیہ اَتھکُن

یوٗہے گوٗٹھانہِ ووٗتھ بھگوانہٕ سُند دِیُن

جا تہٕ اَوتار چھینہٕ اپُر ہکان وُنتھ۔ تِمن ہُنزِ ن کتھ۔ تہٕ کامِن ہُنز چھُ شوٗزر آسان۔

۱۹ - جنم پر جنم لے کے گیانی ضرور ... پہنچ جائے آخر کو میرے حضور



पोंज़ अवतार

मैं छा इन्कार माता! क्याज़ि प्रुछ़थम
मैं लय गोय गांव मातायि सूत्य ह्रदम ।

दींपुथ द्रुद मा सां चोथम चूरि चूरे
हतय पोंज़ बोज़तय मलरे तु टूरे ।

दुद्रुवय नंटच चथ ति रूज़ुम कल म्य प्रथ कुन
यीहय गव ठानु वोथ भगवानु सुन्द द्युन ।

बहूनां जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मां प्रपद्यते ।
वासुदेवः सर्वमिति स महात्मा सुदुर्लभः ॥१९॥
कामैस्तैस्तैर्हृतज्ञानाः प्रपद्यन्तेऽन्यदेवताः ।
तं तं नियममास्थाय प्रकृत्या नियताः स्वया ॥२०॥
यो यो यां यां तनुं भक्तः श्रद्धयार्चितुमिच्छति ।
तस्य तस्याचलां श्रद्धां तामेव विदधाम्यहम् ॥

پزر گو سر یہ چھا پوشیدہ روزان
کرشن پوز ونہ چھا زنہہ کانسہ کھوژان؟

نہج پزرچ نہ روزان وانسہ پابند
لوکٹ بالک امی کورمت عقلمند



یہ دھرتی گاو ماتا پیٹھ چھ توشان
دوان دود تھنی کرشن آخرہ بناوان
کھیوان تھنی امرتکی نٹے داہہ چاوان
امس بگ ایشورہ پدوی چھ دیاوان

۲۲- پرستش وہ ذوق یقین سے کرے جیسے دیوتا مان لے



पज़र गव सिरियि छा पूशीद रोज़ान
कृष्ण पोज़ वनुनु छा ज़ांह कांसि खोचान ?

नंहज पज़रुच न रोजान कांसि पाबंद
लूकुट बालुक ममी कोरमुत अकलमंद ।

यि धरती गांव माता प्यठ छि तोशान,
दिवान दुद, थंन्य, कृष्ण मांखुर बनावान ।

ख्यवान थंन्य अमृतुक्य नंटच दामु च्यावान
ममिस जग ईश्वर पदवी छु द्यावान ।

स तया श्रद्धया युक्तस्तस्याराधनमीहते ।
लभते च ततः कामान्मयैव विहितान्हि तान् ॥
अन्तवत्तु फलं तेषां तद्भवत्यल्पमेधसाम् ।
देवान्देवयजो यान्ति मद्भक्ता यान्ति मामपि ॥
अव्यक्तं व्यक्तिमापन्नं मन्यन्ते मामबुद्धयः ।
परं भावमजानन्तो ममाव्ययमनुत्तमम् ॥२४॥

کرشن اکھ بالکا پنزرک مجسّم

فخر زگتس یوہے اوتار۔ آدم

کرشن بتر آژ ببیٹھ صُلح علامتھ

یوہے اکھ پوشنی امنچ کرامتھ



کرشن گوپیس چھ مورلی منز سه الہام

یمیک اکھ اکھ صدا لوکن چھ پیغام

کرشن گو ظلمہ ایوانن سوٗ گگراے

یمیک ڈسی لابہ اپزس تالہ تژ کراے

کرشن گو مقصدک نزدیک منزل

امس نش سارنے حاصل کنے دل

۲۵۔ جو ہیں یوک مایا سے مستور ہوں۔ جہاں کی نظر سے بہت دور ہوں۔

॥ भविष्याणि च भूतानि मां तु वेद न कश्चन ॥



कृष्ण अख बालुका पज़रुक मुजस्सम
फ़कुर ज़गतस योहय अवतार आदम ।

कृष्ण वुनरांच़ प्यठ सुलहुच करामत,
योहय अख पोशिवन्य अमनुच अलामत ।

कृष्ण गव यस छु मुरली मंज़ सु इलहाम,
यम्युक अख अख सदा लूकन छु पैगाम ।

कृष्ण गव ज़ुलमु अयवानन सु बगराय
येम्युक दंसलाबु अपज़िस तालि तंच़ आय ।

कृष्ण गव मकसदुक नज़दीक मंज़िल
अमिस निश सारिनुय हासिल कुनुय दिल ।

इच्छाद्वेषसमुत्थेन द्वन्द्वमोहेन भारत । सर्वभूतानि संमोहं सर्गे यान्ति परंतप ॥२७॥

वेदाहं समतीतानि वर्तमानानि चार्जुन ।

मूढोऽयं नाभिजानाति लोको मामजमव्ययम् ॥२५॥

नाहं प्रकाशः सर्वस्य योगमायासमावृतः ।

کرشن گو دۆن سمت گرھنک سمندر

اوتھ وانتھ بنان پرتھ قطرٕ ساگر

کرشن گو یکدلی ہند اکھ سہ آگر

وزان ییتھ نش چھ ندہ موٗنتال تے سر

کرشن گیتایہ ہند گھتے منیچ آش

گٹہ تاریکین منز سریہ پرٲگاش

کرشن گو اکھ پوتر روپ پریمک

تصوٗر دل پسند سوندر شریک

کرشن گو زلزلہ کرودس تہ کامس

سہ خائص سوٗن کران کم مایہ تہ امس

کرشن ہردیچ چھ پنہ آئینہ داری

اہنکارس بناوان انکساری

۹۹۔ انسان بھلے جن کے اعمال ہیں گناہوں سے جو

कृष्ण गव दुन समुत गछ़नुक समन्दर
ओतथ वातिथ बनान हर कतरु सागर ।

कृष्ण गव यकदिली हुंद अख सु आगुर
वुज़ान यथ निश छु मदुमोत ताल तय सुर ।

कृष्ण गीतायि हुंद गाह तय मनुच आश
गटन तारीकियन मंज़् सिरियि प्रगाश ।

कृष्ण गव अख पवितर रूप प्रेयमुक
तस्सव्वुर दिलरुबा सोंदर शरीरुक ।

कृष्ण गव जलज़ला क्रूधस त कामस
पु खोलिस सुन करान कम मायि त्रामस ।

कृष्ण हृदयिच छ़् पंज़् आईनु दोरी
अहंकारस बनावान इन्कसोरी ।

येषां त्वन्तगतं पापं जनानां पुण्यकर्मणाम् ।
ते द्वन्द्वमोहनिर्मुक्ता भजन्ते मां दृढव्रताः ॥
जरामरणमोक्षाय मामाश्रित्य यतन्ति ये ।
ते ब्रह्म तद्विदुः कृत्स्नमध्यात्मं कर्म चाखिलम् ॥
साधिभूताधिदैवं मां साधियज्ञं च ये विदुः ।
प्रयाणकालेऽपि च मां ते विदुर्युक्तचेतसः ॥३०॥

28/1

کرِشن گو تھُنؠ دوہ دِچ مائے شُہل سرِ ہیہ
ہوٚہس لوبس کنی برِہیہ زالوٚنی رِیہہ

کرِشن گو پوٚشوٗن گنگایہ ہُنٛد جَل
چھَلاں ہیٛندِس مُسلمانس دِلک مَل

کرِشن گو فکرِ تارُن وآنسہ ہُندٕ وِیٛر
سُہ چھا اُگُنٛد سُہ گوٚ پرٛتھ کانٛسہ ہٕندٕ وِیٛر

کرِشن گو آتما سَت آتما یَس
تِمس سولُے چھُ حاصِل دٕیے یہ گوٚیس

اے سخن سنج بھگوان پھر یوں ہوئے۔ کہ سن اے قوی دست پیارے مرے۔

۱۔ مائے = محبت ۲۔ برِہیہ = شولہ (شعلہ) ۳۔ موہ = ہموٚرُے ہیوٚنُے بِہ۔ طمع۔ ۵۔ وِیُٛر = جاداد ۶۔ سَت = دآیمی پنزر ۷۔ دٕیے = مہربان

شری بھگوان کا ارشاد دسواں اَدھائے

भूय एव महाबाहो शृणु मे परमं वचः ।
यत्तेऽहं प्रीयमाणाय वक्ष्यामि हितकाम्यया ॥१॥
न मे विदुः सुरगणाः प्रभवं न महर्षयः ।
अहमादिर्हि देवानां महर्षीणां च सर्वशः ॥२॥
यो मामजमनादिं च वेत्ति लोकमहेश्वरम् ।
असंमूढः स मर्त्येषु सर्वपापैः प्रमुच्यते ॥३॥

कृष्ण गव थंन्य दुदच मालय शहुल स्रोंह
मुहस लूबस फुनी बोंह ज़ालवंन्य रेंह ।

कृष्ण गव पोशवुन गंगायि हुन्द जल
छलान हें दिल मुसलमानस दिलुक मल ।

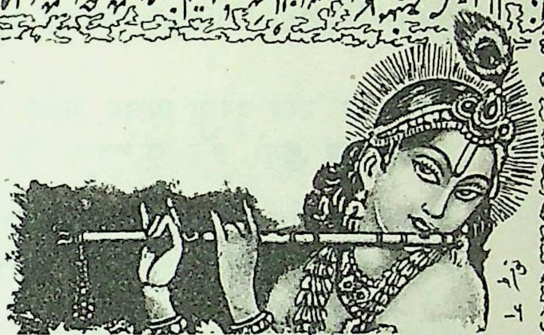
कृष्ण गव फिकिर तारुन बांसिहुंद व्युच
सु छा अंक्यसुंद ? सु गव प्रथकांसि हुंद व्युच ।

कृष्ण गव आत्मा सत आत्मा वस
तमिस सोरुय छु हांसिल दयियि गव यस ।

مہاساگر کرشن یمہ دل بناوان
تمے تس منز گوناگ دردانہ ژھاران
تلاشکی مر تہٕ گیانکی زیٹھی منزل
شعورس - لاشعورس تم بساوان

महा सागर कृष्ण यिम दिल बनावान ।
तिमय तस मंज़ ग्वनंक्य दुरदानं छारान ॥
तलाशिय मर तं ज्ञानक्य ज़ीठ्य मंज़िल ।
शऊरक्य ला शऊरक्य तिम बसावान ॥

भगवान् श्रीकृष्णचन्द्रजी बोले,



نَے موُرلی

ہے! نَے چھ گرٛدھان شولہِ وَنان، نار ہشہ نار

اَتھ ٹیٖنؠوٗ نین کرٛشنہٕ تٔہ کُن

لار ہشہ لار

لاہوتہٕ پیٚٹھ زٕ چھ کرٛان کُنہٕ کنگس طوٗر

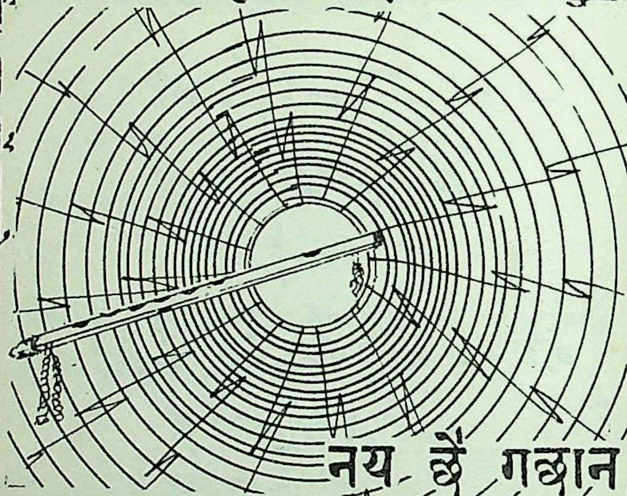
آکاشہٕ پیٹھک سِریہ تٔہ نش

جار ہشہ جار

دِل پانہٕ برٛمان۔ کیاہ چھ دُئی۔ کتھ چھ ونان بیر

یِم چانہٕ نِہج بَکِی تہٕ سپدی

یار ہشہ یار



नय छें गछान

हे नय छें गछान. शोलु वुहान, नार हसा नार !
रेंह चेनवुन्यन कृष्ण चेंकुन
लार हसा लार !

लाहूत¹ प्यठ'च जुच छें करान कुनिर' कँगस तूर²,
आकाशि प्यठुकँ सिरियि च़े निश
जार हसा जार !

नोटः-
१ लाहूत—तस्सवुफक थोद मुकाम २ कोहि तूर ।

दिल पानुब्रमान क्या छें दुई कथ छि वनान वैर
यिम चानि नेंहजं पेक्य त सपुद्य
यार हसा यार !

बुद्धिर्ज्ञानमसंमोहः क्षमा सत्यं दमः शमः
सुखं दुःखं भवोऽभावो भयं चाभयमेव च ॥४॥
अहिंसा समता तुष्टिस्तपो दानं यशोऽयशः
भवन्ति भावा भूतानां मत्त एव पृथग्विधाः ॥५॥
महर्षयः सप्त पूर्वे चत्वारो मनवस्तथा ।
मद्भावा मानसा जाता येषां लोक इमाः प्रजाः ॥

گوپالہٕ ! یٔژھکھ آرِ پلس آب کرکھ آب

اَکھ ژٕرہ تہٕ دوٚدس ہوٚکھرِ لگان

دار ہیسہٕ دار

ژٕم چانہٕ کلے پھٹہٕ تہٕ چینیکھ وِبتھ تہ سپدی وِبتھ[2]

تمٕ قُلزمن ترٕی تارِ ہوٚنشکھ

تار ہیسہٕ تار

دھن یارِ لوٚلہٕ : کیٚنہہ مگرمن چھُ گنجک نیاس

یُس یارِ ژٕبہٕ پیٚتھ ، تس نہٕ گنج

یار ہیسہٕ یار

یارِ تھ تہٕ زٕریوٚمُنم ، کرشنہٕ لوٚبم ۔ من مبہ سرفرازہ[3]

اَتھ پٕرکمہٕ پلنجے پیٚٹھ مبہ گندم

زار ہیسہٕ زار



[2] دریاو

[3] پیرہن

गूपालु यछ़ख आरु पलस आब-करख आब
अख च़ह तु दोदस होंखरि लगान
दार हसा दार !

यिम चानिकले फटय़ तु चेयख व्यथ तु सपद्य व्यथ,
तिम कुलज़ुमन तेर्य तारु मोंशुख
तार हसा तार !

धन हारु नोला, केंह नु मगर मन छु गंजुक न्यास,
युस हारि चे पथ, तस नु कुनिच ।
हार हसा हार ।

हारिथ ति ज़्यूनुम कृष्ण लबुम मन मे सरफ़राज़
पथ प्रेमु पेंज, प्यठ मे ग़्युंदुम
ज़ार हसा ज़ार ।

नोट — १ सरफराज़—प्रसन्न, खोश ।

इति मत्वा भजन्ते मां बुधा भावसमन्विताः ॥

मच्चित्ता मद्गतप्राणा बोधयन्तः परस्परम् । कथयन्तश्च मां नित्यं तुष्यन्ति च रमन्ति च ॥

अहं सर्वस्य प्रभवो मत्तः सर्वं प्रवर्तते ।

एतां विभूतिं योगं च मम यो वेत्ति तत्त्वतः ।
सोऽविकम्पेन योगेन युज्यते नात्र संशयः ॥७॥

پچھ وأنسہ گرٛھتھ کرٛشنہ ژٕ مایکھہ تہٕ مہکھ دِل
اتھ زنمہ پھرس ژٕ یہہ چھُ لگان
پیار ہٕسہٕ پیار

ژٕ یہہ = ساتھ

—.—

کُملاوُ ہٕسہ وُٹھ تہٕ گہے پھرتہٕ مٕہ کُن نیٖن !
یوٚد تیرِ نظر دِکھ تہٕ دَپے
مار ہٕسہٕ مار

نیٖن = اچھ

—.—

کرٛشنا! مٕہ دِتِتھم سوز نتے نَے مٕہ دِلس زٕدی
چھس دوٚہ[2] ہن شہن پلٹھ پتھ ونگ تھوکھ
دار ہٕسہٕ دار

دار = دِوٗ دار

—.—

موٗرکی چھ ندا ۔ ہاتفن[1] لے ۔ شہ چھُ امیک زوٗ
رُح بالہ کرٛشن ہا فاضلنی یم
شار ہٕسہٕ شار!

1 فرشتہ

—

लछ वांस् गॅछिथ कृष्ण् च् मा यिख त् मुहकमन
अथ जन्म् फिरिस च्युह छु लगान
प्यार हसा प्यार ।

कुमलाव हना वुठ त् गहे फिर त् मेकुन नैन
यॉद तीरि नज़र दिख त् दपय
मार हसा मार ।

कृष्णा मे द्यु तथभ सोज़ नतय नय म्य दिलस ज़्य
छस दोन शहन प्यठ पथ वनुक
होंख दार हसा दार ।

मोरली छु निदा, हातफुन्य लय, शह छु अम्युक ज़ुव
रुह बाल् कृष्ण् फांज़िलुन्य यिम
शार हसा शार ।



ददामि बुद्धियोगं तं येन मामुपयान्ति ते ॥१०॥ तेषामेवानुकम्पार्थमहमज्ञानजं तमः ।

तेषां सततयुक्तानां भजतां प्रीतिपूर्वकम् ।

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान् । शाश्वतं दिव्यमादिदेवमजं विभुम् ॥१२॥

موٗرلی تہٕ موٗرلیٖ دَر

کرٛشنہٕ موٗرلی پیکرِ سوز و گداز
دِلرُبا، دِلکش، ہوٚدر تےٚ دِلنواز
یِے اَچھ عِرفان تہٕ شہٕ قُدسی صِفات
پانہٕ موٗرلی دار چھُ سرتا پا اعجاز

میٚژونے

میٚژونے یژانہٕ سمیچ بانسُری زان
یہانہٕ! اگوٗژھ و چھُن نےٚ کُس چھُ وایان
شریک سوز لافانی شہہس تام
شُھک ساٚک کرشن اوتار انسان

परं ब्रह्म परं धाम पवित्रं परमं भवान्॥

मोरलीदर

कृष्ण मोरली पैकरे सोज़ो गुदाज़,
दिलरुबा, दिलकश, सोन्दर तय दिलनवाज़।
लय अमिच इरफ़ान त शह कुदसी सिफ़ात
पान मोरलीदर छु सर ता पा मजाज़॥

नोट :-

१ पैकर—क़ालब, जिसम=मुज्जसम
२ कुदसीसिफात—रूहानी गोण थवन वोल
३ मोरलीदर—मरली वोल, कृष्ण जी।

मेंच़िव नय

मेंच़िव नय प्रानि वकतुच बाँसुरी ज़ान
बहानय, गोंछ़ वुछुन, नय कुस छु वायान
शरीरुक सोज़ लाफ़ानी शहस ताम
शुहुक मोलिक कृष्ण अवतार इन्सान॥

———.———

नोटः-

१. नय—मोरली

सर्वमेतदृतं मन्ये यन्मां वदसि केशव।
असितो देवलो व्यासः स्वयं चैव ब्रवीषि मे॥१३॥
आहुस्त्वामृषयः सर्वे देवर्षिर्नारदस्तथा।
स्वयमेवात्मनात्मानं वेत्थ त्वं पुरुषोत्तम।
भूतभावन भूतेश देवदेव जगत्पते॥१५॥



کرشن بانسری ہیتھ بُرتھ سیٹھر زن اتھ
یہ مستی تہ فرہیتھ چھ زن بوزونی چیتھ
یہ سنگیت چیتھ آئے کرشنا
یہ مورلی مودر بائے کرشنا
ترزگتس یہ نے وائے
کرشنا کرشنا!

---

۱۶ کریں آپ جوہر مکمل عیاں، جلال مقدس کا واضح نشان

ژٕ شوقہ سان رٕمس رٕمس اگر کرٛشن گرکھ
مرکھ ژٕ مرنہ برونٛہہ - توے نسہٕ ژٕ زٕنہہ مرکھ
چھِ زٕنمہ پھیرٕ لگاں تمن ہشد گرھاں یمن
ترکھ ژٕ بوسرس اگر کرٛشن کرٛشن کرکھ

च़ॖ शोकॖ सान रुमस रुमस अगर कृष्ण गरख
मरख च़ॖ मरन ब्रोंह-तवय नसा च़ॖ ज़ांह मरख
छि जनमॖ फिरॖ लगान तिमन मॊशिद गछान यिमन
तरख च़ॖ भवसरस अगर कृष्ण कृष्ण करख।

कृष्ण बान्सुरी ह्यथ बॊरिथ सेहरॖ ज़न अथ
यि मस्ती तॖ फरहथ छि ज़न बोज़वुन्य चथ

यि संगीत चथ आय कृष्णा !
यि मोरली मोदॖर माय कृष्णा !

च़ॖ ज़गतस यि नय वाय, कृष्णा कृष्णा !

یہ لے زَن مَنَس نار   دَزان زَن ژندَن دار
کرَان رُح چھ بیدار   یہ یَس لوُگ سہ ہشیار
تمِس کینہہ نہ پرواے کرِشنا!
یہ موٗرلی گرشُم کرلے کرِشنا!
مَنَس کینہہ نہ پرواے
کرِشنا کرِشنا

یہ لے بوزنگ ہیس   دِوان الیشور یَس
سُہ یوگس اندر مَس   کرَان شُشبہاس
تمِس نِش پرِ اندر درِاے کرِشنا!
یہ موٗرلی چھ بُڈشاے کرِشنا!
ہیسیح وتھ چھ سیٔز تراے
کرِشنا کرِشنا

۱۹- ہتوئے سن کے بھگوان یوں لب کشا ہیں ارجن مرے وصف لا انتہا۔

यि लय ज़ंन मनस नार दज़ान ज़ंन चंदन दार
करान दिल छु बेदार यि यस लोंग सु हुशियार

तंमिस कैंह न परवाय कृष्णा !
यि मोरली ग्रेशम क्राय कृष्णा !

मनस कैंह न परवाय, कृष्णा कृष्णा !

यि लय बोज़नुक ह्यस दिवान ईश्वर यस

सु यूगस अन्दर मस करान शशजहातस
तंमिस निश रुचर द्राय कृष्णा !

यि मोरली छै बंड शाय कृष्णा !
ह्यसच वथ छै स्यज़ त्राय, कृष्णा-कृष्णा !

———

श्रीभगवानुवाच

हन्त ते कथयिष्यामि दिव्या ह्यात्मविभूतयः ।
प्राधान्यतः कुरुश्रेष्ठ नास्त्यन्तो विस्तरस्य मे ॥

अहमात्मा गुडाकेश सर्वभूताशयस्थितः ।
अहमादिश्च मध्यं च भूतानामन्त एव च ॥२०॥

आदित्यानामहं विष्णुर्ज्योतिषां रविरंशुमान् ।
मरीचिर्मरुतामस्मि नक्षत्राणामहं शशी ॥२१॥

پہ لے پھیر گوشن تہ لۓ لام پوشن

چھ بلبل تہ توشن حقیقت چھ روشن

یہ مورلی چھ بے ژھاے کرشنا!

یہ مورلی چھ یکتاۓ کرشنا!

یہ بے رنگ بے ژھاے

کرشنا کرشنا

دھرم ہا کرِ بے تہ انسان سبھٹاہ ژٕ سبھٹاہ جان

یہ ساری چھ ہانان چھ منزل سہ بھگوان

چھ گیتا تہ ہمراے کرشنا!

یہ مورلی! ژہ پوز آے کرشنا!

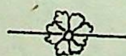
سمے سور ہمراے

کرشنا کرشنا

۲۲۔ سمجھ مجھ کو ویدوں میں تو وید سام امر دیوتاؤں میں واسو ہے نام۔

यि लय फ़ीर गोशन तु लंज लाम पोशन
छि बुलबुल ति तोशन हक़ीकत छे रोशन
यि मोरली छे त्रे छ़ाय कृष्णा।
यि मोरलो छे यकताय कृष्णा।
यि बे रंग बे छ़ाय कृष्णा !

नोट : १ गोशन-तरफातन २ यकताय - समुन
करन वाजन ३ बेरंग—बे इम्तियाज



धर्म, क्रय त इन्सान स्यठा रुत्य, स्यठा जान
यि सोरी छि मानान छु मंज़िल सु भगवान
छे गीता ति हमराय कृष्णा !
यि मोरलों चे पोज़ आय कृष्णा !
समय सोर हमराय,कृष्णा कृष्णा।

वसूनां पावकश्चास्मि मेरुः शिखरिणामहम् ॥ पुरोधसां च मुख्यं मां विद्धि पार्थ बृहस्पतिम्। सेनानीनामहं स्कन्दः सरसामस्मि सागरः॥ वेदानां सामवेदोऽस्मि देवानामस्मि वासवः। इन्द्रियाणां मनश्चास्मि भूतानामस्मि चेतना॥ रुद्राणां शंकरश्चास्मि वित्तेशो यक्षरक्षसाम्।

نئے یے چھ یکسان کنی ہندو مسلمان

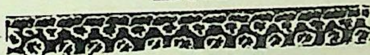
چھ رحمان بھگوان چھ بھگوان رحمان

دوپی ہنز نہ کنہہ رائے کرشنا!

یہ ہو رلی چھ بے نیاے کرشنا!

چھ یکسان بے نیاے

کرشنا کرشنا



حفاظت پتھ ہنز چھ وتھ مرسلن ہنز

گہے موسیٰ ہنز گہے عیسیٰ ہنز

گپالا ژٕ نہ تھز بیاے کرشنا!

یہ ہو رلی دِچ جاے کرشنا!

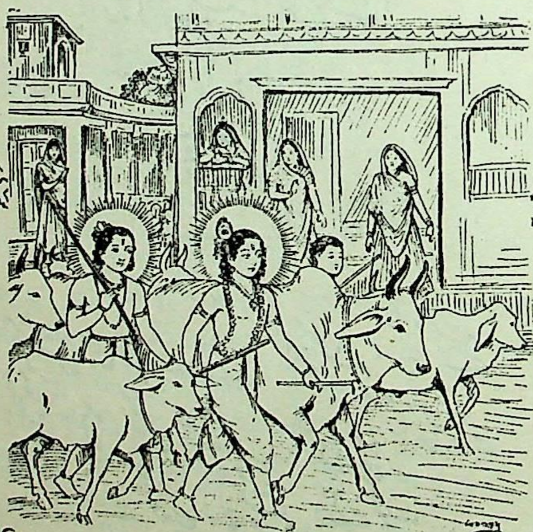
ژٕ نش یم سمتھ آے

کرشنا کرشنا

गन्धर्वाणां चित्ररथः सिद्धानां कपिलो मुनिः ॥

नये लय छें यकसान कुनो हेंन्द्य मुसलमान
छु रह्मान भगवान, छु भगवान रह्मान।
दुई हंज़ न काह राय क्रुष्णा !
यि मुरली छे बे न्याय क्रुष्णा।
छु यकसान बे न्याय क्रुष्णा क्रुष्णा।

नोट;- १ दुई - वैर २ बेन्याय - न्याय रोस



हिफ़ा ज़त पशन हंज़ छे वथ मोरसलन हंज़
गहे मूसहन हंज़ गहे ईसहन हंज़
गुपाला चे थंज़ जाय क्रुष्णा !
चे निश संमिथ यिम आय, क्रुष्णा क्रुष्णा।

—:o:—

नोट :- पुश —हयवान, २ मारसल—दरजस मंज़
पंगमबरस वासिथ

उच्चैःश्रवसमश्वानां विद्धि माममृतोद्भवम् । ऐरावतं गजेन्द्राणां नराणां च नराधिपम् ॥

महर्षीणां भृगुरहं गिरामस्म्येकमक्षरम् ।

यज्ञानां जपयज्ञोऽस्मि स्थावराणां हिमालयः ॥ अश्वत्थः सर्ववृक्षाणां देवर्षीणां च नारदः ।

ژُچھکھ تھَنۍ، ژِچھکھ بھَنۍ ژِچھکھ مانچھ ہیو، تھَنۍ
یہِ تھُنۍ سورگہِ کمۍ اَنۍ نفتش اَتھ چھ بنۍ بنۍ
چھُ کیوپڈ تہِ سِرسائے کرشنا!
یہِ مورلی چھ سِسرائے کرشنا!
حُسینن ژِ دُبرائے
کرشنا کرشنا

کرشن جیا ژٕ چھُکھ جے گُنے شہ، گُنے پے
کُنی نے، کُنی لے بیتھی وہ یثرھان دے
یمے گوٗن ژٕ نِش درائے کرشنا
یہِ مورلی! ژٕ نِش زرائے کرشنا
ژٕ جے جے! ژٕ لوگ آے
کرشنا کرشنا



चु छुख थंन्य, चु छुख थंन्य, चु छुख मांछ ह्यु व थंन्य
यि थंन्य मुरगु कंम्य अंन्य, नकुश मथ छि बंन्य बंन्य,
छु क्यूपिड़ ति सिरसाय क्रृष्णा।
यि मुरली छि ससराय क्रृष्णा।
हसोनन चु टुबराय, क्रृष्णा क्रृष्णा!

कृष्ण जी चें छुय जय, कुनुय शह कुनुय पय,
कुनी नय, कुनी लय, यिथी विहृच यछ़ान दय।
यिमब गुन चें निश द्राय कृष्णा!
यि मुरली! चें थंज़ जाय कृष्णा!
चें जय जय, चें लुंग माय कृष्णा कृष्णा!

मृत्युः सर्वहरश्चाहमुद्भवश्च भविष्यताम्।
कीर्तिः श्रीर्वाक्च नारीणां स्मृतिर्मेधा धृतिः क्षमा॥
बृहत्साम तथा साम्नां गायत्री छन्दसामहम्।
मासानां मार्गशीर्षोऽहमृतूनां कुसुमाकरः॥३५॥
द्यूतं छलयतामस्मि तेजस्तेजस्विनामहम्।
जयोऽस्मि व्यवसायोऽस्मि सत्त्वं सत्त्ववतामहम्॥



گُلَن ہُند ترنّم، شہرَن ہُند تکلُّم
چھ مورلی ہوٗد میوٹھ گُفتار گُفتار
وَزُن شبنمُک، جلترنگ تارَن ہُند
یہ مورلی سراپا چھ سیتار سیتار
دلچ پوشوِ لے ہچھ زندہ آواز
یمَن منز چھ پوشیدہ اسرار اسرار

———

۳۷۔ میں برشنوں میں ہوں واسدیوے امشیر قبیلے میں پانڈو کے ارجن آمیر

मौनं चैवास्मि गुह्यानां ज्ञानं ज्ञानवतामहम् ॥



गुलन हुंद तरंनुम थरचन हुंद तक्कलुम,
छै मुरली मुदुर म्यूठ गुफ़्तार गुफ़्तार ।

वजुन शबनमुक, जलतरंग तारुकन हुंद,
यि मुरली सरापा छे सेतार सेतार ।

दिलुच पोशु वत्य लय मनुच जिन्दु आवाज़
यिमन मंज़ छि पूशीदु असरार असरार ।

यथ, दुद, तु गुरुस क्याज़ि चि अंदेश करिथ चोथ,
भगवान् ! यहुंद बागि बेरुत शेहजार लुकन वोत।
ज़ुव मंगत, जिगर मंगत, च रुह मंगत दिलो जान,
मोसूम् ! लगय क्याज़ि असों चूरि मक्खन रयोथ॥

वृष्णीनां वासुदेवोऽस्मि पाण्डवानां धनंजयः ।
मुनीनामप्यहं व्यासः कवीनामुशना कविः ॥ दण्डो दमयतामस्मि नीतिरस्मि जिगीषताम् ।
यच्चापि सर्वभूतानां बीजं तदहमर्जुन । न तदस्ति विना यत्स्यान्मया भूतं चराचरम् ॥



بالہ کرشنن یام دژنم آگہی

پادِ گوہر دسس ہیہ ذوقِ بندگی

بانسرِی ہُنْد شہ چھُ پرمگ آتما

بانسرِی ہُنز لے چھ سازِ دِلبری

بوزِو نی دوّپ نے خودی ہُنْد روپ رنگ

اتھ خودی پیٹھ چھے فدا پچھ بے خودی

وِچھ امِی موہ لی حقیقژ واش کوّڈ

کوّر امِی ظاہر نہِ اوتار گونبی

یکدِلی منز کرو بیان سو رخ دسفید

فاضلا! موہ رلی پنُن رنگ قودرتی

बाँसुरी

बाल्‌कृष्णन याम दिच़्‌नम आगंही[1]
पांद’ गव हृदयस[2] म्य ज़ौके[3] बंदगी ।

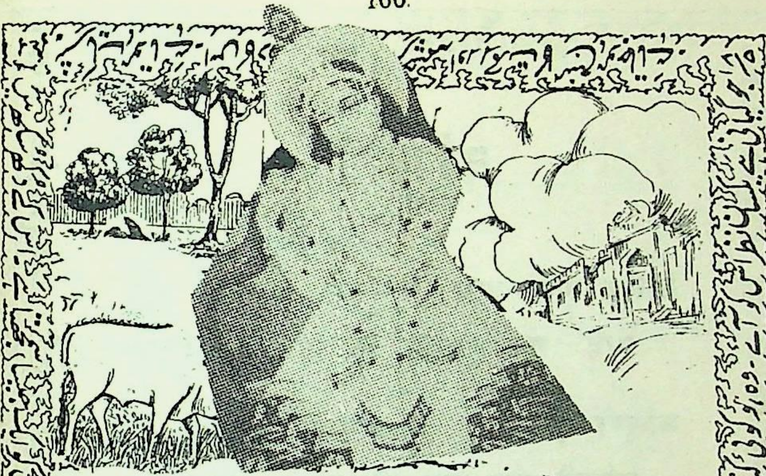
बांसुरी हुंद शह छु प्रेमुक आत्मा
बाँसुरी हुंज़ लय छै साज़े दिलबरी ।

बोज़वुन्य दो’प नय "खोंदी" हुंद रूप रंग
अथ खोंदी प्यठ छय फ़िदा लछ़ "बेखोंदी"

वुछ अमी मोरलो हक़ीकच़ वाश कोंड
कोंर अमी ज़ाहिर ज़्रि अवतार गव नबी ।

यकदिली[4] मंज़ कर व्यपान सुरखो सफ़ेद
"फ़ाज़िला" मोरलो पनुन रंग कुदरती

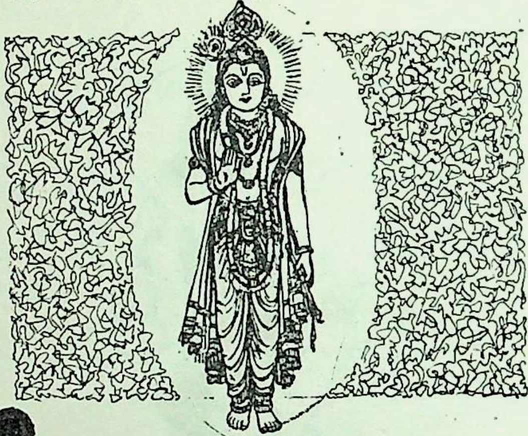
नोट : 1. जाग्रती, हास 2. दिलस, 3. शोक
4. हिशर



بے خبر پاٹھی کرِشنہ لالن گورنس
مرتبس منز ہیر ہوٗر ہوٗر کھورنس
اتھ اندر میانین اتھن منز اوس کیاہ
واوِ ہالین منز بہ سوٗدرس تورنس

شعورس لاشعورس منز کرِشن آم
وُچھم زن سِریہ، لیکن رنگ سیاہ فام
سُہ یاہتھ دارشنگی برو ٹھی چھ ترا وان
وُچھان تس گوپین سِتی ایشور تام

گیانی کو جب عرفان باری حاصل ہو جاتا ہے تو اس کے لئے ہر طرف ایک ہی پرماتما کا



वेखबर पा'ठ्य कृष्णु' लालन गोरनस,
मरतबस मंज़ हेरि ह्यो'र 'ह्यो'र खोरनस।
अथ अन्दर म्यान्यन अथन मंज़ प्रोस क्याह,
वावु हाल्यन मंज़ ब' सो'दरस तोरनस।

२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.२.

शऊरस लाशऊरस मंज़ कृष्ण आम,
वुछुम जन सिरियि लेकिन रंगु सियाह फाम।
सु यामथ दर्शनुक्य बर वंथ्य छु आवान,
वुछान तस गूपियन स्'त्य ईश्वर ताम।



अर्जुन उवाच

मदनुग्रहाय परमं गुह्यमध्यात्मसंज्ञितम्
यत्त्वयोक्तं वचस्तेन मोहोऽयं विगतो मम ॥१॥ भवाप्ययौ हि भूतानां श्रुतौ विस्तरशो मया।
एवमेतद्यथात्थ त्वमात्मानं परमेश्वर। द्रष्टुमिच्छामि ते रूपमैश्वरं पुरुषोत्तम ॥३॥



دِلن گو دِین وِ دھرمک آبرو کم
چھُ اوگون پھانپھلاوان اِبنِ آدم
دٕہِکھ اوتار ست لوگ پھیر واپس
اوٚ نے کٔنہِ پیارٕنچ کٔل آشہِ ہٕر چھم

۱۔ اوگون = بدصفت ۲۔ ابنِ آدم = انسان ۳۔ اوتار ہیوٚن = بٔبیہِ زٕلون۔

विसृज्य सशरं चापं शोकसंविग्नमानसः ॥४७॥

संजय उवाच

صحیح وَتھ رَٹھ ! کرشن چھُے سیتی پانس
سُہ میلِتھ سبز رکِس ذرس ذراتس
جہانس سورِ ستھ یام تار لبنچ
نجاتچ رز کرِتھ لاگِس کنارس

संही वथ रठ ! कृष्ण छुय सूत्य पानस
सुमीलिथ पज़रकिस ज़रस ज़ुरातस।
जहांनस सोरि सथ याम तार लबनुच,
नजातचि रज़ करिथ लागयस किनारस।

दिलन गव दीनु धर्मुक आबिरू कम,
छु अवगोन फांफुलावान इन्नि आदम।
चु ह्यख अवतार सतयोग फेरि वापस,
अवय किन्य प्रारनुच कल आशिहच्छम ॥

अवगोण—बदसिफत,:— काम, क्रोध, लोभ. मोह, अहंकार
यानै शहवथ, चख. मालय, तमाह त गुरूर

यदि मामप्रतीकारमशस्त्रं शस्त्रपाणयः
धार्तराष्ट्रा रणे हन्युस्तन्मे क्षेमतरं भवेत ॥४६॥
एवमुक्त्वार्जुनः संख्ये रथोपस्थ उपाविशत् ।



یاہتھ یہ آدم دین و دھرمک پراٹھ یہ سمسار
گیتاچھ شاہد کرشنہٕ گوپال سپد نمودار
تس سپد بے دینن ادھرمن تے یچھن ستی جنگ
میٖژ خاک سپدن چھیکرس ظالمہٕ تہٕ خطا کار

۲۸- ہوا دل کو ارجن کے رنج و ملال ، کہا رحم و رقت سے ہو کر نڈھال

گیتا

کرشن جی ارجنس اسرار باوان
تمن ہند آنہ گیتا گاشراوان
سلوک نابد تہ الہامی شبد قند
پرن والس چھ امرت دامہ چاوان

कृष्ण जी अर्जनस असरार बावान,
तिमन हुंद् आंन् गीता गाशरावान ।
श्लोक नाबद तु इलहामी शब्द क़ंद,
परन वांलिस छि अमृत दाम् चावान ॥

यामत यि आदम धर्मुक्य दीनुक प्राटि यि संसार,
गीता छि शाहिद, कृष्ण गुपाल सपदि नमूदार ।
तस सपदि बे दीनन, अधर्मन तय यछन सूत्य जंग,
मेंच़ खाक सपदन छेकरस बेदीन तु खताकार ।

दृष्ट्वेमं स्वजनं कृष्ण युयुत्सुं समुपस्थितम् ॥२८॥
सीदन्ति मम गात्राणि मुखं च परिशुष्यति । वेपथुश्च शरीरे मे रोमहर्षश्च जायते ॥२९॥
गाण्डीवं स्रंसते हस्तात्त्वक्चैव परिदह्यते ।
न च शक्नोम्यवस्थातुं भ्रमतीव च मे मनः ॥



یام دھرتی پیسٹھ سپد مدی یانہ عام
ژ کرہندی پاٹھی نژنہ لگی کورو تمام
سَت نمودار گو اُست کو فود گو
کورسِری کرشنن صحی سمیک نظام

ہماری ادھر فوج ہے بے شمار، کماں دار بھیشم سا عالی وقار

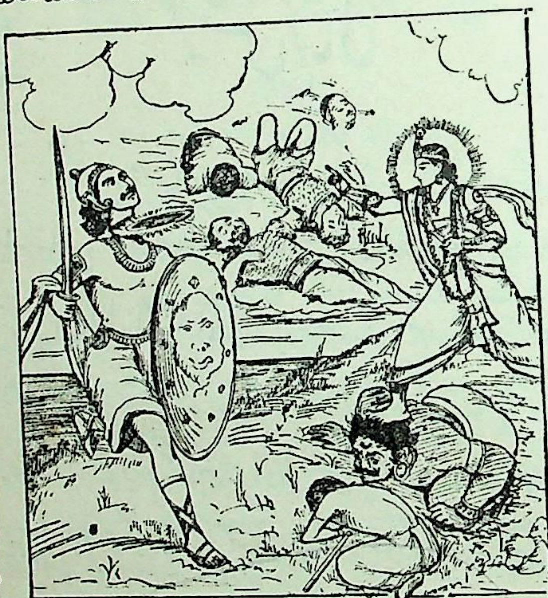


याम दरती प्यठ सपुद मुदियानु प्राम,
च़ॖक्कि हिद्य पांठ्य नच़नि लॅग्य कोरव तमाम।
सत नमूदार गव असथ काफूर गव,
कॊर श्रीकृष्णन सॅही समयुक निज़ाम॥



چھُ بھگوَن ناسہٕ تراسَن بیخ گالان ۔ دَغابازَن چھُ موتُک پیالہٕ چاوان
گٹن منٛز پھالوٗان جیوَن اَدھرمَن
سُہ دیٖن دار: حق پرَستَن تارٕ تاران

छु भगवान नासु त्रासन बेख़ गालान ।
दग़ाबाज़न छु मोतुक प्यालु चावान ॥
घटन मन्ज़ फाटुवान ज़ीवन अधरमन ।
सु दीन्दार : हक़ परसतन तारु तारान ॥



سِتمگارَو سِتَم کوٚر پانٲنۍ پانَس
مہابھارت پھُرن روٗد پرتھ زمانَس
تُلوِ پزرِچ عَلَم پوٚز روز قایِم
سَبَق دِیت کرشنہٕ اوتارَن جہانَس

सितम गारव सितम कोर पान्य पनस ।
महाभारत फ़िरुन रूद प्रथ ज़मानस ॥
तुलिव पज़रुच्य अलम, पो'ज़ रोज़ि क़ाइम
सबख द्युत कृष्ण अवतारन जहानस ॥

کرشن کہانی

اُگرسین اور دیوک دو بھائی تھے۔ اُگرسین متھرا کے راجہ تھے۔ دیوکی ایک کنیا تھی۔ اُس کا بھائی کنس تھا۔ کنس بہن کے ناطے دیوکی کو بے حد پیار کرتا تھا۔ دیوکی بالغ ہوئی دیکھ کر بہمہ صفت موصوف شورسین کے بیٹے واسدیو کے ساتھ بیاہی گئی۔ کنس کو دیوکی کی شادی سے بے حد خوشی ہوئی۔ اُس نے دیوکی کو جہیز میں کافی دھن دیا۔ اور بے حد خوشی کے ساتھ بہن کو الوداع کر رہا تھا کہ آسمان سے آواز آئی کہ ہے راجہ کنس! جس بہن کو تو اتنا پیار کرتا ہے اُس کا آٹھواں بیٹا تمہارا قاتل ہوگا۔ جب کنس نے ایسا سُنا تو حیران رہ گیا کہ یہ میں نے کیا سُنا۔ اچانک پھر یہی آواز آئی۔ کنس کو بہت غصہ آیا اور قصد کیا کہ دیوکی کے بطن میں ہی اس کے آٹھویں بیٹے کو مار دیا جائے وہ اس طرح کہ جنم لینے سے پہلے ہی اُس کی ماں دیوکی کو موت کے گھاٹ اتاروں اس کا بیٹا اس کے بطن میں مر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اس کو مارنے کے لئے تلوار

پہلا ادھیائے۔ دھرت راشٹر نے کہا:

آ کرو کھیت کی دھرم بھومی یہ جب ملے پانڈووں سے مرے لال کرتے سب

कृष्ण कहानी

लेखक

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

उग्रसेन और देवक दो भाई थे। उग्रसेन मथुरा के राजा थे। उनका पुत्र कंस था। देवकी देवक की कन्या थी। छोटी बहिन होने के नाते कंस देवकी को अत्यन्त स्नेह करता था। देवकी को विवाह योग्य हुई देखकर सर्व-गुण सम्पन्न शूरसेन के पुत्र वसुदेव के साथ देवकी का विवाह स्थापित कर दिया। कंस को देवकी के विवाह की अत्यन्त खुशी थी उसने देवकी को दहेज में बहुत धन दिया और अधिक स्नेह होने के कारण कंस देवकी को स्वयं रथ में बैठा कर विदा करने गया। जिस समय कंस देवकी को विदा कर रहा था उसी समय आकाशवाणी हुई कि हे ! राजा कंस जिस बहिन को तू इतना स्नेह करता है उसी का आठवाँ पुत्र तेरा काल होगा। जब कंस ने इस प्रकार सुना तो वह आश्चर्य में पड़ गया कि यह क्या कहा। तो फिर वही आकाशवाणी पुनः हुई सुनकर कंस को बड़ा क्रोध आया तब कंस ने सोचा कि इसके गर्भ से ही वह आठवाँ पुत्र जन्म लेगा, अतः इसी को मार दूँ जब ये ही नहीं रहेगी तो फिर पुत्र कहाँ से होगा। ऐसा सोच कर

धृतराष्ट्र उवाच

धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे समवेता युयुत्सवः ।
मामकाः पाण्डवाश्चैव किमकुर्वत संजय ॥१॥

संजय उवाच

दृष्ट्वा तु पाण्डवानीकं व्यूढं दुर्योधनस्तदा ।
आचार्यमुपसंगम्य राजा वचनमब्रवीत् ॥२॥
पश्यैतां पाण्डुपुत्राणामाचार्य महतीं चमूम् ।
व्यूढां द्रुपदपुत्रेण तव शिष्येण धीमता ॥३॥



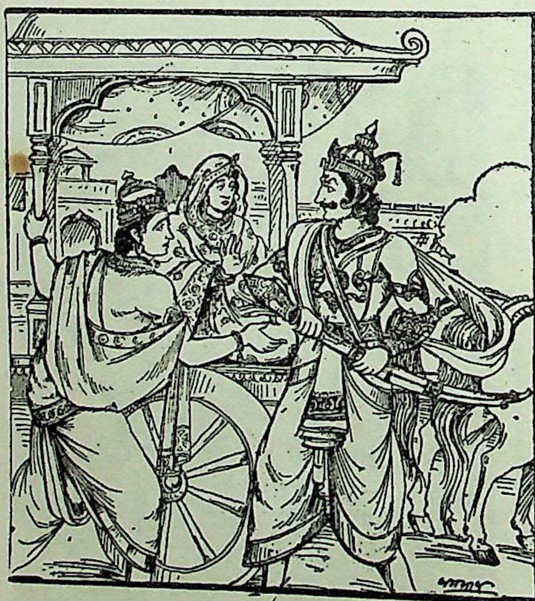
کرشن مہاراج کی ماتا جی کو

بھائی کنس قتل کرنے لگا۔

تاکہ اُس کا بیٹا اُس کے بطن میں ہی مر جائے۔ وقت آنے پر کنس نے دیوکی کے بال پکڑ کر اُس کو مارنے کے لئے تلوار میان سے نکالی۔ جیسے ہی وہ اُسے مارنے لگا تو کنس [واسدیو] نے اُس کا ہاتھ پکڑا اور پرارتھنا کی کہ دیوکی عورت ہے۔ صنفِ نازک ہے اور آپ کی بہن ہے اور شادی شدہ ہے۔ اِس لئے آپ اِس کو نہ ماریں۔ اِس کے جو بیٹے ہوں گے ہم اُنہیں آپ کے حوالے کریں گے۔

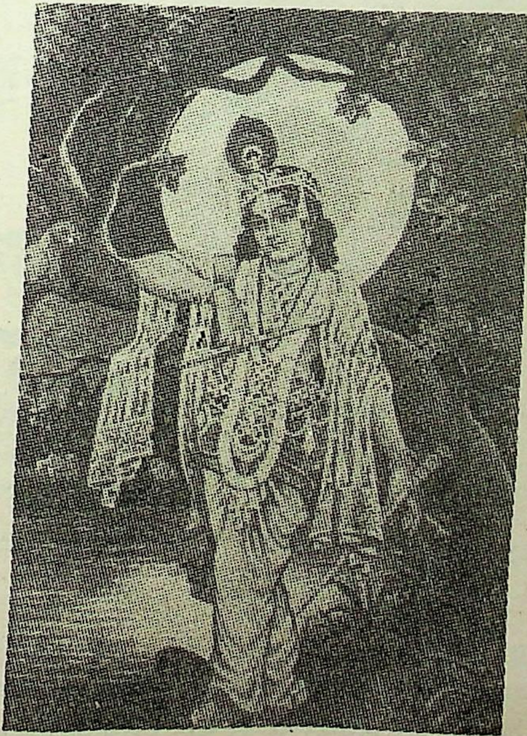
لڑائی کو نکلے ہیں اہلِ خدنگ، جو سب ارجن اور بھیم ہیں وقتِ جنگ

कंस ने देवकी के केश पकड़ कर उसको मारने के लिए तलवार म्यान से निकाली । जैसे ही मारने को तैयार हुआ, वसुदेव ने कंस का हाथ पकड़ कर कंस से प्रार्थना की कि यह स्त्री है, अबला है, आपकी बहिन है, फिर नवविवाहिता है अतः आप इसको न मारें। इसके जो पुत्र होंगे उन्हें हम आपको सौंप देंगे। जब देवकी के



कंस बड़ा पापी था । उसकी दुष्टताकी सीमा नहीं थी । वह भोजवंशका कलङ्क ही था । आकाशवाणी सुनते ही उसने तलवार खींच ली और अपनी बहिनकी चोटी पकड़कर वह उसे मारनेके लिये तैयार हो गया ।

کرشن جی نے جنم لیا۔ بھگوان نے اُن سے نند جی کے گھر گوکل پہنچانے کے لئے کہا۔ وہاں اُن کے گھر ایک لڑکی پیدا ہوئی تھی جسے یہاں لانے کے لئے کہا گیا۔ واسدیو کے ہاتھوں سے ہتھکڑیاں کھُل گئیں اور دروازوں کے تالے بھی کھُل گئے اور سب پہرہ داروں پر گہری نیند غالب آگئی۔ واسدیو نے کرشن کو ایک چھاج میں رکھ کر وہاں سے نکالا۔



को नींद आगई। प्रभु देवकी के सामने चतुर्भुजी रूप में प्रकट हुये। तब देवकी ने उनसे शिशु के रूप में बनने की प्रार्थना की और प्रभु छोटे बालक बन गए। भगवान ने उनसे कहा कि हमें गोकुल में नन्दजी के यहां पहुंचा दो और वहां उनके यहां कन्या उत्पन्न हुई है उसको यहां ले आओ। वसुदेव जी के हाथों में पड़ी बेड़ियां खुल गईं। समस्त द्वारों में पड़े ताले स्वयं खुल गए सब पहरेदार गहरी नींद में सो गये। जब श्रीकृष्ण को लेकर वसुदेव चले तो उस समय वर्षा बहुत जोरों से हो रही थी। इसलिये शेषनाग ने अपने फन फैलाकर भगवान के ऊपर छत्रछाया कर दी। उस समय यमुना का जल ऊपर तक बढ़ आया

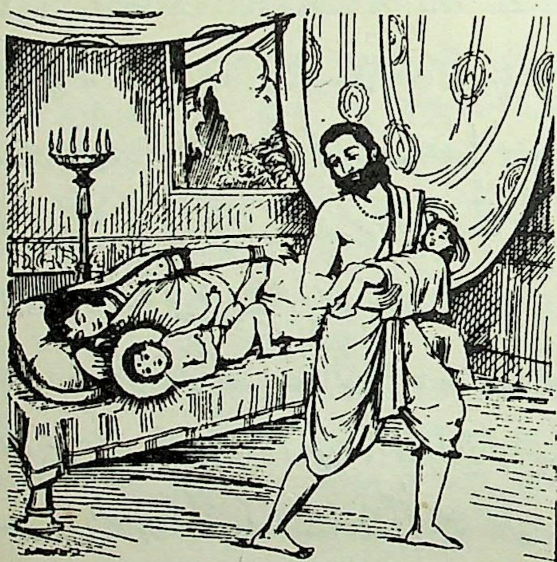


واسدیو جی نے کرشن جی مہاراج کو دشمنوں کے چنگل سے پُورے احتیاط کے ساتھ نکالا اور سلامتی کے ساتھ جمنا جی کے کنارے پر پہنچ گیا۔ اسی دوران میں مُوسلا دھار بارش ہو رہی تھی اور جمنا میں کافی پانی چڑھ گیا تھا اور دریا کو عبُور کرنا نامُمکن تھا۔ اتفاق سے عین موقع پر شیش ناگ نمُودار ہُوا اور اپنا پھن پھیلا کر بھگوان کے اُوپر چھتّر سایہ کر دیا۔ بھگوان نے جمنا کے بہاؤ کا مزاج بھانپ لیا اور آہستہ آہستہ چھاج سے اپنا پیر باہر نکالا اور اس طرح جمنا کو اپنے پیر کو بوسہ دینے کا موقعہ فراہم کیا۔ جمنا جی نے اُن کے پیر چوم لیئے اور پرسن ہو گیئے۔ تو فوراً واسدیو جی کو پار جانے دیا۔

واسدیو جی بھگوان کرشن کو لے کر گوکل پہنچ گیئے۔ وہاں اُس وقت نند جی کے گھر میں سب سو رہے تھے۔ واسدیو جی نے کافی راز داری کے ساتھ کرشن جی کو ماتا جسودا جی کے پاس لِٹا دیا اور کنیا کو اُٹھا لیا اور متھرا آ کر دیوکی جی کو دے دی۔ جیل خانے میں پہلے ہی کی طرح تالے پڑ گیئے۔ لڑکی کا رونا سُنکر تمام پہرے دار جاگ اُٹھے۔ خبر پاتے ہی کنس وہاں آیا۔ مگر بچے کو دیکھ کر معلُوم ہُوا کہ یہ لڑکی ہے۔

مقدس گرو صاحب احترام جہاں کے دو جنموں میں عالی مقام

अश्वत्थामा विकर्णश्च सौमदत्तिस्तथैव च ॥८॥



तब भगवान ने उनका भाव समझकर सूप से अपना पैर निकाल कर स्पर्श कराया। यमुना जी चरण स्पर्श कर प्रसन्न हो गई और उन्हें मार्ग दे दिया। वसुदेव जब गोकुल पहुँचे तो वहाँ नन्द जी के घर सब सो रहे थे। अवसर पाकर वसुदेव जी ने माता यशोदा जी के पास कृष्ण जी को लिटा दिया। कन्या को उठा लिया और मथुरा जाकर देवकी को दे दिया। कारागार में पहले की भाँति ताले पड़ गये। कन्या का रुदन सुनकर सब पहरेदार जाग गये। खबर पाते ही कंस वहाँ आया, कन्या को देखकर उसने सोचा ये तो कन्या

अन्ये च बहवः शूरा मदर्थे त्यक्तजीविताः । नानाशस्त्रप्रहरणाः सर्वे युद्धविशारदाः ॥९॥

नायका मम सैन्यस्य संज्ञार्थं तान्ब्रवीमि ते ॥७॥ भवान्भीष्मश्च कर्णश्च कृपश्च समितिंजयः ।

अस्माकं तु विशिष्टा ये तान्निबोध द्विजोत्तम ।

مگر کہا گیا تھا کہ یہ لڑکا ہوگا، لیکن تب ہی دیوتاؤں کی مایا کا وچار
آتے ہی جونہی کنیا کو زمین پر پٹکنے کے لئے اٹھایا وہ ہاتھوں میں سے
نکل کر فضا میں اڑ گئی اور بولی، ارے راجہ کنس! تو مجھے کیونکر مارتا
تجھے مارنے والا تو گوکل میں پیدا ہو چکا ہے۔ کنس نے دربار میں آکر
منتریوں کو یہ خبر سنائی، تو سب نے کہا کہ یہ تو ہمارے بائیں ہاتھ کا
کھیل ہے۔ ہم اس بالک کا پتہ لگا کر اس کا کام تمام کریں گے۔ تب کنس نے
بہت سے راکھشوں کو کرشن کے مارنے کے لئے گوکل بھیجا، لیکن وہ خود ہی
موت کا شکار ہو گئے۔ جو بھی جاتا تھا اس کو واپس نہ آتے دیکھ کر کنس
نے پوتنا کو بلایا۔ اس نے کہا کہ گوکل میں جتنے بھی بچے ہیں، میں ان سب کو
کھا جاؤں گی۔ یہ سن کر کنس بہت خوش ہوا۔ پوتنا اپنے پستانوں میں
زہر بھر کر گوکل میں آئی اور وہاں سب بچوں کو کھا کر نند بھون میں آگئی
اور ایک بہت سندر گوپی کا روپ بنا کر جسودا سے کہا کہ میں لالہ کی
مبارکباد دینے آئی ہوں اور کرشن جی کو اپنی گود میں لے لیا۔ جسودا جی
گھر میں دوسرے کاموں میں لگ گئی۔ پوتنا نے زہر بھرے پستان کو
بھگوان کے منہ میں ڈالا۔ تب پربھو نے دودھ کے ساتھ اس کے

है पुत्र बताया था किन्तु तभी देवताओं की माया का विचार आते ही ज्योंही कन्या को पृथ्वी पर पटकने के लिए उठाया वह हाथ में से आकाश में उड़ गई और बोली अरे ! राजा कंस तू मुझे काहे मारता है तेरे मारने वाला तो गोकुल में पैदा हो चुका है। कंस ने दरबार में आकर मन्त्रियों को यह समाचार सुनाया तो सब ने कहा यह तो हमारे बाएँ हाथ का खेल है हम उस बालक का पता लगा कर अभी काम तमाम कर देते हैं। तब कंस ने बहुत से निशाचरों को कृष्ण के मारने के लिए गोकुल भेजा, लेकिन वे स्वयं ही काल का ग्रास बन गए। जो भी जाता उसको वापिस न आते देख कंस ने पूतना को बुलाया। उसने कहा ! गोकुल में जितने बच्चे हैं मै सब को खाजाऊँगी। इससे कंस बहुत प्रसन्न हुआ। पूतना अपने स्तनों में विष लगा कर गोकुल में आई। वहाँ सब बच्चों को खाती जब नन्द भवन में आई तो बहुत सुन्दर गोपी का रूप बना लिया और यशोदा से कहा मैं लाला की बधाई लेकर आई हूं तथा कृष्ण जी को अपनी गोद में ले लिया। यशोदा जी गृह में अन्य कार्य में लग गई पूतना ने विष लिये स्तनों को भगवान के मुंह में डाला तब प्रभु ने दूध के साथ उसके प्राणों को भी पी

پرانوں کو بھی پی لیا

اس طرح شکٹاسُر

بکاسُر اور نرکاسُر

وغیرہ بے شمار

راکھشوں کا

خاتمہ کر دیا۔

بھگوان کرشن

پہلے ہی کنس

کو بھی مار سکتے

تھے، لیکن ان

راکھشوں کو بھی



بھگوان کرشن پوتنا کے پران چوس رہے ہیں

مارتا تھا، اس لئے کہ کنس اُنہیں وہاں بھیجتا تھا اور پھر جو جی اُنہیں آسانی اور کھیل کھیل میں مارتے تھے۔

بھگوان کرشن کی ماکھن لیلا میں بھی سیاست کار فرما تھی، کیونکہ برج کے علاقہ سے سب ماکھن عارِیتاً بھیجا جاتا تھا۔ بھگوان نے

جنگ کی شورش

ایک کا ایک اٹھا فوج سے شور و غل — جو نا قوس چلائے کھڑکے دُہل

॥ माधवः पाण्डवश्चैव दिव्यौ शङ्खौ प्रदध्मतुः ॥



लिया। इस प्रकार शकटासुर, बकासुर, नरकासुर इत्यादि अनेक राक्षसों का संहार किया। भगवान कंस को भी पहले ही मार सकते थे लेकिन इन राक्षसों को भी मारना था अतः कंस उन्हें वहाँ भेजता और प्रभु खेल २ में उन्हें मार देते थे। भगवान की माखन लीला में राज-नीति थी क्योंकि ब्रज से सब माखन ऋण रूप में कंस को भेजा जाता था। भगवान ने

पाञ्चजन्यं हृषीकेशो देवदत्तं धनंजयः। पौण्ड्रं दध्मौ महाशङ्खं भीमकर्मा वृकोदरः॥

ततः श्वेतैर्हयैर्युक्ते महति स्यन्दने स्थितौ।

सहसैवाभ्यहन्यन्त स शब्दस्तुमुलोऽभवत् ॥

ततः शङ्खाश्च भेर्यश्च पणवानकगोमुखाः।

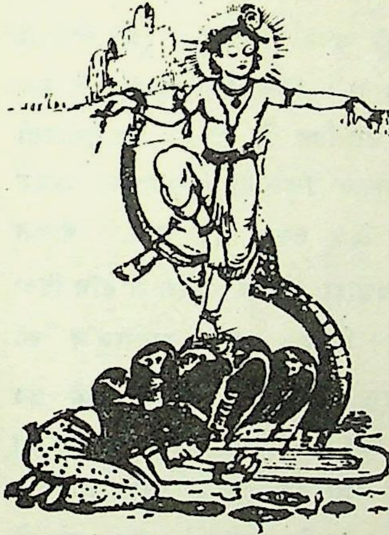
سوچا کہ اس سے دشمن کو قوت ملتی ہے۔ یہ وہاں نہیں جانا چاہیے۔ نیز گوپیوں کا
ان پر بہت ہی پیار تھا۔ جس دن کرشن جی ان کے گھر نہیں جاتے تھے وہ
رو رو کر انہیں پکارتی تھیں اور ماکھن کھلاتی تھیں۔ بھگوان ہر ایک
کام معجزے کے طور پر انجام دیتے تھے۔ ایک بار گھر میں ماکھن کی مٹکی توڑ
دی۔ جسودا جی نے اسے ایک اوکھلی سے باندھ دیا۔ بھگوان نے اوکھلی کو
ٹیڑھا کر دیا۔ یمل ارجن کا ادھار (خلاصی) کیا۔

جب کنس کو بہت دن ہو گئے تب نارد جی نے آکر کہا کہ آپ بھگوان کرشن
اور ان کے بڑے بھائی کو دھنش یگیہ کے بہانے بلاؤ اور تین کروڑ کنول کے
پھول لانے کو کہو۔ کنس نے اکرور کو ان دونوں بالکوں کو لینے کے لئے بھیجا
اور حکم دیا کہ اگر اتنے پھول نہ بھجوائے تو سارے گوکل کو جمنا میں بہائینگے
اکرور جی نے سب ماجرا نند جی کو سنایا۔ ماتا جسودا نے کرشن سے کہا کہ
آج دور کھیلنے مت جانا، لیکن پربھو نے سب دوستوں کو ساتھ لیکر
جمنا کنارے گیند کا کھیل شروع کیا۔ جب بھگوان کے پاس گیند آئی
تو انہوں نے اسے جمنا میں پھینک دیا اور پھر خود بھی اس میں کود پڑے۔
وہاں کالیا ناگ کو قابو میں لاکر اس کے پھن پر ناچنے لگے اور اسی پر

۱۶- مہی پت یدھشٹر وہ کنتی کا لال ۔ وجے پر دکھاتا تھا اپنا کمال

बल मिलता है वहाँ नहीं जाना चाहिए। दूसरे गोपियों का उन पर बहुत स्नेह था। जिस दिन कृष्ण जी उन के घर नहीं आते तो उस दिन वे रो-रो कर पुकारती थी और आने पर माखन खिलाती। भगवान प्रत्येक कार्य लीला द्वारा करते थे। एक बार घर में माखन की मटकी फोड़ दी। यशोदा जी ने ऊखल से बाँध दिया भगवान ने ऊखल को तिरछा करके यमुलार्जुन का उद्धार किया। जब कंस को बहुत दिन हो गये तब नारद जी ने आकर कहा कि आप दोनों बालकों को धनुष यज्ञ के बहाने बुलाओ और तीन करोड़ कमल के पुष्प लाने को कहो। कंस ने अक्रूर को दोनों बालकों को लेने के लिए भेजा और आज्ञा दी कि यदि इनने पुष्प नहीं भिजवाये तो सारे गोकुल को यमुना जी में बहा देंगे। अक्रूर जी ने सब समाचार नन्द जी को सुनाया। माता यशोदा ने कृष्ण से कहा आज दूर खेलने मत जाना। लेकिन प्रभु ने सब सखाओं को साथ लेकर यमुना किनारे गेंद का खेल शुरू कर दिया। जब भगवान के पास गेंद आई तो उन्होंने यमुना में फेंक दी और फिर स्वयं भी उसमें कूद पड़े। वहा कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया

अनन्तविजयं राजा कुन्तीपुत्रो युधिष्ठिरः।
नकुलः सहदेवश्च सुघोषमणिपुष्पकौ ॥१६॥ काश्यश्च परमेष्वासः शिखण्डी च महारथः।
धृष्टद्युम्नो विराटश्च सात्यकिश्चापराजितः ॥१७॥
...घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत्। नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥



تین کروڑ کنول کے پھول منگا لیئے۔ اکرور جی جب بلرام اور کرشن کو لے جانے لگے تو تمام برج اُن کی جدائی میں رو رہا تھا۔ تب بھگوان نے اُن کو سمجھایا کہ ہم جلدی لوٹ آئیں گے۔

متھرا پہنچکر کولیاپیڑ نامی ہاتھی کو نجات دلائی۔ کُشتی کھیلنے کے دوران بے شمار پہلوانوں کو پچھاڑا۔ اپنی ماتا دیوکی جی کا بدلہ لینے کے لئے کنس کو بالوں سے کھینچ کر، پکڑ کر اور مار کر اُسے مکتی بخشی۔ واسدیو اور دیوکی کو قید سے رہائی دی۔ کنس کے والد اُگرسین کو قید سے نکال کر تخت شاہی پر بٹھایا۔ جراسندھ اپنے داماد کا بدلہ لینے کے لئے سترہ بار فوج لے کر آیا۔ بھگوان نے اُن تمام کا خاتمہ کیا، پھر جب ۱۸ اٹھارہویں بار اُس نے حملہ کیا تو بھگوان دوارکا چلے گئے اور رات بھر میں تمام لوگوں کو دوارکا پہنچا دیا اور خود ایک پہاڑی کے پیچھے سے نکل کر

۱۹۔ وہ ہنگامہ برپا ہوا کہ الامان ہو گئے شور سے زیر زمین آسمان

संजय उवाच

वहा कालीनाग को नाथ उसके फन पर नृत्य किया और उसी पर तीन करोड़ कमल के पुष्प मंगवाये। अक्रूर जी बलराम, कृष्ण को ले जाने लगे, तो समस्त ब्रज विरह में रो रहा था तब भगवान ने उनको समझाया कि हम जल्दी आयेंगे। मथुरा पहुँच कुवलयापीड़ हाथी का उद्धार किया। मल्ल युद्ध में अनेक मल्लों को धराशायी किया। अपनी माता देवकी का बदला लेने के लिए ऊपर बैठे कंस को केश पकड़ कर मार कर उसका उद्धार किया। वसुदेव और देवकी को मुक्त किया। कंस के पिता राजा उग्रसेन को कारागार से निकाल कर उन्हें राज सिंहासन पर बिठाया। जरासन्ध अपने दामाद का बदला लेने के लिए सत्रह बार सेना लेकर आया। भगवान ने सबका ही संहार किया। जब अठारहवीं बार उसने युद्ध किया तो भगवान द्वारिका चले गए और रात भर में सब लोगों को द्वारिका पहुँचा दिया और स्वयं एक पहाड़ी के पीछे से निकल कर कूद पड़े। जरासन्ध ने सोचा इतने

हृषीकेशं तदा वाक्यमिदमाह महीपते । सेनयोरुभयोर्मध्ये रथं स्थापय मेऽच्युत ॥२१॥

स घोषो धार्तराष्ट्राणां हृदयानि व्यदारयत् ।

नभश्च पृथिवीं चैव तुमुलो व्यनुनादयन् ॥१९॥ अथ व्यवस्थितान्दृष्ट्वा धार्तराष्ट्रान्कपिध्वजः ।

کود پڑے۔ جراسندھ نے خیال کیا کہ اتنی اونچائی سے کود کر بچے نہیں ہونگے تاہم پہاڑوں کے اِرد گِرد آگ لگوادی۔ پھر خوش دلی سے بسرِ اوقات کرنے لگے۔

اِدھر بھوماسُر نے راجاؤں کی سولہ ہزار کنیاؤں کو اغوا کر کے اُنہیں حراست میں رکھا ہوا تھا۔ اُنہوں نے بھگوان سے اِلتجا کی، اس پر بھگوان نے بھوماسُر کو قتل کر کے مکتی دلائی۔ پھر اُن کے پرارتھنا کرنے پر پتنی روپ میں تسلیم کیا۔

کوروؤں پانڈؤں کی آپس میں دُشمنی تھی۔ پانڈو بھگوان کرشن کے مُعتقد تھے۔ کوروؤں نے جوئے کی چال چل کر پانڈوؤں کو ہرا دیا، اور سب کچھ داؤ پر لگوا دیا۔ بھری سبھا میں دروپدی کو ننگا کرنا چاہا۔ لیکن بھگوان نے ساڑھی کو اتنا دراز کیا کہ خود دُشاسن کھینچتے کھینچتے ہار گیا۔ اُن کو جنگل بھیج دیا گیا۔ کبھی لاکھ کے محل میں آگ لگوائی، کبھی زہر دیا۔ لیکن پربھو سب طرح سے اُن کی حفاظت کرتے رہے۔ مہابھارت کے جنگ میں ارجن کے رتھبان بنے۔ جنگ میں جب ارجن کو موہ آیا تو اُسے گیتا کا اُپدیش دیا۔ جراسن کو بھیم کے ہاتھوں مروا دیا۔ آخر

۲۲- میں دیکھوں ذرا وہ جوان کون ہیں جری کون ہیں پہلوان کون ہیں

ऊंचे से बचे नहीं होगे और फिर पहाड़ी के चारों ओर आग लगवा दी, फिर प्रसन्न मन से रहने लगा। उधर भौमासुर ने राजाओं की सोलह हजार कन्याओं का अपहरण करके उन्हें बन्दी बनाया हुआ था उन्होंने भगवान से प्रार्थना की तब प्रभु ने भौमासुर का वध करके उन्हें मुक्त किया। फिर उनके प्रार्थना करने पर उन्हें पत्नी रूप में स्वीकार किया। कौरव और पांडवों की आपस में शत्रुता थी। पांडव भगवान कृष्ण के भक्त थे। कौरवों ने जुए का प्रपंच रचकर इनको हरा दिया। तथा सब कुछ दांव पर लगवा दिया। भरी सभा में द्रोपदी को नग्न करना चाहा लेकिन भगवान ने साड़ी को इतना बढाया कि स्वयं दु:शासन खींचते-२ हार गया। बन में भेज दिया, कभी लाक्षागृह में आग लगवाई, विष दिया। किन्तु प्रभु सब तरह से उनकी रक्षा करते रहे। महाभारत के युद्ध में अर्जुन के सारथी बने। युद्ध में जब अर्जुन का मोह होगया तब उसे गीता का उपदेश दिया। जरासन्ध को भीम के द्वारा मरवा दिया। अन्त में

अन्त में विजय पांडवों की हुई क्यों वे धर्म की लड़ाई लड़ रहे थे। हमेशा धर्म की विजय होती है। पांडवों को राज्य दिला कर प्रभु द्वारिका आगये। भगवान कृष्ण की लीला का वर्णन कहां तक किया जाए। यह लेखनी विषय नहीं है विस्तार से वर्णन श्री भागवत में है।

मानस-किंकर कौशलकिशोर दास

فتح پانڈوؤں ہوئی کیونکہ وہ دھرم کی لڑائی لڑ رہے تھے۔
فتح ہمیشہ دھرم کی ہُوا کرتی ہے۔ پانڈوؤں کو راج دلا کر
پربھو دوارکا گئے۔

مانس کنکر کوشل کشور داس

۲۵۔ درون اور بھیشم ڈٹے تھے وہاں جمے تھے وہیں راجگانِ جہاں۔
کہا دیکھ ارجن کھڑے صف بہ صف۔ لڑائی کی خاطر کرو سر بکف
۲۶۔ تب ارجن نے دیکھا کھڑے ہیں تمام۔ چچے۔ دادے۔ استاد ذی احترام
کہیں بیٹے پوتے کہیں یار ہیں۔ برادر ہیں۔ ماموں ہیں غمخوار ہیں
۲۷۔ خسر ہے کوئی کوئی دلبند ہے۔ کہ اک سے لگا اک پیوند ہے۔
جگر سے جگر کی لڑائی ہے آج۔ کہ لڑنے کو بھائی سے بھائی ہے آج۔

भीष्मद्रोणप्रमुखतः सर्वेषां च महीक्षिताम् । उवाच पार्थ पश्यैतान्समवेतान्कुरूनिति ॥२५॥ तत्रापश्यत्स्थितान्पार्थः पितॄनथ पितामहान् । ... श्चैव सेनयोरुभयोरपि । तान्समीक्ष्य स कौन्तेयः सर्वान्बन्धूनवस्थितान् कृपया परयाविष्टो विषीदन्निदमब्रवीत् ।

ہرے کرشنا!

کرشنہٕ ہیتو! ہیتو! سیکلین پوشہٕ زار کر!
بانسرِ شہ دتو دِتو
دوٗنن شالمار کر
باغ نشاطِ گُل پھولن۔ گوپین دِل تہٕ شِل برِن
کرشنہٕ! دہانہٕ ازٕ مرٕز
شبنمس موختہٕ ہار کر
چانہٕ گیتیامہٕ ژھایہٕ نتش صُبح نگین تہٕ شرمیو
سیریہٕ موکھس نیٚر گرہہ
عاشقن کرٕد گار کر
باغِ نسیمہٕ عطرِ ژھٹھ۔ آیہٕ ہوایہٕ وار کران
پوشہٕ پدبن ژہہ گنتہ کری
توتہٕ ہمسس امار کر

پیارِ ونین یمبرزلن چانہ دیایہ کُن نظر !

کرِشمہٕ دیالِہ یوٚدوٕ یکھ

سونتہٕ بلن بیمار کر

ییمی نہٕ کر دِلبری گلن۔ لیس نہٕ کرُ دِلبری گُنُو !

دَرشنکو برہمزر تمن

پریمہٕ ہتی دِل تیار کر

اِز تہٕ گنگایہ بُتھی بہٕ ژھن۔ چانہ دوٚ میڈ تارِ کرِ

کُل مہہ رُمس رُمس گنن

کیاہ یمے رُم ہمہ تار کر

تارِ نسکارِ سوال بہ سوال۔ تہٕ نز کھیلس نہٕ گرندیوٚن

ووٚنی اگر لانکہٕ بیٹھہ ترکھ

میون دِل شرمسار کر

چانہٕ خیالہٕ کنٛی ونم۔ ساسہ بدی دِل پسند سوخن

فاضِلن تازہ ترِ غزل

اِز بِنٛن اشتہار کر

हरे कृष्णा !

कृष्ण' यितो यितो यितो ! स्यकिल्यन पोशिजार कर
बांसुरी शाह् दितो दितो ! द'दवनन शालमार कर

बागि निशा'त गुल फौलन, गूपियन दिल त शिल ब्रमन
मेठि, दहान' कर सौखन, शब्रममस म्वख्त'ह्‌ार कर

चानि ग्येशामि छायि तल. सुबहि निगीन ति शामि प्यव
सिर्यि मोखस नन्यर क'रिथ हा'रतन किरदगार कर

वागि नसीम' अ'तरि छठ, आयि बेबायि वर करान
पोशि पद्यन च्य गथ करिय, तोंति ह्म्यस अमार कर

प्यारवन्यन य'म्बर ज़लन, चानि पोत छाई कुन नजर
कृष्णा' दयाल ' यो'द न यिख, सोन्त' बलन ब्यमार कर

यम्य न कर दिलबरी गुलन, यस न' क'र दिलबरी गुलव
दर्शनक्य बर मुचर तिमन, प्रेम' रस वागुजार कर

अज ति गंगायि ब'ठ्य ब्रछन चानि' वो'मेजि तारिक'य
कल मे' रुमस रुमस गनन, क्याह् यिमय रुम मे' तार कर

तार' शिकारि स्वल ब स्वल हां'ज' ख्यलिस न ग्रंद यिवन
वोन्य अगर लांकि प्यठ तरख म्योन दिल शर्मसार कर

चानि खयाल किन्य वनिम, सासबद्य शार दिलपसन्द
फाजिलुन ताजतर गजल, क्याह पनुन इश्तिहार कर



کرشنہٕ اچھو کتھ رنگ تہٕ بے رنگ پان گوم
بے رنگی منز چانِ پیٚم ژٕمک رنگ سنیوم
پیٚمہ رنگ پیٚم آوِتھ گنے رنگ نظر آم
اتھی رنگس منز سِریہ پیٚم اگاش دِل بنیوم

Krishn *Leela*

کرشن لیلا

कृष्ण लीला

از:-

ڈاکٹر نظام الدین۔ پروفیسر آف ہندی، اسلامیہ کالج۔ سرینگر

کشمیر کے رسکھان

فاضل کاشمیری نے "بالک اوستھا" اور "کرشن لیلا" نامی کرشن کاویہ کی تخلیق کر کے سورداس، رسکھان، پرمانند، نروتم داس، رتناکر، سبز ہیم بھارتی کی روایت کو قائم رکھا ہے۔ اس کے ساتھ قومی یکجہتی کو بڑھاوا دینے میں ہم انہیں امیر خسرو، نظیر اکبرآبادی، ساغر نظامی، بیکل اتساہی

اور نظیر بنارسی وغیرہ کی روایت میں نمایاں پاتے ہیں۔ انہوں نے ستگورو سری بابا گورونانک کی بانی کا ترجمہ کرکے ایک عظیم کارنامہ انجام دیا ہے۔ جس کی سراہنا سکھ قوم نے کی ہے۔

فاضل کاشمیری ایسے وسیع القلب شاعر ہیں جو تخیل کی ہم آہنگی کے تاروں کو جھنکار عطا کرتے ہیں۔ وہ پُرخلوص ماحول کے تخلیقی کام میں جٹے ہوئے ہیں۔ اُن کے اشعار میں بانسری کے میٹھے سُر تخیلی ہم آہنگی کا پیغام دیتے ہیں۔ جو کوئی اس سُر کو سُنتا ہے "جے جے ہری" پکارتا ہے۔ اس کا دل پاک ہوجاتا ہے، وہ بادشاہ ہوجاتا ہے۔ پھر اس میں ہندو مسلمان کی تمیز نہیں رہتی۔ فاضل صاحب کرشن جی کو گنگا کا ایسا پاون جل (پوتر پانی) تصور کرتے ہیں جو ہندو اور مسلمان کے دلوں کے میل کو دھو ڈالتا ہے ؂ کرشن گو پوشہ وَن گنگا یہ ہند جل

چھلان ہندن مسلمانن دُلک مَل

فاضل صاحب کرشن کی بانسری پر موہت ہیں، کیونکہ اس کا سُر ہم آتما ہے۔ جلوہ روشنی حیات ہے، دریائے ازل ابدی ہے۔

مرلی دھر کرشن اِس میں پھونک مار کر گیان و عرفان کے ظاہری و باطنی راز عیاں کرتا ہے۔ جس سے اطرافِ عالم میں کیف و سرور چھا جاتا ہے جس سے نبی اور اوتار ایشور اللہ کے بھیجے ہوئے تسلیم کئے جاتے ہیں۔ اور رحمان و بھگوان ایک ہی ذات باری کے دو نام ہیں۔

فاضل صاحب کرشن کے رنگ و روپ پر مو ہت ہیں انہیں ایسا معلوم ہوتا ہے کہ پھولوں میں رنگ و بو کرشن کی بدولت ہے اور انہیں کے دم قدم سے یہ سنسار ایک حسین گلزار بنا ہوا ہے۔

فاضل صاحب کی یہ کتاب "کرشن لیلا" بھارتیہ کرشن کا دیہ میں ایک گرانقدر اضافہ ہے اس سے قومی ایکتا پر اعتقاد رکھنے والوں کے دل و دماغ اور زیادہ روشن ہو جائیں گے۔

[signature]

(DR. NIZAM-UD-DIN)
Prof. of Hindi
Islamia College, Srinagar
(Kashmir)

ترجمہ:- پرتھوی ناتھ کول "سائل" کشمیری۔

بھگوان کرشن نے

گیتا جی میں ارشاد فرمایا ہے :-

خاک، پانی، آگ، ہوا، خلاء، من، ذہانت اور خودی۔ ان آٹھ متضاد اقسام سے میری پرکرتی بنی ہے۔ یہ میری ادنیٰ اوستھا ہے۔ اوستھا کو بھی سمجھنے کی کوشش کرو۔ اس کے علاوہ میری اُتم اوستھا سویم ہی ہیں ہے۔ جس پر ساری کائنات کا دارو مدار ہے۔ تم اس بات کو سمجھ لو، کہ تمام جاندار اور بے جان انہیں دو سے بنے ہیں۔ میں اس بدلتے سنسار کی ابتداء ہوں اور اختتام بھی۔

دکھشنایَن بھینے کے درمیان جو کہ آٹھویں کرشن پکھش کے کالے پندرہ واڑے میں آتا ہے، جیل کی ایک کالی کوٹھری میں، جہاں موت کے کالے سائے منڈلا رہے تھے، آدھی رات کے عالم میں مُتبرک ساعت پر ایک سیاہ فام بچے "کرشن" نے جنم لیا۔

گیتاجی کی بھاشا کی روشنی میں "کرشن" کے معنی "کالے" کے ہیں جس کی مناسبت کرشن پکھش کے تاریک پندرہ واڑے کے ساتھ ہے۔ یہ وہ سمے تھا جب جگت کے تمام رہنے والے لوگوں میں ناسمجھی، جہالت اور پاپ کا دور دورہ تھا..... اندھکار کے اس دور میں کرشن جیسے روشنضمیر رہنما کے وجود کی اشد ضرورت تھی جو اس رات میں ظہور میں آیا۔ اسی ذات نے کالے کرتوت والے منشوں کو روشنی بخش کر مکتی کا راستہ دکھایا۔ انہیں گیتاجی کے درس سے برھمانڈ کی اصلیت اور مایا کی ماہیت سے واقف کیا۔

بھگوان ہری جو کرشن کے روپ میں اپنی بال اوستھا کے کھیل کود جیسے مکھن چوری، گائے پالک، مرلی منوہر کھیلتا رہا۔ ان میں سے ہمارے

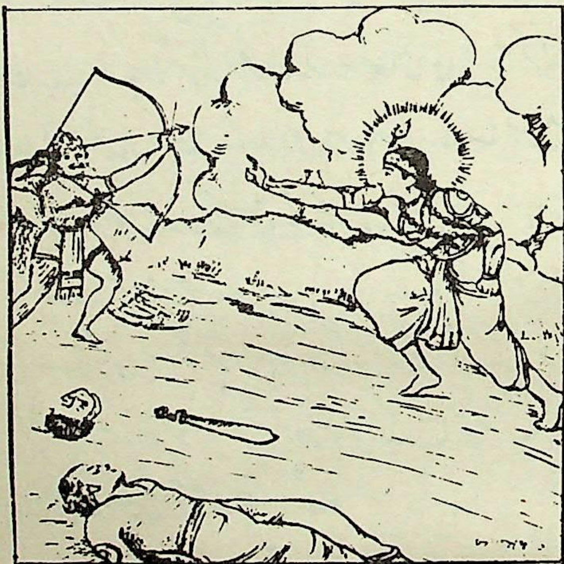
کرشن کے مرلی منوہر ہونے کو بڑی اہمیت حاصل ہے کیونکہ جب پیارے



بھگوان کرشن جی مرلی بجاتے تھے تو اُس میں سے شانتی اور سکون کے
لہرے پیدا ہوتے تھے جن سے سُننے والوں پر محویت کا عالم چھا جاتا تھا۔
کرشن جی سیکیولرازم کے اوّلین پرچارک تھے۔ اُنھوں نے لوگوں کو
بھائی چارہ اور یکسانیت کا درس دیا اور سماج کے زہریلے سانپوں اور



رہزنوں کو بھی قابو کر لیا اور ان کا سدھار کیا۔



کرشن جی دھرم کے محافظ، سیاست دان اور ایک عظیم رتھ بان تھے۔ انھوں نے انسان کو دُنیائی جھنجھٹوں سے آزاد کر دیا۔ وہ ہمہ دان اور حق پرست تھے۔ وہ پانڈووں کے دوست اور پشت پناہ تھے۔ انہوں نے ظلم و تشدّد، جلعسازی اور دغابازی جیسے شریر عناصر کو جڑ سے اُکھاڑا۔ ان حقائق کا ذکر مشہور رزمیہ مہابھارت میں ملتا ہے۔

ہمارے فاضل صاحب ایک کرشن بھگت ہیں۔ رسالہ "دھرم یگ" کے تنظیمی ادارہ نے انہیں "کشمیر کا رسکھان" کا خطاب دیا ہے۔ کیونکہ انہوں نے رسکھان کی طرح کرشن بھگتی کا بھرپور اظہار اپنے شبدوں میں ہمارے سامنے پیش کیا ہے۔ انہوں نے کرشن کے بچپن، جوانی اور دیرینہ سالی کے سُندر مرقعے سجائے ہیں۔ اُن کی کتاب "کرشن لیلا" کی لیلاؤں میں ترنّم، تاثیر اور گداز ہے۔ اُن کے اس عظیم کام سے سوشلزم اور قومی یکتا کے میدان میں اچھے نتائج برآمد ہوں گے۔

میری دعا ہے کہ یشودھا کا بالک کرشن جو دائیں ہاتھ میں حلوا، بائیں ہاتھ میں مکھن کا پیڑا، گلے میں زرق برق جواہرات کا ہار، شیر کے ناخنوں سے آراستہ بدن ہمارے فاضل صاحب کو ابدی مسرّت عطا کرے!

30-8-83

(ڈاکٹر جگت موہنی)

کشمیری علم و ادب اور قومی یکتا کے کاز کو بڑھاوا دینے کے سلسلہ میں فاضل کاشمیری نے "شری جپ جی صاحب" اور "سلوک مہلہ نواں" اور "ستھ رنگ" کے بعد اس بار اپنی کرشن لیلاؤں کا یہ حسین گلدستہ "بالک اوستھا" عوام کے بہبود کے لئے منظرِ عام پر لانے کی بار آور کوشش کی ہے، جو واقعی ایک اہم کارنامہ ہے۔ مجھے امید ہے کہ اس دلکش کتاب کی اشاعت سے قومی بھائی چارہ کی وسعت میں دور رس نتایج بر آمد ہونگے۔

علی محمد لنگر

سرینگر کشمیر
۱۹ نومبر ۱۹۸۳ء

PROF. CHAMANLAL SAPRU

180-Lalnagar, P. O. Natipur
Srinagar (Kashmir) 190 015

از : پروفیسر چمن لال سپرو

بھگوان شری کرشن نے اپنی لیلاؤں سے سب کو یکساں طور پر اپنی طرف کشش کی ہے۔ ان کا بالک روپ سور داس اور رس خان جیسے عظیم شاعروں کے لئے پرستش کا موجب بن گیا ہے۔ ان دو شاعروں نے اپنے محبوب بھگوان کرشن سے متعلق واتسلیہ رس یعنی (شفقتِ مادری کا جذبہ) سے مملو نظموں کو تخلیق کر کے ہندی ادب کو امر بنا دیا ہے۔

کشمیری زبان کے رس خان الحاج فاضل کاشمیری ایک ایسی شخصیت ہیں جو حقیقی معنوں میں ان تنگ حدود سے بالاتر ہیں جو آج کے انسان کو مذہب اور رنگ و نسل کے فرق میں جکڑے ہوئے ہیں۔ فاضل صاحب موجودہ دور میں تمام مذاہب کی بنیادی وحدت کو سمجھ کر

اپنی سُریلی زبان اور مخصوص پیرائے میں اس کا پرچار کرتے ہیں وہ پرم ہنس رام کرشن مہاراج کے سرو دھرم سمنوئے (Harmony of religions) کو آج کے دور کے مسائل کا واحد حل تصوّر کرتے ہیں۔ وہ گیتا جی، مقدّس انجیل، قرآن شریف اور سری گورو گرنتھ صاحب میں ایک ہی پیغام کی مختلف صورتیں دیکھتے ہیں۔

فاضل صاحب کو میں نے دھارمک محفلوں اپنی کرشن لیلائیں سُناتے دیکھا ہے۔ وہ ایسی محفلوں میں اپنی شاعرانہ صلاحیتوں سے ایک پُرکیف سماں باندھ دیتے ہیں۔ اُن کی زبان میں سلاست، روانی اور تاثیر ہے۔ اُن کی شعری زبان ایسی سہل اور جاذبِ توجّہ ہے جسے پڑھنے والے اور سُننے والے بغیر کسی کدو کاوش کے آسانی سے سمجھ کر بھرپور حظ اُٹھاتے ہیں۔

اِس بار فاضل صاحب نے بالک اوستھا کی کتابت و تزئین اپنے من چاہے انداز میں خود کی ہے، جو اُن کا ہی حصّہ ہے۔

چمن لال سپرو
25.1.84

25-1-1984

दया भूतेष्वलोलुप्त्वं मार्दवं ह्रीरचापलम् ॥२॥

Fazil Kashmiri is, I have understood, unparalled devotee of Lord Krishna. Although he is born muslim, but he is no longer now muslim in a strict theological sense, or Pandit. He is actually established in that state of divine devotion of Lord that has rison in that state where he has gone above limitation of caste creed and colour. He is just devotee of Lord Krishna. I hope this

श्रीभगवानुवाच अभयं सत्त्वसंशुद्धिर्ज्ञानयोगव्यवस्थितिः ।
दानं दमश्च यज्ञश्च स्वाध्यायस्तप आर्जवम् ॥१॥ अहिंसा सत्यमक्रोधस्त्यागः शान्तिरपैशुनम् ।
दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता । भवन्ति संपदं दैवीमभिजातस्य भारत ॥३॥

मा शुचः संपदं दैवीमभिजातोऽसि पाण्डव ॥

book 'Krishen Leela' will illumine the whole world.

I hope that each & every human being should and must own this valuable book, so that they also rise to that state of Divine oneness where limitation of caste and creed are not recognised.

6-11-83. Lakshmanjoo
Guptaganga

(شیوآچاریہ سوامی لکشمن جومہاراج - گپت گنگا سرینگر)

शैवाचार्या स्वामी लक्षमण जो महाराज

द्वौ भूतसर्गौ लोकेऽस्मिन्दैव आसुर एव च । दैवो विस्तरशः प्रोक्त आसुरं पार्थ मे शृणु ॥६॥

दम्भो दर्पोऽभिमानश्च क्रोधः पारुष्यमेव च । अज्ञानं चाभिजातस्य पार्थ संपदमासुरीम् ॥ दैवी संपद्विमोक्षाय निबन्धायासुरी मता ।

فاضل کاشمیری ایک مذہب زدہ ذات نہیں ہیں۔ وہ اپنے مذہبی عقائد کے دوش بدوش دوسرے دین و دھرم کے بانیوں اور پرستاروں کی اقدار کا احترام کرتے ہیں جس کے آئینہ میں ان کی "انوارِ محمدی"، "شری جپ جی صاحب" اور "کرشن لیلا" جیسی گرانقدر تصانیف پیش کی جا سکتی ہیں۔

زیرِ نظر ان کی تصنیف "کرشن لیلا" ان کی کرشن بھگتی کی تصویر ہے۔ فاضل مصنف نے اس میں سری کرشن جی مہاراج پر سندر نظمیں لکھی ہیں۔ انہیں سنکر اور پڑھ کر سامعین اور قارئین روحانی کیف و گداز حاصل کرتے ہیں۔ میلادوں، خالصہ درباروں اور دوسرے اتسوؤں میں حاضرین انہیں اپنا کلام سنانے کی فرمائشیں کرتے ہیں اور ان کی قدردانی کرتے ہیں۔

فاضل صاحب کے ادبی مطبوعہ شہپاروں سے ہمارے دیس میں قومی یکتا اور بھائی چارہ کو قوت ملتی ہے۔

[signature]

۲۶ فروری ۱۹۸۲ء

رمیلا رام بنجوں ... گوجہ باغ



२०४

कृष्ण-लीला

Krishna Leela

Thės Beautiful Book

of the Personality of

Kṛishṇa

provides the key to how humanity can become united in peace, prosperity and friendship around a common cause.

Printed at Hind Samachar Printing Press,
Pacca Bagh, Jalandhar City.



